सुप्रभात
रांची, शुक्रवार
23.08.2024
* * नगर संस्करण। पेज :12

धरती आबा की ऊर्जावान भूमि से प्रकाशित लोकप्रिय दैनिक

खबर मन्त्र

रांची और धनबाद से एक साथ प्रकाशित

सबकी बात सबके साथ

khabarmantralive.com

khabarmantra.net भादो, कृष्ण पक्ष, पंचमी, संवत् 2081 | मूल्य : ₹ 3 । वर्ष : 12 । अंक : 44

12 फिल्म विश्वंभरा से चिरंजीवी का पहला लुक हुआ रिलीज

न्यूज डायरी

सड़क हादसे में एक ही परिवार के पांच की मौत

पटना। भोजपुर के गजराजगंज थान के बीबीगंज में सड़क दुर्घटना में पांच लोगों की मौत हो गयी। इनमें 3 पुरुष और 2 महिलाएं हैं। सभी लोग विंध्याचल से आ रहे थे। दो की भी हालत गंभीर है। स्थानीय लोगों का कहना है की मृतकों की संख्या बढ़ सकती है।

भारत-पोलैंड आपसी संबंध और प्रगाढ़ करेगा

वारसा। भारत एवं पोलैण्ड ने अपने द्विपक्षीय संबंधों को रणनीतिक साझीदारी का स्वरूप देने पर सहमत है। पीएम मोदी और पोलैंड के पीएम डोनाल्ड टस्क ने दोनों देशों के बीच संबंधों को नयी गति देने के लिए गुरुवार को द्विपक्षीय वार्ता की। इसमें आर्थिक सहयोग को व्यापक बनाने पर सहमति जतायी।

रांची में इडी कार्यालय पर कांग्रेस का विरोध प्रदर्शन

रांची। कांग्रेस ने गुरुवार को रांची के हिनू स्थित प्रवर्तन निदेशालय के क्षेत्रीय कार्यालय के समक्ष विरोध प्रदर्शन किया। अखिल भारतीय कांग्रेस के निर्देश पर प्रदेश कांग्रेस के नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश के नेतृत्व में इडी कार्यालय के समक्ष अडानी महाघोटाला जांच के लिए जेपीसी गठन की मांग को लेकर विरोध प्रदर्शन किया गया। मौके पर केशव महतो कमलेश ने कहा कि कांग्रेस द्वारा अडानी महा घोटाले की जांच की मांग बार-बार की गई।

25 को रांची आयेंगे केंद्रीय मंत्री चिराग

रांची। लोजपा (रामविलास) के अध्यक्ष और केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान 25 को एक दिवसीय दौरे पर रांची आयेंगे। वह पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक की अध्यक्षता करेंगे। बैठक 25 अगस्त को होटल रेडिशन ब्लू में होगी। इस बैठक में केंद्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान, सांसद वीणा देवी, सांसद शाम्भवी चौधरी, सांसद अरुण भारती, सांसद राजेश वर्मा सहित देश के सभी राज्यों के प्रदेश अध्यक्ष सहित केंद्र शासित प्रदेशों के अध्यक्ष एवं विधायक, पूर्व विधायक सहित राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य इस कार्यक्रम में हिस्सा लेंगे।

पद्मनाभन विज्ञान रत्न पुरस्कार से सम्मानित

नयी दिल्ली। देश में आणविक जीव विज्ञान और जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान के अग्रदूत प्रोफेसर गोविंदराजन पद्मनाभन को गुरुवार को प्रतिष्ठित विज्ञान रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके अलावा विज्ञान श्री, विज्ञान युवा शांति स्वरूप भटनागर और विज्ञान टीम श्रेणी में प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों को 33 पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने राष्ट्रपति भवन के गणतंत्र मंडप में आयोजित एक पुरस्कार समारोह में राष्ट्रीय विज्ञान पुरस्कार-2024 प्रदान किये।

गहना आभूषण
सोना (बिक्री) : 66900 रु./10 ग्राम
चांदी : 86000 रु./प्रति किलो

दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल की सूचना पर एटीएस को मिली बड़ी सफलता

झारखंड में अलकायदा के आठ आतंकी गिरफ्तार

16 जगहों पर छापा, लोहरदगा में हथियार भी मिला

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल की सूचना पर झारखंड एटीएस को बड़ी सफलता मिली है। झारखंड एटीएस की टीम एवं दिल्ली पुलिस ने 16 जगहों पर संयुक्त छापेमारी कर अलकायदा इंडियन सबकॉन्टिनेंट (एक्यूआईएस) आतंकी संगठन के आठ आतंकियों को पकड़ा है। एटीएस की टीम ने लोहरदगा और लातेहार सीमा पर स्थित हिंजला, हजारीबाग के पेलावल समेत अन्य कई जिलों में 14 जगहों पर छापेमारी कर इन्हें दबोचा। लोहरदगा से गिरफ्तार आतंकी के पास से हथियार भी बरामद हुआ है। गिरफ्तार आतंकियों से पूछताछ चल रही है। जल्द ही एटीएस पूरे मामले का खुलासा करेगी। गिरफ्तारी की अबतक कोई अधिकारिक तौर पर पुष्टि नहीं हुई है। अभियान की समाप्ति पर पुलिस इसकी पुष्टि कर सकती है।

रांची का डॉक्टर इश्तियाक लीडर

जानकारी के अनुसार झारखंड की राजधानी रांची के चान्हो से पांच, लोहरदगा से एक और हजारीबाग से अलकायदा से जुड़े आतंकी मॉड्यूल में शामिल आतंकियों को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार अलकायदा से जुड़े नये मॉड्यूल को रांची के रहने वाला डॉक्टर इश्तियाक लीड कर रहा था। झारखंड एटीएस की टीम ने डॉक्टर इश्तियाक के रांची स्थित आवास पर भी दबिश दी है।

कई राज्यों में एक साथ छापा : अलकायदा के इस नये मॉडल की जानकारी सबसे पहले दिल्ली पुलिस के स्पेशल सेल को मिली थी। उसने जब मामले की पड़ताल शुरू की तो सबसे पहले राजस्थान और झारखंड के एक आतंकी को गिरफ्तार किया गया। पूछताछ के दौरान स्पेशल सेल को अलकायदा के नए मॉड्यूल की जानकारी मिली जो देश में अशांति और हिंसा फैलाने के लिए बड़ी तैयारी कर रहा था। सूचना मिलने पर दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल की टीम ने दिल्ली, झारखंड, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के एटीएस से संपर्क कर बुधवार की रात ही ज्वाइंट ऑपरेशन शुरू किया। जिसमें अब तक 12 से ज्यादा लोग गिरफ्तार हो चुके हैं जबकि 24 से ज्यादा को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है।

इस्लामिक राज्य बनाना उद्देश्य : जानकारी के मुताबिक, अलकायदा इंडियन सबकॉन्टिनेंट का अंसारुल्लाह बांग्ला टीम आतंकी संगठन के साथ संबंध है। 2014 में बना प्रतिबंधित आतंकी संगठन अल-कायदा की एक शाखा एक्यूआईएस कथित तौर पर अफगानिस्तान, पाकिस्तान, भारत, बर्मा और बांग्लादेश में सक्रिय है।

(शेष पेज 11 पर)

डॉक्टरों की हड़ताल खत्म 11 दिन बाद काम पर लौटे

सुप्रीम कोर्ट ने कहा, कोई दंडात्मक कार्रवाई नहीं होगी

एजेंसी

नयी दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट की भावनात्मक अपील और आश्वासन के बाद दिल्ली एम्स समेत हड़ताल पर गये देश भर के रेजिडेंट डॉक्टरों ने गुरुवार को अपनी हड़ताल खत्म कर दी। कोलकाता में महिला डॉक्टर के साथ हुई रेप व मर्डर की वारदात के विरोध में डॉक्टर्स पिछले 11 दिनों से हड़ताल पर थे। इससे पहले दिन में सुप्रीम कोर्ट ने प्रदर्शनकारी डॉक्टरों से काम शुरू करने को कहा था और उन्हें आश्वासन दिया था कि काम पर लौटने के बाद उनके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की जायेगी। कोर्ट ने सरकारों को उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने का निर्देश भी दिया था। देश भर में स्वास्थ्य कर्मियों की सुरक्षा के व्यापक मुद्दे पर हस्तक्षेप करने के लिए सुप्रीम कोर्ट की हार्दिक सराहना की। साथ ही उसके निदेर्शों का पालन करने का आह्वान किया। मरीजों की देखभाल करना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता बनी हुई है। सीजेआइ जस्टिस चंद्रचूड़ ने बेंच की ने डॉक्टर्स से भावनात्मक अपील करते हुए कहा था, जज और डॉक्टर हड़ताल पर नहीं जा सकते। अब क्या हम उच्चतम न्यायालय के बाहर जाकर बैठ सकते हैं। शीर्ष कोर्ट इस मामले में अगली सुनवाई सुप्रीम 5 सितंबर को करेगी।

स्वतः संज्ञान लिया था

इससे पहले चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़, जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस मनोज मिश्रा की पीठ ने घटना के मामले में स्वतः संज्ञान लेते हुए सुनवाई के दौरान सभी संबंधित पक्षों की दलीलें विस्तारपूर्वक सुनीं। 9 अगस्त को हुई दुर्भाग्यपूर्ण घटना के बाद देशभर के अस्पतालों में मरीजों की समस्याओं पर गौर करते हुए जस्टिस चंद्रचूड़ ने पीठ की ओर डॉक्टर से भावनात्मक अपील करते हुए कहा, न्याय और चिकित्सा हड़ताल पर नहीं जा सकते। (शेष पेज 11 पर)

पलामू में बोले सीएम, मंईयां सम्मान योजना मील का पत्थर साबित होगा

गांव-देहात से चल रही है सरकार

- सरकार बनी तो हर घर को एक-एक लाख देंगे
- केंद्र ने रोजगार बंद किया हमने कई दरवाजे खोले
- भाजपा से सतर्क रहें, चुनाव के समय आपस में लड़ायेंगे उनके लोग
- विपक्ष दूसरे राज्य के नेता को यहां बुलाकर लोगों को बरगला रही है

खबर मन्त्र ब्यूरो

मेदिनीनगर, रांची। सीएम हेमंत सोरेन ने कहा है कि हमारा समाज और राज्य तभी आगे बढ़ेगा, जब यहां के आदिवासी, दलित, गरीब, वंचित, महिलाएं व मजदूर किसान और सशक्त होंगे। यही कारण है कि हमारी सरकार रांची हेडक्वार्टर से नहीं बल्कि गांव-देहात से चल रही है। श्री सोरेन गुरूवार को मेदिनीनगर के चियांकी हवाई अड्डा परिसर में आयोजित झारखंड मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना के प्रमंडल स्तरीय कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। नारी शक्ति को समर्पित यह योजना इस राज्य की बहन बेटियों को आगे बढ़ने में काफी मददगार साबित होगा। बहन-बेटियों की गरिमा, मान-सम्मान और हक अधिकार देने की दिशा में इस योजना की शुरूआत हुई है। यह योजना झारखंड के हित में मील का पत्थर साबित होगा। इस मौके पर सीएम ने रिमोट दबा कर 5 लाख 91 हजार 919 लाभुकों के बैंक खाते में डीबीटी के माध्यम से सम्मान राशि का हस्तांतरण किया।

मुख्यालय से नहीं आपके गांव से चल रही सरकार : मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार रांची हेडक्वार्टर से नहीं बल्कि गांव-देहात से चल रही है। इससे पूर्व उन्होंने मुख्यमंत्री मईयां सम्मान योजना के पलामू प्रमंडलस्तरीय सम्मान समारोह का उदघाटन दीप जला कर किया। सभा को संबोधित करते हुए सीएम ने कहा कि इस योजना का लाभ झारखंड के 42 लाख से अधिक माताओं व बहनों को दिया गया। यह योजना कभी बंद होनेवाली नहीं है। उन्होंने कहा कि विगत चार वर्षों में झारखंड में जो विकास की लकीरें खिंची गयी है, उसे विपक्षी बीस वर्ष क्या 50 वर्ष में भी नहीं कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि पिछले 20 वर्षों में जिन गांवों में बीडीओ, सीओ और और थानेदार नहीं गये। आज वहां अधिकारी दल बल के साथ पहुंच रहे हैं। वे लोगों की समस्याओं को ना सिर्फ संवेदनशीलता के साथ सुन रहे हैं। बल्कि उसका समाधान भी कर रहे हैं। (शेष पेज 11 पर)

छलका दर्द, कहा-चोर कहकर जेल भेजा

समारोह के दौरान सीएम हेमंत सोरेन का दर्द छलक पड़ा। उन्होंने कहा, मुझे जमीन माफिया कहा गया। मुझे जमीन चोर कहा गया। इसी आरोप में मुझे जेल में भी बंद कर दिया। वह पलामू में प्रमंडल के तीन जिलों पलामू, गढ़वा और लातेहार की महिलाओं को झारखंड मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना की सौगात देने के लिए पहुंचे थे। सीएम ने कहा, भाजपा और केंद्र सरकार ने उन्हें परेशान करने में कोई कसर बाकी नहीं रखी। उनकी पार्टी और घर को भी तोड़ने-फोड़ने की कोशिशें हुईं। गलत आरोप में जेल भेज दिया गया। लेकिन, भगवान के घर देर है, अंधेर नहीं। अदालत के आदेश पर आज आपके बीच हूं। खतरनाक मौसम में हेलीकॉप्टर से आपके पास पहुंचा। मौसम बेहद खराब था, चिंता थी पहुंच पायेंगे या नहीं।

चांडिल डैम में दोनों पायलट का शव मिला

विमान की खोज जारी, नेवी और एनडीआरएफ का संयुक्त खोज अभियान

खबर मन्त्र टीम

चांडिल/जमशेदपुर। अल केमिस्ट एविएशन का लापता विमान का मलबा चांडिल डैम में आज तीसरे दिन भी नहीं खोजा जा सका। मछुआरों के सहयोग से विमान के पायलट जीत शत्रु आनंद (40 वर्ष) और प्रशिक्षु पायलट शुभ्रोदीप दत्ता (28 वर्ष) का शव एनडीआरएफ और नेवी की टीम ने आज बरामद कर लिया। दोनों शव चांडिल डैम के कल्याणपुर गांव छोर के किनारे से बरामद किया गया। शुक्रवार को भी नेवी की टीम अपने आधुनिक उपकरणों की सहायता से लापता विमान को खोजने का अभियान चलायेगी। पायलट और ट्रेनी पायलट का शव बरामद कर प्रशासन ने उसे पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। शव बरामद होते ही चांडिल डैम के किनारे एकत्र परिजनों के बीच चीख-पुकार मच गयी।

गुरूवार सुबह नौ-सेना की 15 लोगों की टीम, 4 हाइड्रोसेलर्स मशीन व अन्य आवश्यक उपकरणों के साथ पहुंची। चांडिल डैम में सर्च अभियान शुरू किया। पायलट जीत शत्रु आनंद पटना मीठापुर का रहने वाले हैं। नौसेना का टीम दोपहर डैम में उतरी। पायलट जीत शत्रु आनंद और प्रशिक्षु पायलट शुभ्रोदीप दत्ता के परिजन भी सुबह से चांडिल डैम में डटे हुए थे। स्थानीय विधायक और तमाम अधिकारी भी मौके पर मौजूद थे। सबसे पहले एनडीआरएफ की टीम ने सुबह जमशेदपुर के ट्रेनी पायलट शुभ्रोदीप दता का शव बरामद किया। फिर शाम में जीत शत्रु आनंद का शव भी खोज निकाला। दोनों शव बरामद होने के बाद यह बात साफ हो गई है कि विमान डैम में गिरकर क्रैश हुआ था।

जेपीसी की पहली बैठक में हंगामा, उठे कई सवाल

वक्फ कानून में संशोधन

एजेंसी

नयी दिल्ली। वक्फ कानून में संशोधनों पर जेपीसी की पहली बैठक में ही विपक्षी सांसदों की ओर से सवालों की बौछार की गयी। मंत्रालय के अधिकारियों के प्रेजेंटेशन के दौरान टीएमसी के कल्याण बनर्जी, आप के संजय सिंह, एआईएमआईएम के असदुद्दीन ओवैसी और डीएमके के ए राजा समेत विपक्षी सांसदों ने प्रस्तावित संशोधन के कई उपबंधों की जरूरत पर सवाल उठाया। गुरुवार को यह पहली बैठक जगदंबिका पाल की अध्यक्षता में हुई। वक्फ कानून में संशोधनों पर जेपीसी की पहली बैठक में विपक्षी सांसदों की ओर से सवालों की बौछार हुई।

अल्पसंख्यक मामलों के मंत्रालय के अधिकारियों की ओर दिये जा रहे प्रेजेंटेशन के दौरान सदस्यों ने कई सवाल पूछे, जिनमें कई के उत्तर दियेए गए और बाकी सवालों के जवाब बाद में लिखित रूप में भेजने का आश्वासन दिया गया। वहीं, जगदंबिका पाल ने सांसदों को आश्वस्त किया कि जेपीसी मुस्लिम संगठनों के साथ-साथ सभी हितधारकों से बात करेगी।

30 को होगी अगली बैठक

बैठक में मौजूद एक सांसद के अनुसार जेपीसी की अगली बैठक 30 अगस्त को होगी। सूत्रों के अनुसार मंत्रालय के अधिकारियों के प्रेजेंटेशन के दौरान विपक्षी सांसदों ने प्रस्तावित संशोधन के कई उपबंधों की जरूरत पर सवाल उठाया। उनका कहना था कि इनमें जिलाधिकारी और गैर मुस्लिम सदस्यों को बहुत ज्यादा अधिकार दिए गए हैं, जो वक्फ के हितों के खिलाफ है। इस दौरान विपक्ष और सत्तापक्ष के सांसदों के बीच तीखी बहस भी हुई।

सभी से बात करेगी जेपीसी: पाल : वहीं, जगदंबिका पाल ने सांसदों को आश्वस्त किया कि जेपीसी मुस्लिम संगठनों के साथ-साथ सभी हितधारकों से बात करेगी। माना जा रहा है कि अगली बैठक में हितधारकों से बातचीत का सिलसिला शुरू हो जायेगा। इसके बाद जेपीसी के सदस्य प्रस्तावित सभी 44 संशोधनों पर एक-एक कर विचार करेंगे।

कोल्हान को मजबूत करने निकले चंपई सोरेन

खरसावां शहीद बेदी पर माथा टेक कर की नये अध्याय की शुरूआत

खबर मन्त्र संवाददाता

सरायकेला। चंपाई सोरेन के तेवर से ऐसा लग रहा है कि वो पूरी तरह से रेस हो चुके हैं। कोल्हान में अपनी पैठ और सियासी जमीन और गहरा करने की शायद उन्होंने ठान ली है। खुद की पार्टी बनाने का दावा करने वाले राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री सह मंत्री चंपाई सोरेन अब दौरे पर निकल गये हैं। इसी कड़ी में गुरुवार को वे खरसावां शहीद बेदी स्थल पहुंचे। शहीद स्थल पर माथा टेक नए अध्याय शुरूआत की घोषणा की। उन्होंने कहा कि नये अध्याय शुरूआत को लेकर इनका यह खरसावां दौरा है। आगे कोल्हान की सभी 14 सीटों का दौरा कर अपने द्वारा बनाए जाने वाले नये संगठन को मजबूत करेंगे। (शेष पेज 11 पर)

चंपई दा पार्टी फोरम में बात रखते तो अच्छा होता : कल्पना

इस बीच चंपई सोरेन के मामले पर कल्पना मुर्मू सोरेन ने प्रतिक्रिया दी है। कल्पना ने कहा है कि चंपाई वरिष्ठ नेता हैं और उन्होंने मन की बात लिखी हैं, इसपर मैं कुछ कहना नहीं चाहती हूं। उन्होंने कहा कि मैं झामुमो की सिपाही हूं। चंपाई भी जेएमएम के सिपाही, उन्हें जो भी बात कहनी थी उसे पार्टी के अध्यक्ष, कार्यकारी अध्यक्ष से कहते तो अच्छा रहता। कल्पना से जब पूछा गया कि चंपाई के जाने से पार्टी को कितना नुकसान हो सकता, इस सवाल को उन्होंने टाल दिया। इससे पहले गुरुवार की दोपहर में कल्पना सोरेन गिरिडीह परिसदन भवन पहुंची। वहां विधायक सुदिव्य कुमार और झामुमो जिलाध्यक्ष संजय सिंह की मौजूदगी में कार्यकर्ताओं ने से बात की और उनकी समस्या को समझा। इसके अलावा कई लोग यहां अपनी फरियाद लेकर पहुंचे तो उनकी भी बातों को कल्पना सोरेन ने सुना। परिसदन भवन में ही कल्पना सोरेन के हाथों आपदा राहत, मुख्यमंत्री गंभीर बीमारी उपचार योजना समेत विभिन्न योजनाओं के तहत लोगों को राहत का चेक दिया गया।

कर्मचारी को क्या सजा मिले नियोक्ता का विशेषाधिकार

एजेंसी

पटना हाईकोर्ट का अहम फैसला

पटना। पटना हाईकोर्ट ने एक दूरगामी फैसले में कहा है कि यह नियोक्ता विभाग का विशेषाधिकार है कि वो अपने कर्मचारी को क्या दंड दे। राज्य सरकार ने एक आवासीय विद्यालय के प्रधानाध्यापक को समय से पहले रिटायर कर दिया थ, जिसे हेडमास्टर ने उच्च न्यायालय में चुनौती दी थी। हाईकोर्ट ने हालांकि फैसले में ये साफ किया है कि उसने समय से पहले रिटायर करने के फैसले की समीक्षा नहीं की है, बल्कि समय से पहले सेवानिवृत्त करने के लिए जो प्रक्रिया अपनायी गयी है, मात्र उसको न्यायिक कसौटी पर कसा है। पटना हाईकोर्ट के जस्टिस अंजनि कुमार शरण की अदालत ने यह फैसला दिया है। दरअसल अरवल आंबेडकर आवासीय कन्या उच्च विद्यालय के प्रधानाध्यापक सुनील सिन्हा ने खुद को समय से पहले रिटायर करने के फैसले के खिलाफ अदालत का दरवाजा खटखटाया था। सुनील सिन्हा की वकील महाश्वेता चटर्जी ने कोर्ट में बहस के दौरान कहा कि दी गयी सजा बहुत कठोर है जिसे रद्द करना चाहिए।

हाइकोर्ट ने केंद्र सरकार को लगाई फटकार, कहा-

बांग्लादेशी घुसपैठियों को रोकने में केंद्र सरकार का नहीं है सकारात्मक रुख

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। झारखंड हाई कोर्ट ने केंद्र सरकार की ओर से शपथ पत्र दाखिल नहीं किए जाने पर कड़ी टिप्पणी की। कोर्ट ने आईबी, यूआईएडीआई और बीएसएफ की ओर से अलग-अलग शपथ पत्र दाखिल किए जाने के लिए चार सप्ताह का समय मांगे जाने पर कोर्ट ने कड़ी नाराजगी जताते हुए मौखिक कहा कि झारखंड में ट्राइबल की आबादी कम होती जा रही है और केंद्र सरकार चुप है। झारखंड का निर्माण आदिवासियों की हितों की रक्षा के लिए किया गया था। लगता है केंद्र सरकार बांग्लादेशी घुसपैठियों के झारखंड में प्रवेश को रोकने को लेकर कोई

दिलचस्पी नहीं दिखा रही है। आईबी हर सप्ताह 24 घंटे काम करती है लेकिन बांग्लादेशी घुसपैठियों जैसे संवेदनशील मुद्दों पर अपना जवाब दाखिल नहीं कर रही है। बीएसएफ की भी बांग्लादेशी घुसपैठियों को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका है लेकिन प्रतीत होता है कि बांग्लादेशी घुसपैठियों को रोकने के मामले में केंद सरकार का सकारात्मक रुख नहीं है।

कोर्ट ने मौखिक कहा जब राज्य सरकार द्वारा मामले में जवाब दाखिल किया जा चुका है तो केंद्र सरकार को जवाब दाखिल करने में क्यों परेशानी हो रही है। केंद्र सरकार जवाब दाखिल करने के लिए 4 से 6 सप्ताह का समय मांग रही है। एसा क्यों? केंद्र सरकार द्वारा 4 सप्ताह का समय मांगे जाने संबंधी हस्तक्षेप याचिका (आईए) को खारिज करते हुए केंद्र सरकार को दो सप्ताह में जवाब दाखिल करने का निर्देश देते हुए मामले की अगली सुनवाई 5 सितंबर निर्धारित की है। इससे पहले राज्य सरकार की ओर से 6 जिलों के डीसी एवं एसपी की ओर से जवाब दाखिल किया गया।

कोर्ट ने मौखिक कहा कि बांग्लादेशी घुसपैठियों का मामला देश की सुरक्षा को से जुड़ा है इसलिए सभी प्रतिवादियों को समय से अपना जवाब दाखिल करना होगा। बता दे कि पिछली सुनवाई में कोर्ट ने भारत सरकार के इंटेलिजेंस ब्यूरो के डायरेक्टर, बॉर्डर सिक्योरिटी फोर्स के डायरेक्टर जनरल, चीफ इलेक्शन कमीशन ऑफ इंडिया, डायरेक्टर जनरल यूनिक आइडेंटिफिकेशन अथॉरिटी ऑफ इंडिया, एनआईए को प्रतिवादी बनाया था, उन्हें नोटिस जारी कर जवाब मांगा था। दरअसल, बांग्लादेशी घुसपैठियों पर कार्रवाई के संबंध में हाईकोर्ट ने पिछली सुनवाई में संथाल परगना के 6 जिलों के डीसी को शपथ पत्र दाखिल करने का निर्देश दिया था। गुरुवार को संथालपरगना में बांग्लादेशी घुसपैठियों के कारण वहां जनसंख्या की स्थिति में कुप्रभाव को लेकर दानियल दानिश की जनहित याचिका की सुनवाई झारखंड हाई कोर्ट में हुई।

क्या है याचिका में

प्रार्थी ने याचिका में कहा है की जामताड़ा, पाकुड़, गोड्डा, साहिबगंज आदि झारखंड के बॉर्डर इलाके से बांग्लादेशी घुसपैठिए झारखंड आ रहे हैं। इससे इन जिलों में जनसंख्या में कुप्रभाव पड़ रहा है। इन जिलों में बड़ी संख्या में मदरसा स्थापित किया जा रहा है। साथ ही स्थानीय ट्राइबल के साथ वैवाहिक संबंध बनाया जा रहा है। प्रार्थी ने मांग की है कि इस मामले में भारत सरकार का गृह मंत्रालय रिपोर्ट दाखिल करे और बताएं कि झारखंड के बॉर्डर इलाके से कैसे बांग्लादेशी घुसपैठिए झारखंड आ रहे हैं और उनके द्वारा झारखंड में कैसे लोगों को गुमराह कर वैवाहिक संबंध स्थापित किया जा रहा है।

निकाय चुनाव मामले में सरकार की अपील पर विस्तृत सुनवाई 27 को

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। राज्य में निकाय चुनाव को लेकर राज्य सरकार की अपील पर अब विस्तृत सुनवाई 27 अगस्त को होगी। मामले की सुनवाई हाई कोर्ट के एक्टिंग चीफ जस्टिस सुजीत नारायण प्रसाद की अध्यक्षता वाली खंडपीठ में गुरुवार हुई। इससे पहले गुरुवार को सुबह 10:30 बजे प्रतिवादी पूर्व पार्षद रोशनी खलखो की ओर से कोर्ट से इस केस की जल्द सुनवाई करने का आग्रह किया गया था। इसके बाद खंडपीठ ने मामले की सुनवाई दोपहर 3:45 निर्धारित की। सुनवाई के दौरान सरकार की ओर से अपर महाधिवक्ता सचिन कुमार ऑनलाइन रूप से जुड़े। प्रतिवादी की ओर से अधिवक्ता विनोद सिंह ने कोर्ट से कहा कि राज्य सरकार निकाय चुनाव कराने को लेकर टालमटोल रवैया अपना रही है, हर बार समय लेकर इस मामले को टालने का प्रयास सरकार कर रही है। एकल पीठ का आदेश उनके पक्ष में आया है और वह सही है। संविधान के अनुसार राज्य में अविलंब निकाय चुनाव होना चाहिए।

दरअसल, तीन सप्ताह में राज्य में निकाय चुनाव की अधिसूचना जारी करने के 4 जनवरी 2024 के हाई कोर्ट के एकल पीठ के आदेश को रद्द करने को लेकर राज्य सरकार की ओर से अपील (एलपीए) दायर की गई है। खंडपीठ ने पूर्व में मामले में हाई कोर्ट की एकल पीठ के द्वारा पारित आदेश पर रोक लगाने से किया इनकार किया था।

अपील में क्या कहा है राज्य सरकार ने अपील (एलपीए) में राज्य सरकार की ओर से कहा गया है कि पिछड़ा आयोग को ही डेडीकेटेड कमीशन के रूप में नियुक्त कर दिया गया है। यह राज्य के जिलों में ओबीसी की आबादी का आकलन करेगी और इस संबंध में डाटा राज्य सरकार को उपलब्ध कराएगी। इसके आधार पर निकाय चुनाव में वार्डों में ओबीसी के लिए आरक्षण दिया जायेगा। इसलिए निकाय चुनाव पूरा करने के लिए समय दिया जाए। राज्य सरकार ने एकल पीठ के आदेश पर तत्काल रोक लगाने एवं एकल पीठ के आदेश को रद्द करने का आग्रह हाई कोर्ट से किया है। अपील में राज्य सरकार ने झारखंड म्युनिसिपल एक्ट के प्रोविजन का हवाला देते हुए नगर निगम में प्रशासक की नियुक्ति को सही ठहराया है।

नगर निकाय चुनाव जल्द कराने का आग्रह

यहां बता दे कि राज्य में नगर निकायों का चुनाव जल्द कराने को लेकर पूर्व पार्षद रोशनी खलखो सहित अन्य की याचिका को हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति आनंद सेन की कोर्ट ने स्वीकार कर लिया था। कोर्ट ने राज्य सरकार को निर्देश दिया था कि 3 सप्ताह में झारखंड में निकाय चुनाव की अधिसूचना जारी करें।

राज्य में सालों से रहने वाले लोगों को बाहरी एवं घुसपैठियों से तुलना करना ठीक नहीं : सरयू

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। झारखंड जदयू के कार्यकर्त्ताओं द्वारा गुरुवार को हाल ही में जदयू में शामिल हुए जमशेदपुर पूर्वी के विधायक सरयू राय का प्रदेश जदयू कार्यालय, रांची में समारोह आयोजित कर अभिनन्दन किया गया। कार्यक्रम में जदयू के प्रदेश अध्यक्ष सह सांसद खीरू महतो, पूर्व मंत्री सुधा चौधरी, पूर्व विधायक कामेश्वर दास मौजूद रहे। जदयू के प्रदेश पदाधिकारीगण, विभिन्न ज़िलों के अध्यक्ष, सचिव, महानगर अध्यक्ष एवं अन्य कार्यकताओं ने अंगवस्त्र एवं पुष्पगुच्छ प्रदान कर सरयू राय का अभिनंदन किया।

कार्यकताओं को संबोधित करते

हुए सरयू राय ने कहा कि सरकार असली मुद्दों से भटका रही है और भावनात्मक मुद्दों को आगे कर रही है। विगत पांच वर्षों में प्रदेश की सरकार ने लोक कल्याण के लिए किन कार्यों को किया है, इसकी चर्चा से सरकार पीछे हट रही है। उन्होंने कहा कि सौ-सवा सौ साल से जो लोग राज्य में रह रहे हैं और कार्य कर रहे हैं, उन्हें बाहरी कहना और उनकी तुलना घुसपैठियों से करना ठीक नहीं है। साथ ही कहा कि पार्टी संगठन को मजबूत करने में जहां उनके योगदान की आवश्यकता होगी, वह तैयार हैं। खीरू महतो ने कहा कि सरयू राय के आने से पार्टी का एक विधायक प्रदेश में हो गया है। श्री राय पार्टी के नेता तो हैं ही, साथ ही मुख्यमंत्री और जदयू के सर्वमान्य नेता नीतीश कुमार के परम मित्र भी है। हमें झारखण्ड में सरयू राय जैसे मजबूत और वरिष्ठ नेता मिला है, वह हम सबका मार्गदर्शन करेंगे। हम दोनों का सामूहिक प्रयास है कि विधानसभा चुनाव में पार्टी बेहतर प्रदर्शन करे।

मौके पर जदयू नेता श्रवण कुमार, सागर कुमार, उपेंद्र सिंह, संजय सिंह, संतोष कुमार सोनी, दुष्यंत पटेल, पिंटू सिंह, उपेंद्र सिंह, आशा शर्मा, आशा सोनी, रमाकान्त मण्डल, अखिलेश राय, प्रदीप महतो, बिगा मिंज, राजू महतो, मनोज दुबे, राजनारायण पटेल, अशोक शर्मा, अनुराधा शर्मा, रुद्रकांतलाल दास, उदय सिंह, हारून रसीद, धनलाल दुबे, महेश्वर चौधरी व अन्य उपस्थित थे।

नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी मामले में भवन निर्माण के एमडी को कोर्ट ने किया तलब

रांची। झारखंड हाईकोर्ट के एक्टिंग चीफ जस्टिस एसएन प्रसाद व जस्टिस एके राय की खंडपीठ में नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी को बुनियादी सुविधा उपलब्ध कराने की मांग को लेकर दाखिल जनहित याचिका पर सुनवाई हुई। सुनवाई के बाद अदालत ने झारखंड राज्य भवन निर्माण कारपोरेशन लिमिटेड के एमडी को तलब किया है। मामले में अगली सुनवाई 27 अगस्त को होगी। सुनवाई के दौरान अदालत को बताया गया कि भवन निर्माण का डीपीआर तैयार करने में झारखंड भवन निर्माण कारपोरेशन को प्रोजेक्ट की कुल लागत का 10 फीसदी खर्च आएगा। यह राशि उसे उपलब्ध कराई जाए। अदालत ने नाराजगी जताते हुए कहा नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी के लिए अतिरिक्त भवन सहित आधारभूत संरचना के लिए राज्य सरकार ने 25 करोड़ रुपए आवंटित किए हैं। वह बहुत ही काफी कम है। ऐसे में यूनिवर्सिटी के अतिरिक्त भवन को लेकर डीपीआर बनाने के लिए 10 फीसदी की राशि कहां से आएगी। इससे पूर्व की सुनवाई के दौरान सीसीएल, सेल आदि की ओर से अदालत को बताया गया था कि वह नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी के अतिरिक्त भवन सीएसआर फंड के तहत तैयार करा सकता है। इसके लिए भवन का डीपीआर बनाकर दिया जाए। बता दें कि बार एसोसिएशन झारखंड हाईकोर्ट की ओर से जनहित याचिका दाखिल कर नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी को बुनियादी सुविधा उपलब्ध करने का आग्रह किया गया है।

खबर एक नजर में

23 अगस्त को राज्य के सभी हिस्से में होगी बारिश, मौसम विभाग ने जारी किया अलर्ट

रांची। आने वाले दिनों में राज्य में बारिश का असर जारी रहेगा। मौसम विज्ञान केंद्र के अनुसार आने वाले दो दिनों तक राज्य में साइक्लोन का असर देखा जायेगा। साइक्लोन बंगाल की खाड़ी में बन रहा है। जिसका असर पूरे राज्य में देखा जायेगा। ऐसे में 23 अगस्त को राज्यभर में बारिश की संभावना है। ऐसे में कुछ हिस्सों में भारी बारिश की संभावना है। जबकि वहीं, 24 अगस्त को भी बारिश का असर देखा जायेगा। केंद्र के अनुसार आने वाले कुछ दिनों तक राज्य में बारिश का असर बरकरार रहेगा। मुख्य रूप से 24 अगस्त तक राज्य के उत्तर पूर्वी, उत्तरी मध्य और दक्षिणी हिस्से में बारिश की संभावना है। इसमें दुमका, गोड्डा, पाकुड़, साहेबगंज, हजारीबाग, धनबाद, बोकारो, पश्चिमी और पूर्वी सिंहभूम, सरायकेला खरसावां, रामगढ़, खूंटी, रांची समेत अन्य जिलें शामिल है। साइक्लोन को देखते हुए मौसम विज्ञान केंद्र ने 25 अगस्त तक के लिये येलो अलर्ट जारी किया है।

निलंबित राजस्व कर्मचारी समेत 11 की हिरासत अवधि पांच सितम्बर तक बढ़ी

रांची। पीएमएलए कोर्ट ने बड़गाई अंचल के 8.46 एकड़ जमीन घोटाले में निलंबित राजस्व कर्मचारी भानु प्रताप प्रसाद समेत 11 आरोपियों की न्यायिक हिरासत अवधि 5 सितंबर तक बढ़ा दी है। इससे पूर्व जेल में बंद आरोपियों को गुरुवार को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से अदालत के समक्ष पेश किया गया। पेशी के बाद अदालत ने भानु प्रताप प्रसाद, झामुमो नेता अंतु तिर्की, मो सद्दाम, मो अफसर अली, विपिन कुमार सिंह, प्रियरंजन सहाय, इरसाद अख्तर, शेखर कुशवाहा, हजारीबाग के कोर्ट कर्मी मो इरशाद, कोलकाता के रजिस्ट्रार ऑफ एश्योरेंस के कर्मी तापस घोष और चौकीदार संजीत कुमार की न्यायिक हिरासत अवधि दो सप्ताह बढ़ा दी है। वहीं, जमानत पर चल रहे मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की ओर से हाजिरी दी गई। जबकि मामले के तीन आरोपी आर्किटेक्ट बिनोद कुमार सिंह, जमीन के मूल रैयत राजकुमार पाहन एवं मनोज कुमार यादव व्यक्तिगत रूप से कोर्ट में जज के सामने हाजिरी लगाई। सभी आरोपियों को अगली तारीख 5 सितंबर को पेशी और हाजिरी देनी है।

आरोपी बिपिन बिहारी ने लगायी जमानत की गुहार

रांची। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से जुड़े बड़गाई अंचल के 8.46 एकड़ जमीन फर्जीवाड़ा मामले में जेल में बंद जमीन कारोबारी बिपिन कुमार सिंह ने जमानत की गुहार लगाते हुये गुरुवार को याचिका दाखिल की है। दाखिल याचिका पर शुक्रवार को पीएमएलए कोर्ट में सुनवाई के लिये सूचीबद्ध की गई है। आरोपी ने गिरफ्तारी के 128 दिनों बाद जमानत की गुहार लगाते हुये याचिका दाखिल की है। ईडी ने जमीन घोटाले को लेकर बीते 16 अप्रैल को की गई छापेमारी के बाद बिपिन सिंह को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया था।

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, राष्ट्रीय ग्रामीण नियोजन कार्यक्रम, गुमला।

E-Mail – nrepgumla@gmail.com

अति अल्पकालीन पुर्ननिविदा आमंत्रण सूचना

संख्या – 03/2024-25

1. विज्ञापन दाता का नाम :– राष्ट्रीय ग्रामीण नियोजन कार्यक्रम, (NREP) गुमला।
2. परिमाण विपत्र बिक्री की तिथि :– दिनांक 29.08.2024 एवं 30.08.2024 को 10.00 बजे पूर्वा० से 03.00 बजे अपरा० तक।
3. निविदा प्राप्त करने की तिथि :– दिनांक 31.08.2024 को 03.00 बजे अपराहन तक।
4. निविदा खोलने की तिथि :– दिनांक 31.08.2024 को 03.30 बजे अपराहन में।
5. परिमाण विपत्र बिक्री का स्थान :– कार्यपालक अभियंता, NREP, गुमला का कार्यालय में।
6. निविदा प्राप्त करने का स्थान :– कार्यपालक अभियंता, NREP, गुमला में।
7. निविदा खोलने का स्थान :– कार्यपालक अभियंता, NREP, गुमला का कार्यालय में।
8. कार्य मद :–
9. कार्यों का विस्तृत विवरण :–

क्रम सं०	प्रखण्ड	पंचायत का नाम	कार्य का नाम	प्राक्कलित राशि	अग्रधन की राशि	परिमाण विपत्र का मूल्य	कार्य पूर्ण करने की अवधि	श्रेणी
1	2	3	4	5	6	7	8	
1	गुमला सदर	कतरी	कतरी आंगनबाडी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
2	गुमला सदर	खरका	बड़ा खटंगा पाकरटोली आंगनबाडी केन्द्र का भवन निर्माण।	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
3	गुमला सदर	बसुआ	सावरिया खास आंगनबाडी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
4	गुमला सदर	आंजन	उपर आंजन आंगनबाडी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
5	गुमला सदर	असनी	असनी नवाटोली आंगनबाडी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
6	गुमला सदर	असनी	बरिसा नकटीटोली –मिनी आंगनबाडी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
7	गुमला सदर	कलिंगा	कलिंगा बढ़कटोली आंगनबाडी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
8	गुमला सदर	कलिंगा	कलिंगा बोकोटोली आंगनबाडी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
9	गुमला सदर	करौरा	कोयनजारा महुआटोली आंगनबाडी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
10	गुमला सदर	करौरा	कोयनजारा गांजूटोली आंगनबाडी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
11	गुमला सदर	अम्बुआ	गिन्जरा खास आंगनबाडी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
12	गुमला सदर	वृन्दा	कोयनारा टोगरीटोली आंगनबाडी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
13	गुमला सदर	वृन्दा	कोयनारा खास आंगनबाडी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
14	गुमला सदर	कुलाबी रा	पतिया खास आंगनबाडी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
15	गुमला सदर	खोरा	धोधरा पाकरटोली आंगनबाडी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
16	गुमला सदर	घटगांव	घटगांव पश्चिमी आंगनबाडी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
17	गुमला सदर	घटगांव	काटासारू आंगनबाडी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
18	गुमला सदर	फरिया	फरिया नदीटोली आंगनबाडी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
19	गुमला सदर	फरिया	फरिया ढोढरीटोली 2 आंगनबाडी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
20	गुमला सदर	नगरपालिका	घेटर कन्हर टोली आंगनबाडी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
21	रायडीह	नवागढ	कुकुररोपटा आंगनबाडी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
22	रायडीह	सिलम	पान्दनटोली आंगनबाडी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
23	रायडीह	सिकोई	लुंगा आंगनबाडी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
24	रायडीह	परसा	तेलया आंगनबाडी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
25	रायडीह	कोब्जा	भिंजपुर आंगनबाडी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
26	रायडीह	उपर खटंगा	दुबुरूमा आंगनबाडी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
27	चैनपुर	जनावल	कराकु आंगनबाडी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
28	चैनपुर	जनावल	लुपुनपाट आंगनबाडी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
29	चैनपुर	बागदा	कोरकोटोली आंगनबाडी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
30	चैनपुर	कातिंग	कातिंग अम्बाटोली आंगनबाडी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
31	चैनपुर	कातिंग	ब्रहम्पुर आंगनबाडी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
32	चैनपुर	बरडीह	ऊरु आंगनबाडी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III
33	चैनपुर	बरवेनगर	दुठाटोली आंगनबाडी केन्द्र का भवन निर्माण	1108200.00	22500.00	2500.00	06 माह	III

निविदा की शर्तें:–

1. परिमाण विपत्र का शुल्क परिमाण NIT में अंकित राशि के अनुसार आवेदन के साथ बैंक ड्राफ्ट के रूप में जो कार्यपालक अभियंता, NREP, गुमला के नाम पर भुगतेय होगा। परिमाण विपत्र निर्गत किया जाएगा, जो लौटाया नहीं जायेगा। बैंक ड्राफ्ट निबंधित संवेदक के खाता से ही बना हुआ मान्य होगा एवं बैंक ड्राफ्ट की वैधता निविदा की प्रकाशन की तिथि से तीन माह का होना अनिवार्य है।
2. S.O.R से 10% कम दर पर अंकित करने तक अतिरिक्त जमानत राशि (Additional Performance Security money) की आवश्यकता नही है लेकिन यदि 10% से ज्यादा कम दर अंकित करते है तो नियमानुसार (Additional Performance Security) एकरारनामा के साथ ही देना अनिवार्य होगा।
3. Bank certificate certified/Prescribed format के अनुसार निविदा डालने के समय देना अनिवार्य होगा।
4. भवन निर्माण विभाग में निबंधित संवेदक ही निविदा में भाग ले सकेंगे।
5. निविदा की विस्तृत शर्तें कार्यालय की सूचना पटट पर अनिवार्य रूप से देख लें।

ह0/–
कार्यपालक अभियंता,
राष्ट्रीय ग्रामीण नियोजन कार्यक्रम, गुमला।

PR 333434 NREP(24-25)D

अपने ऑफिस में ही बैठकर सीओ को निबटाना होगा सारा ऑनलाइन काम

झारनेट के अलावा नहीं इस्तेमाल कर सकते दूसरा इंटरनेट, विभाग ने जारी किया आदेश

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। जमीन संबंधी मामलों के निबटारे में देरी की शिकायत हमेशा से आते रही है। जिला में हर तीन-चार महीने पर डीसी को आदेश जारी करना पड़ता है कि सीओ म्यूटेशन और उससे संबंधित काम को समय पर पूरा करें। लेकिन ऐसा हो नहीं पाता है। लेट-लतीफी हर अंचल कार्यालय में होती है, चाहे बहाना कोई भी हो। अब इस समस्या में और ज्यादा बढ़ोतरी होनी की प्रबल संभावना है। इसकी वजह खुद भू-राजस्व विभाग है। दरअसल भू-राजस्व विभाग की तरफ से सभी डीसी को एक पत्र जारी किया गया है। पत्र विभाग के एमडी भोर सिंह यादव की तरफ से जारी किया गया है।

सिर्फ झारनेट से ही होगा काम, दूसरे इंटरनेट पर पाबंदी : भू-राजस्व की तरफ से जारी आदेश में कहा गया है कि 26 जून को मुख्य सचिव की अध्यक्षता में संपन्न बैठक और 12 जुलाई 2024 को राजस्व विभाग की समीक्षा बैठक के निर्णय के अनुसार सभी राजस्व कार्यालय में झारनेट कनेक्टिविटी की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। झारनेट के माध्यम से ही राजस्व कार्यों के निष्पादन हो। इसके लिए जिले के डीसी सभी राजस्व पदाधिकारी और कर्मियों को निर्देश जारी करें। साथ में यह भी कहा गया है कि इस आदेश को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए।

अंचलाधिकारी और कर्मियों का मौन विरोध

इस आदेश के जारी होने के बाद अंचल में काम करने वाले अधिकारियों और कर्मियों का कहना है कि इस आदेश के बाद से जमीन संबंधी काम के निबटारे में और देर होगी। क्योंकि झारनेट की सुविधा सिर्फ अंचल कार्यालय में ही होती है। ऐसे में अब सीओ सिर्फ कार्यालय में ही ऑनलाइन काम कर सकेंगे, जबकि सीओ हर वक्त कार्यालय में नहीं होते हैं। बैठकों में शामिल होने के लिए जिला मुख्यालय या फिर दूसरे लॉ एंड ऑर्डर के मामलों के लिए सीओ को फील्ड में भी जाना पड़ता है। ऐसे में जमीन संबंधी काम सीओ अपने आवास या फिर और भी कहीं रहकर नहीं कर पाएंगे। जिससे काम का प्रेशर और ज्यादा बढ़ेगा, विवाद होने की संभावना बढ़ेगी।

झारखंड में इंडी गठबंधन का वजूद खतरे में : बाबूलाल

कांग्रेस छोड़ दर्जनों ने थामा भाजपा का दामन

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने कहा कि झारखंड में इंडी गठबंधन का वजूद खतरे में है। श्री मरांडी गुरूवार को पार्टी मुख्यालय में आयोजित मिलन समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि डूबती नाव से लोग भाग रहे हैं। उन्होंने कहा कि कि भाजपा अभी प्रदेश में संघर्ष कर रही है। सत्तारूढ़ दल को छोड़कर भाजपा में शामिल होकर इस संघर्ष का साथी बनना एक बड़ी बात है। आप लोगों के योगदान से केवल सरायकेला, जमशेदपुर ही नहीं बल्कि पूरे झारखंड में पार्टी को ताकत मिलेगा। इससे राज्य में एक अच्छा मैसेज भी जावेगा। संघर्ष के साथियों का भाजपा में स्वागत है। उन्होंने कहा कि झारखंड सरकार हर मोर्चे पर विफल है। राज्य सरकार ने राज्य के युवा, किसान, महिला, आदिवासी, दलित, पिछड़ा यानि सभी वर्गों को ठगने का

काम किया है। वर्तमान झारखंड सरकार के पाप का घड़ा पूरी तरह भर चुका है। यह सरकार बस अब कुछ दिनों की मेहमान है। हम सबों को मिलकर इस वर्तमान भ्रष्ट और निक्कमी सरकार को यहां से हटाना बहुत जरूरी है। उन्होंने कहा कि चोरी, डकैती, हत्या, अपहरण चरम पर है। बहू बेटियों की इज्जत भी सुरक्षित नहीं है। उन्होंने 23 अगस्त को राज्यव्यापी युवा आक्रोश रैली में मिलन समारोह में पार्टी का दामन थामने वालों सहित राज्य के युवाओं व लोगों से अधिक से अधिक भागीदारी का आह्वान किया। सभी के सहयोग से 2024 के विधानसभा चुनाव में इस सरकार को उखाड़ फेंकना है। इस अवसर पर पूर्व प्रदेश अध्यक्ष रवींद्र कुमार राय ने कहा कि राज्य सरकार से जनता हर हाल में मुक्ति पाना चाहती है। वह घड़ी नजदीक आ चुकी है। इस दौरान पूर्व विधायक अरविंद कुमार सिंह उर्फ मलखान सिंह, गणेश महली भी उपस्थित थे। मंच संचालन योगेंद्र प्रताप सिंह ने किया।

इन्होंने थामा भाजपा का दामन

मिलन समारोह में कांग्रेस नेता सह इंटक के प्रदेश सह सचिव चंदन कुमार सिंह, आम आदमी पार्टी के प्रदेश उप संयोजक प्रेम कुमार, सरायकेला खरसावां कांग्रेस के जिला महामंत्री विनोद कुमार सिंह, सरायकेला खरसावां कांग्रेस के जिला सचिव राम विचार राय, कांग्रेस नेता नीरज कुमार सिंह, शैलेश गुप्ता, पंकज कुमार सिंह, राघवेंद्र सिंह, संजय कुमार सिंह सहित सैकड़ों लोगों ने भाजपा की सदस्यता ग्रहण की।

राकेश तिवारी ने नये प्रदेश अध्यक्ष से की भेंट

खबर मन्त्र संवाददाता

जमशेदपुर। झारखंड कांग्रेस के प्रदेश सचिव खरसवां के प्रभारी राकेश तिवारी ने आज रांची मे नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश का कांग्रेस भवन में भेंट कर उनका स्वागत किया। तत्पश्चात उन्होंने बताया कि आलाकमान ने जमीन से जूडे साधारण ब्यक्ति को झारखंड कांग्रेस का बागडोर सौंप कर साधारण कार्यकर्ताओ के मनोबल को बढ़ाने का कार्य किया है जिससे पार्टी को आगामी विधानसभा चुनाव में काफी फायदा होगा।

युवा जनाक्रोश रैली में बढ़-चढ़ कर भाग लें युवा : डा जटाशंकर पांडेय

जमशेदपुर। भाजपा झारखण्ड प्रदेश के प्रदेश कार्य समिति सदस्य तथा खरसावां बिधान सभा के प्रभारी डॉ जटा शंकर पाण्डेय ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर झारखण्ड प्रदेश के नवजावानो तथा आम जनता से 23अगस्त को रांची मोहराबादी मैदान में आयोजित युवा जनआक्रोश रैली को सफल बनाने की अपील की है। श्री पाण्डेय ने कहा की रैली में इतने लोग पहुचे कि झारखण्ड सरकार हिल जाय। युवा बिरोधी महिला बिरोधी, आदिवासी बिरोधी. किसान बिरोधी. गाँव बिरोधी, गरीब बिरोधी, उद्योग बिरोधी, मजदूर बिरोधी. शिक्षा बिरोधी और छात्र बिरोधी सरकार को एक मिनट भी गद्दी पर रहने का अधिकार नहीं है। डा पांडेय ने यहां जारी बयान में कहा कि हर कदम पर झारखंड में भ्रष्टाचार करने वाली, मुस्लिम तुस्टीकरण करने वाल धर्मान्तरण को बढ़ावा देने वाली सरकार को तत्काल प्रभाव से इस्तीफा दे देना चाहिए।

बेटी ने प्रोपर्टी का कागज और धन छीन कर बुढ़ी मां को घर से निकाला

बुजुर्ग महिला को डालसा के पीएलवी थाना की मदद से उसके घर में फिर रखवाया

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। जिला विधिक सेवा प्राधिकार जमशेदपुर के निर्देशन में मोबाईल वैन द्वारा डुमरिया प्रखंड क्षेत्र में कानूनी जागरूकता अभियान चलाया गया । इस दौरान डालसा टीम में पीएलवी के रूप में नागेन्द्र कुमार, निताई चंद्र गोराई , संजय तिवारी, जोबा रानी बासके, लक्ष्मी मुर्मू, मालती बेसरा , डांगी मुर्मू , शामिल थे। जागरूकता के दौरान पीएलवी ने डालसा कार्य व उद्देश्य से लोगो को अवगत कराया गया। साथ ही बाल विवाह, बाल श्रम , चाईल्ड प्रोटेक्शन , शिशु प्रोजेक्ट, मानव तस्करी, घरेलू हिंसा, डायन प्रथा, नशापान आदि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। इसके अलावा राज्य एवम केन्द्र सरकार द्वारा संचालित योजनाओं के बारे में भी बताया गया । जागरूकता अभियान के दौरान डुमरिया बाजार में दुर्गा मंदिर के समीप एक बुजुर्ग महिला मिली जिसे उसके अपनी ही बेटी ने घर जमीन, पेंशन आदि का सभी कागजात छिनकर उसे घर से निकाल कर बेघर कर दिया था । वह महिनों दिन से फुटपाथ पर रहने को मजबूर थीं और किसी तरह मांग कर आधा पेट खाकर रहती थी । जागरुकता अभियान के क्रम में जब उक्त पीड़ित बुजुर्ग महिला के बारे में डालसा टीम को पता चला तो डुमरिया थाना में जाकर इसकी सूचना दी और पुलिसकर्मी की सहायता से पीएलवी की उपस्थिति में उसे घर पहुंचाया गया। बुजुर्ग महिला का नाम सावित्री भगत (65) , पति- स्वर्गीय रजनरकांत भगत , गांव - पथरासाई, टोला- डांडके घुटु , पोस्ट - भागाबांछी , थाना इमरिया, पंचायत : खड़िदा है।

बुर्जुग महिला का दर्द जानते डालसा के पदाधिकारीगण।

एनएमएल के डा अभिलाष को मिला शांति स्वरुप भटनागर पुरस्कार

विज्ञान भवन,नयी दिल्ली में राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू ने प्रदान किया पुरस्कार

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। सीएसआईआर-एनएमएल के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. अभिलाष को इंजीनियरिंग विज्ञान में उनकी वैज्ञानिक और तकनीकी उपलब्धियों के लिए विज्ञान युवा - शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

डॉ. अभिलाष ने खदान और प्रक्रिया अपशिष्ट आदि जैसे माध्यमिक संसाधनों से महत्वपूर्ण/रणनीतिक धातुओं के निष्कर्षण के लिए अंतःविषय स्वदेशी प्रक्रियाओं के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, साथ ही खनन, धातुकर्म और अपशिष्ट रीसाइक्लिंग उद्योगों के लिए प्रौद्योगिकियों का लाभ उठाने में अनुकरणीय योगदान दिया है। उन्होंने निम्न ग्रेड टेलिंग्स से यूरेनियम के बायोप्रोसेसिंग, दूषित स्थलों के निवारण, लाल मिट्टी से सीधे दुर्लभ-पृथ्वी तत्वों के निष्कर्षण, ब्लास्ट फर्नेस स्लैग खर्च किए गए उत्प्रेरक और ईवी बैटरियों के लिए नवीन प्रौद्योगिकियों का विकास और सफलतापूर्वक व्यावसायीकरण किया है। एनएमएल, जमशेदपुर परिवार ने डा अभिलाष को प्रतिष्ठित शांति स्वरुप भटनागर पुरस्कार मिलने पर बधाई दी है, और संस्थान के लिए गर्व का विषय बताया है।

राष्ट्रपति से पुरस्कार ग्रहण करते डा अभिलाष।

दो दिवसीय साहित्य उत्सव कल से

जमशेदपुर। जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन के तुलसी भवन में दो दिवसीय साहित्य उत्सव का आयोजन 24-25 अगस्त को किया जायेगा। कोलकाता की बहुभाषी प्रकाशन संस्था सदीनामा के तत्वावधान में साहित्य उत्सव का उद्घाटन 24 अगस्त की दोपहर 2 बजे होगा जबकि समापन 25 अगस्त की शाम छह बजे होगा। इस अवसर पर स्थानीय लेखकों की पुस्तकों की एक प्रदर्शनी भी आयोजित की जायेगी। इसमें स्थानीय साहित्यकार निःशुल्क अपनी पुस्तकें प्रदर्शित कर सकते हैं। उक्त जानकारी सदीनामा के मुख्य संपादक जीतेंद्र जीतांशु और सह संपादक रेणुका अस्थाना ने बिष्टुपुर के एक होटल में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में दी। उन्होंने संयुक्त रुप से बताया कि 25 अगस्त को कथाकार अपनी कथाओं का पाठ करेंगे जिसकी समीक्षा उपस्थित वरिष्ठ साहित्यकार करेंगे। इसके पश्चात काव्य पाठ के सत्र का आयोजन किया जायेगा।

एक नजर में

बीआर सेवा सदन परिवार के अखिलेश ठाकुर का निधन

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। शहर के प्रसिद्ध त्वचा रोग विशेषज्ञ डॉ० राजीव कुमार ठाकुर के चाचा श्री अखिलेश कुमार ठाकुर का आक्सिमिक निधन सड़क दुर्घटना में इलाज के दौरान टीएमएच हॉस्पिटल में हो गयी है। उनकी अंतिम यात्रा भुईंयाडीह स्थित स्वर्णरेखा घाट के लिए उनके निवास स्थान इस्ट प्लांट बस्ती से आज दिनांक 23.08.2024, समय 11 बजे प्रस्थान करेगी। अखिलेश ठाकुर का समाजसेवा और दवा कारोबार में एक जाना-माना नाम है। उनके बड़े भाई स्व. आरपी ठाकुर जमशेपुर के नामी चिकित्सक थे। स्व. अखिलेश ठाकुर अपने पीछे पत्नी, दो पुत्रियों समेत भतीजे-भतिजियों का भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उक्त जानकारी देते हुए डॉ० राजीव ठाकुर ने कहा कि स्वभाव से मिलनसार एवं गरिबों को मेडिकल चिकित्सा में हमेशा मदद करने के अलावा गरीबों को आर्थिक मदद के लिए भी हमेशा तत्पर रहने अवाले अखिलेश का निधन बी आर सेवा सदन परिवार के लिए अपुरणीय क्षति है। अखिलेश ठाकुर के निधन जानकारी मिलते ही लोग उनके निवास स्थान पर आ रहें है।

गम्हरिया के रापचा फुटबॉल मैदान में सीएम का कार्यक्रम 28 को

कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण करते डीसी रविशंकर शुक्ला और एसपी मुकेश लुणावत।

खबर मन्त्र संवाददाता

गम्हरिया। आगामी मंगलवार, 28 अगस्त को मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन के प्रस्तावित कार्यक्रम की तैयारी को लेकर उपायुक्त रविशंकर शुक्ला एवं पुलिस अधीक्षक मुकेश कुमार लुणायत द्वारा गम्हरिया के रपचा स्थित फुटबॉल मैदान का निरीक्षण कर जायजा लिया गया। इस दौरान उन्होंने कार्यक्रम स्थल की साफ सफाई, स्टेज निर्माण, हेलीपैड, वाहनों के आवागमन, वाहन पार्किंग आदि के सम्बन्ध बिंदुवार चर्चा कर सम्बन्धित पदाधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिया गया।

गौरतलब है कि आगामी मंगलवार को उक्त मैदान में 'झारखण्ड मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना' संबंधी प्रमंडल स्तरीय कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। इस दौरान मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन द्वारा योजना अंतर्गत चयनित लाभुकों के बीच स्वीकृति पत्र वितरण किया जाएगा। उक्त कार्यक्रम मे सरायकेला-खरसावां जिले के अलावे पूर्वी सिंहभूम एवं पश्चिमी सिंहभूम जिले के लाभार्थी भी शामिल होंगे।

सूर्य मंदिर के निबंधन रद्द की अनुशंसा खारिज

अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह व संरक्षक चंद्रगुप्त सिंह।

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। जमशेदपुर के सिदगोड़ा क्षेत्र अंतर्गत सूर्य मंदिर का रखरखाव एवं संचालन करने वाली सूर्य मंदिर समिति के निबंधन रद्द करने की उपायुक्त की अनुशंसा को झारखंड सरकार के निबंधन महाप्रबंधक द्वारा तीन सदस्यीय जांच कमेटी ने आरोप में कोई सत्यता ना होने के कारण खारिज कर दिया। निबंधन महाप्रबंधक की ओर से पिछले दिनों इसपर एक विस्तृत रिपोर्ट सौंपी गयी है जिसमें कहा गया है कि सूर्य मंदिर के निबंधन संख्या को रद्द करने का कोई ऐसा मामला नहीं बनता है। इस फैसले पर जहां सूर्य मंदिर के सदस्यों में हर्ष है तो वहीं, सूर्य मंदिर समिति के अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह और संरक्षक चंद्रगुप्त सिंह ने निर्णय का स्वागत करते हुए इसे सत्य की जीत बताया है। समिति के अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह ने कहा कि पिछले कई वर्षों से सूर्य मंदिर और मंदिर समिति को अनावश्यक रूप से तंग करने का प्रयास किया गया। सूर्य मंदिर समिति पर बेबुनियाद और तथ्यहीन आरोप लगाकर इसे बदनाम करने और इसकी पवित्रता और प्रतिष्ठा को धूमिल करने की साजिश की गई। जमशेदपुर पुर्वी के निर्दलीय विधायक ने अपनी राजनीतिक पावर और पद का दुरुपयोग करते हुए दवाब बनाकर झूठी रिपोर्ट के माध्यम से सूर्य मंदिर समिति के निबंधन को रद्द करने की अनुशंसा कराई। परंतु झारखंड सरकार के निबंधन प्रबंधन विभाग की ओर से जमा की गई विस्तृत जांच रिपोर्ट में वास्तविकता सामने आने से षडयंत्र करने वालों की मानसिकता धराशायी हो गयी है।

जिला स्तरीय व्यस्क बीसीजी टीकाकरण का शुभारंभ

जमशेदपुर। समाहरणालय सभागार, जमशेदपुर में आयोजित एक कार्यक्रम में राष्ट्रीय यक्ष्मा उन्मूलन कार्यक्रम के तहत जिला स्तर पर बी.सी.जी टीकाकरण का शुभारंभ जिला दण्डाधिकारी सह उपायुक्त (डीसी) अनन्य मित्तल द्वारा किया गया । कार्यक्रम में उप विकास आयुक्त श्री मनीष कुमार, सिविल सर्जन डॉ साहिर पाल, जिला यक्ष्मा पदाधिकारी, जिला आर०सी०एच० पदाधिकारी एवं जिला वी.भी.डी पदाधिकारी समेत स्वास्थ्य विभाग के अन्य पदाधिकारी मौजूद रहे। टीकाकरण अभियान को लेकर यक्ष्मा पदाधिकारी ने जानकारी दी कि वयस्क टी.बी वैक्सीनेशन के लिए 6 श्रेणी में लोग शामिल किए गए हैं।

वरिष्ठ पत्रकार शशिभूषण को पितृ शोक

जमशेदपुर। शहर के वरिष्ठ पत्रकार शशिभूषण के पिता दीप नारायण राय का आज तड़के एक बजे निधन हो गया। वे 90 वर्ष के थे और काफी दिनों से बीमार चल रहे थे। इलाज के दौरान बनारस के एक निजी अस्पताल में उन्होंने अंतिम सांस ली। उनका अंतिम संस्कार बिहार के सासाराम जिला स्थित पैतृक गांव में होगा। यह जानकारी शशिभूषण के पत्रकार साथी राममूर्ति ने दी है।

एनिग्मा की चार दिवसीय प्रदर्शनी शुरू

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। महिलाओं द्वारा संचालित कोलकाता के प्रसिद्ध संस्था 'एनिग्मा' के तत्वावधान में चार दिवसीय प्री पूजा प्रदर्शनी की शुरूआत साकची बंगाल क्लब के पहले तल्ले हुई। प्रदर्शनी गुरुवार 22 अगस्त से रविवार 25 अगस्त तक सुबह 10 बजे से रात 9 बजे तक चलेगी। प्रदर्शनी का उद्घाटन समाजसेवी पूर्वी घोष ने फीता काटकर किया। पूर्वी घोष ने संस्था द्वारा महिलाओं को दी जाने वाली प्लेटफार्म सराहना की। संस्था की प्रमुख एलिट्रा सिन्हा मुखर्जी ने बताया कि जमशेदपुर में बारहवीं बार प्रदर्शनी का आयोजन बंगाल क्लब के पहले तल्ले में किया जा रहा है। प्रदर्शनी के माध्यम से महिलाओं को आत्मनिर्भर किया जा रहा है. प्रदर्शनी में कोलकाता व जमशेदपुर के बेहतरिन कारीगरों द्वारा तैयार लेडिस कलेक्शन- साड़ी, कुर्ति, आभूषण, मेन्स कनेक्शन आदि हैं। प्रदर्शनी में 30 कोलकाता व जमशेदपुर के लोगो ने स्टॉल लगाया है। उन्होंने बताया कि प्रदर्शनी में आने वाले लोगों के लिए विशेष छूट भी दिया जायेगा। इस अवसर पर बंगाल क्लब के सदस्य उपस्थित थे।

प्रदर्शनी का उद्घाटन करतीपूरबी घोष।

शिविर में 50 यूनिट रक्तदान, 100 पौधे बांटे

जमशेदपुर। आनंद मार्ग यूनिवर्सल रिलीफ टीम ग्लोबल के सहयोग से 50 यूनिट रक्त दान 100 पौधों दान एवं जमशेदपुर ब्लड सेंटर की ओर से आनंद मार्ग के 112 वा मासिक रक्त दान शिविर में ईश्वर कोटि के मनुष्यों ने 50 यूनिट रक्तदान किया एवं 100 पौधा वितरण किया गया । सुनील आनंद का कहना है कि जितने भी रक्तदाता निस्वार्थ भाव से रक्तदान करते हैं वह सभी लोग ईश्वर कोटि के मनुष्य है करण इस रक्तदान करने में रक्तदाता का किसी प्रकार का कोई भी स्वार्थ नहीं रहता परम पुरुष के छोटे-छोटे बच्चों के कष्ट निदान के लिए रक्तदान करते हैं इसलिए इस तरह के मनुष्य को ईश्वर कोटि के मनुष्य कहा गया है। रक्त दाताओं के बीच जमशेदपुर ब्लड सेंटर के जी एम संजय चौधरी , वीबीडीए के सुनील मुखर्जी ,टाटा वर्कर्स यूनियन के ट्यूब डिवीजन टेक्नोलॉजी सर्विसेज कमिटी मेंबर ज्ञान रंजन श्रीवास्तव ब्लड सेंटर के संजय चौधरी, प्रतीक संघर्ष के अरिजीत सरकार ने भी पौधा एवं प्रशस्ति पत्र देकर किया पत्र देकर सम्मानित किया।

बंद पड़े विद्यालय में विधायक मंगल ने शुरू करवाया पुस्तकालय

खबर मन्त्र संवाददाता

जमशेदपुर। जुगसलाई विधानसभा अंतर्गत मध्य सरजमदा पंचायत स्थित राज्यकृत प्राथमिक विद्यालय गोविंदनगर सोपोडेरा में आज से पुस्तकालय की शुरूआत की गई जिसका उद्घाटन जुगसलाई विधानसभा के विधायक मंगल कालिंदी के द्वारा किया गया। सरजमदा पंचायत स्थित राज्यकृत प्राथमिक विद्यालय कई वर्षों से बंद पड़ा हुआ था। स्थानीय बच्चों की पढ़ाई के लिए उनके परिजनों ने उक्त प्राथमिक विद्यालय में पुस्तकालय की शुरूआत करने की मांग विधायक से की थी जिस पर विधायक द्वारा उपायुक्त से पहल कर उक्त विद्यालय में पुस्तकालय की शुरूआत करवाई और आज उसका उद्घाटन किया। स्थानीय लोगों द्वारा पूजा अर्चना कर इसका शुभारंभ किया। विधायक ने कहा कि पुस्तकालय की शुरूआत हो जाने से स्थानीय बच्चों को इसका लाभ मिलेगा और जल्द ही जरूरत की सामग्रियां उपलब्ध कराई जाएगी। मौके पर मुख्य रूप से मुखिया बसंती गुप्ता, बिमल पाल, अविनाश उपाध्यय, उपन्द्र प्रसाद, अनिकेत शर्मा, अंकित सिंह, सुनील कुमार, सौरव यादव, सूरज सिंह, सुमित पासवान, विवेक पासवान प्रकाश, रोशन सिंह आदि स्थानीय लोगों उपस्थित थे।

साइक्लोथॉन 4.0 का आयोजन 25 अगस्त को, पोस्टर अनावरण

पोस्टर का विमोचन करते विजय आनंद मूनका व अन्य।

खबर मन्त्र संवाददाता

जमशेदपुर। अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच द्वारा राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर आगामी 25 अगस्त रविवार को साइक्लोथॉन 4.0 (साइकिल रेस) का आयोजन किया जा रहा हैं। इसका आयोजन देश भर में 851 से अधिक शाखाएं एक ही दिन और एक ही समय पर करने जा रही हैं। जमशेदपुर शहर में इसका आयोजन मारवाड़ी युवा मंच जमशेदपुर शाखा, टाटानगर अचीवर्स शाखा और अग्रवाल युवा मंच जमशेदपुर द्वारा संयुक्त रूप से किया जा रहा है। सर दोरबाजी पार्क के पास से रविवार सुबह सात बजे साइक्लोथॉन 4.0 का शुभारंभ होगा। इसे सफल और यादगार बनाने के लिए गुरूवार कर देर शाम को सिंहभूम चेम्बर भवन बिष्टुपुर में साइकिलिंग मैराथन के पोस्टर का भव्य अनावरण किया गया। सिंहभूम चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के अध्यक्ष विजय आनंद मूनका और महासचिव मानव केडिया ने संयुक्त रूप से पोस्टर का अनावरण किया। पोस्टर लॉन्च कार्यक्रम में मुख्य रूप से टाटानगर अचीवर्स शाखा के अध्यक्ष अंशुल रिंगसिया, अग्रवाल युवा मंच, जमशेदपुर के अध्यक्ष रोहित अग्रवाल आदि उपस्थित थे। उन्होंने कहा कि इस आयोजन का उद्देश्य राष्ट्रीय खेल दिवस को भव्य तरीके से मनाना और स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देना है। साइक्लोथॉन 4.0 में बड़ी संख्या में साइकिल प्रेमियों की भागीदारी की उम्मीद की जा रही है, जो इसे एक अविस्मरणीय अनुभव बना देगा।

माकपा ने जनसमस्याओं को लेकर एसडीओ ऑफिस पर दिया धरना

जमशेदपुर। भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) [माकपा] के आह्वान पर जनविरोधी केन्द्रीय बजट, महंगाई, बेरोजगारी एवं स्थानीय जन मुद्दों पर अगस्त माह भर राज्यव्यापी जनसंपर्क अभियान के साथ साथ राज्य एवं स्थानीय स्तर के मुद्दों की ओर राज्य सरकार एवं स्थानीय प्रशासन का ध्यान आकृष्ट करने के लिए पूरे राज्य में धरना, प्रदर्शन एवं ज्ञापन सौंपने का कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। इसी सिलसिले में आज 22 अगस्त को माकपा की जमशेदपुर नगर इकाई द्वारा धालभूम एसडीओ के समक्ष प्रदर्शन किया गया तथा एसडीओ महोदया के माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन सौंपा गया। इस अवसर पर जेपी सिंह, जे मजूमदार, सईद अहमद, विश्वजीत देब, केपी सिंह जैसे नेताओं के साथ बड़ी संख्या में पार्टी सदस्य मौजूद थे।

धातकीडीह में खुला डॉ. बत्राज हेल्थकेयर क्लिनिक्स

वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित और सुरक्षित होम्योपैथिक उपचार का अभिप्राय है डा बत्राज

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। दुनिया में होम्योपैथिक क्लिनिक्स की सबसे बड़ी चेन, डॉ बत्राज हेल्थकेयर ने जमशेदपुर में अपना पहला और झारखण्ड में चौथे क्लिनिक का शुभारंभ किया है। उद्घाटन समारोह में बिजनेस लीडर डॉ. नकुल कमानी, रेडियो सिटी के आरजे मनोज नाग और डॉ बत्राज ग्रुप ऑफ कंपनीज के ग्रुप सीईओ संजॉय मुखर्जी उपस्थित हुए। जमशेदपुर में डॉ बत्राज का क्लिनिक सेकंड फ्लोर, मुख्तार मेंशन, स्ट्रेट माइल रोड, ब्लड बैंक के पास, धातकिडिह, विस्तुपुर, जमशेदपुर, झारखण्ड 831001 में स्थित है। शुरूआत में रजिस्ट्रेशंस के लिये सीमित अवधि वाला खास 25% छूट का ऑफर भी है। डॉ बत्राज जमशेदपुर के लोगों के लिये होम्योपैथी की अच्छाइयों और नई अंतर्राष्ट्रीय टेक्नोलॉजीज का संयोजन कर सबसे तेज और सर्वश्रेष्ठ परिणामों की पेशकश करता है। होम्योपैथी दुनिया में औषधि की दूसरी सबसे बड़ी प्रणाली है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार भारत में 10 करोड़ से ज्यादा लोग इसका इस्तेमाल करते हैं। जमशेदपुर क्लिनिक के लॉन्च पर अपनी बात रखते हुए, डॉ बत्राज हेल्थकेयर के ग्रुप सीईओ डॉ. संजॉय मुखर्जी ने कहा, मानसून के इस सीजन में जमशेदपुर में डेंगू के मामले बढ़े हैं और अब तक 461 से ज्यादा मामलों की पुष्टि हो चुकी है। डॉ बत्राज हेल्थकेयर में हम लंबे समय से होम्योपैथी के फायदों को अत्याधुनिक अंतर्राष्ट्रीय टेक्नोलॉजीज के साथ मिलाकर काम कर रहे हैं। हम हर मरीज की जरूरतों के लिये निजी देखभाल पर ध्यान देते हैं। हमारे नये क्लिनिक का लॉन्च होना मरीज की सेहत और तंदुरुस्ती को बढ़ाने के लिये हमारी मौजूदा प्रतिबद्धता में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। होम्योपैथी के कई फायदे हैं, इसमें सर्वांगीण इलाज होता है और कोई दुष्प्रभाव भी नहीं होते हैं। डॉ बत्राज को ऐसे ट्रीटमेंट प्लान बनाने में विशेषज्ञता प्राप्त है, जो हर स्थिति की गंभीरता के अनुसार होते हैं। होम्योपैथी की खासियत है उसका किफायती होना, बिना चीर- फाड़ वाली तकनीकें और बड़ी ही सौम्यता के साथ दर्द के बिना रोग को ठीक करना। यह सारी खूबियाँ 'हीलिंग पीपुल, चेंजिंग लाइव्स' के हमारे मिशन को मजबूत करती हैं। प्रसन्न हूँ। इलाज करना एक निस्वार्थ कार्य है, जिससे मानवता का फायदा होता है। और डॉ बत्राज ने बेहतरीन चिकित्सा देखभाल प्रदान करने में अपनी अलग साख बनाई है। जमशेदपुर क्लिनिक के लॉन्च पर अपनी बात रखते हुए, बिजनेस लीडर नकुल कमानी ने कहा, मुझे बहुत खुशी है कि होम्योपैथी इलाज के सबसे सुरक्षित तरीकों में से एक है। इस क्लिनिक के शुभारंभ में आकर मैं

क्लिनिक्स का उद्घाटन करते उद्योगपति नकुल कमानी।

सरकारी काम में बाधा, आरोपी को भेजा जेल

पोटका। कोवाली पुलिस के साथ दुर्व्यवहार मामले में गुरुवार को अमीत सत्यम मानगो निवासी को सरकारी काम में बांधा पहुंचाने के आरोप में जेल भेजा गया है। इस संबंध में मिली जानकारी अनुसार बुधवार को भारत बंद के दौरान हल्दीपोखर ओडिशा रोड स्थित पेट्रोल पंप पर चार व्यक्ति वाहन में फ्यूल भरवाने आएं। पेट्रोल पंप कर्मियों ने बंद के कारण फ्यूल देने से इंकार कर दिया। इससे नाराज चारों व्यक्तियों ने पंप पर तोड़फोड़ की कोशिश किया। भय से पंप कर्मियों ने पुलिस को सूचना दी। सूचना पाकर थाना प्रभारी धनंजय पासवान सदलबल मौके पर पहुंचे। पुलिस ने युवकों को समझाने का प्रयास किया तो युवकों ने पुलिस से दुर्व्यवहार किया। इस दौरान अमीत सत्यम ने पुलिस से उलझ गया। थाना प्रभारी ने तत्काल चारों युवकों को हिरासत में लेकर थाना लाई व पूछताछ शुरू किया।

स्पीड न्यूज

छलावा है मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना : अविनाश वर्मा

मेदिनीनगर। भाजपा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य सह लातेहार विधानसभा चुनाव प्रभारी अविनाश कुमार वर्मा ने राज्य सरकार द्वारा मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना के निमित्त राज्य के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के पलामू आगमन पर चुटकी लेते हुए कहा कि पांच वर्षों तक जो सरकार खजाना खाली का बहाना बनाकर लोगों को ठगने का काम की और अपने चुनावी घोषणा पत्र के आलोक में एक भी वायदे पर खरा ना उतरने के बावजूद अब एक महीने के बचे हुए कार्यकाल में झारखंड की भोली भाली महिलाओं को ठगने का काम कर रही है। श्री वर्मा ने कहा कि झामुमो के घोषणा पत्र 2019 के अनुसार पिछले पांच वर्षों में प्रतिवर्ष 5 लाख नौकरी देने, चूल्हा योजना के तहत प्रत्येक महिला को 1000 रु. मासिक देने, पलामू समेत हजारीबाग और चाईबासा को उप राजधानी बनाने, शिक्षित बेरोजगारों को 5000 से सात हजार बेरोजगारी भत्ता देने, अल्पसंख्यकों के हित में अल्पसंख्यक कल्याण बोर्ड एवं उर्दू अकादमी का गठन आज भी अधूरा है। वर्मा ने सरकार के पिछले कार्यों को देखते हुए कहा कि इस मंईयां योजना का हश्र वही होने जा रहा है जो पेट्रोल सब्सिडी योजना का हुआ। उन्होंने कहा कि मंईयां योजना के पोस्टरों से पूर्व मुख्यमंत्री चंपई सोरेन की तस्वीरों को हटाना भी झामुमो में अंतर्कलह का कारण बना क्योंकि यह योजना चंपई सोरेन ने अपने अल्प कार्यकाल में देने की घोषणा की थी, जिसे मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने हाईजैक करते हुए उनके काम को अपने नाम करते हुए उन्हें बेवजह मुख्यमंत्री के पद से हटा दिया, जिसका परिणाम झारखंड के साथ पूरा देश देख रहा है और हम झारखंडियों पर हंस रहे हैं।

भारत बंदी में देशद्रोही नारेबाजी के खिलाफ व्यवसायियों ने की दुकानें बंद

पाटन (पलामू)। किशुनपुर चौक पर एससी एसटी समुदाय के लोगों के द्वारा बुधवार को बंद बुलाया गया था। बंद समर्थक किशुनपुर चौक पर देशद्रोही नारे लगाते हुए दुकानों को बंद करा रहे थे। गुरुवार को आक्रोशित व्यवसायियों ने किशुनपुर चौक के पास सुबह में दो घंटे अपनी अपनी दुकानें बंद रखकर विरोध जताया। व्यवसायियों ने पाटन थाना प्रभारी से देशद्रोही नारे लगाने वाले व्यक्तियों पर प्राथमिकी दर्ज कर कठोर कार्रवाई करने की मांग की। इधर समाजसेवी मुकेश सिंह, उमेश सिंह, श्रीकांत तिवारी सहित सैकड़ों लोगों ने इसका विरोध करते हुए किशुनपुर चौक को बंद करा दिया। इधर घटना का वीडियो भी वायरल हो रहा है। उक्त लोगों ने पाटन थाना में आवेदन देकर नामजद एफआईआर दर्ज कर कार्रवाई की मांग की। पाटन थाना प्रभारी लालजी ने लोगों को चार दिन के अंदर जांच कर कार्रवाई करने का आश्वासन दिया है। इधर बंद समर्थकों का कहना है कि देशद्रोही नारेबाजी नहीं की गई है।

श्रीराम जन्मभूमि न्यास के कामेश्वर चौपाल का होगा किडनी ट्रांसप्लांट

मेदिनीनगर। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास, अयोध्या के न्यासी कामेश्वर चौपाल का किडनी ट्रांसप्लांट 23 अगस्त होगा। उनकी बड़ी बेटी लीला देवी उनके लिए अपना किडनी दान करेंगी। चिकित्सक दल के परामर्श के उपरांत नई दिल्ली के सर गंगा राम अस्पताल में उनका ट्रांसप्लांट ऑपरेशन होगा। श्री चौपाल के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ के लिए विश्व हिंदू परिषद के पलामू ईकाई ने ईश्वर से प्रार्थना की है। मामले में जानकारी देते हुए वीएचपी जिलाध्यक्ष उमेश अग्रवाल ने बताया कि श्री चौपाल वर्ष 1995 से ही महुमेह से ग्रसित हैं, सांगठनिक कार्यों में व्यस्तता एवं खान-पान और विश्राम में अनियमितता के कारण वर्ष 2019 में उन्हें चिकित्सकों ने दोनों किडनी के खराब होने संबंधित परामर्श दिया था। किंतु राम काम में बाधा उत्पन्न न हो और संगठन का कार्य रुके नहीं, इसलिए वो सांगठनिक कार्यों में निरंतर लगे रहे, जिसके परिणामस्वरूप उनकी दोनों किडनी पूरी तरह से फेल हो चुकी है।

लापता बालक का तालाब में मिला शव

पाटन (पलामू)। पाटन थाना क्षेत्र के लोंइगा निवासी राजन, भुईयां, पिता परदेशी भुईयां का शव तालाब से बरामद किया गया। 14 वर्षीय राजन 19 अगस्त से अपने घर से लापता हो गया था। परिजनों के द्वारा काफी खोजबीन की जा रही थी इसी क्रम में बुधवार को ग्रामीणों ने राजन भुईयां का शव तालाब में तैरते हुए देखा। ग्रामीणों ने इसकी सूचना पुलिस को दी। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया। पीड़ित परिवार अत्यंत गरीब व्यक्ति है। मजदूरी कर अपना जीवन यापन करता है। इस घटना से लोईंगा के लोगों में शोक व्याप्त है।

शहीद मुनेश्वर सिंह का शहादत दिवस मना

पाटन (पलामू)। राजकीय कृत उत्क्रमित मध्य विद्यालय प्रखंड कॉलोनी पाटन में सहायक अध्यापकों ने शहीद मुनीश्वर सिंह का 16वां शहादत दिवस मनाया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रखंड अध्यक्ष हरेंद्र कुमार सिंह एवं संचालन सुरत राम ने किया। मुख्य अतिथि आकलन सफल सह प्रशिक्षित सहायक अध्यापक संघ के प्रदेश अध्यक्ष ऋषिकांत तिवारी उपस्थित थे। श्री तिवारी ने कहा कि मुनेश्वर सिंह का शहादत भुलाया नहीं जाएगा वहीं हरेंद्र कुमार सिंह ने कहा कि मुनेश्वर सिंह की कुर्बानी व्यर्थ नहीं जाने दिया जाएगा। मौके पर रोशन लाल यादव, विनोद सिंह, अखिलेश कुमार उर्फ मुन्ना, पूर्व अध्यक्ष जितेंद्र कुमार, रविंदर पासवान, अनिमा कुमारी, अनुज कुमार गुप्ता, उपेंद्र प्रसाद गुप्ता, विवेक कुमार, सुरेश राम, प्रभात पांडे, प्रदीप सिंह, महेश कुमार, अजय पासवान, संतोष कुमार सिंह, कुंदन कुमार, फारूक अहमद, उपेंद्र सिंह, रामजी यादव, भोला महतो आदि सैकड़ो सहायक अध्यापक मौजूद थे।

भारत बंद के दौरान पाटन में देशद्रोही नारा लगाना घोर निंदनीय : राधाकृष्ण किशोर

मेदिनीनगर। पाटन छतरपुर के पूर्व विधायक राधाकृष्ण किशोर ने कहा कि अनुसूचित जाति जनजाति के आरक्षण को लेकर आयोजित भारत बंद में पाटन के किशुनपुर गांव में जिस तरह पड़ोसी मुल्क के जिंदाबाद का नारा लगाया गया यह दुर्भाग्यपूर्ण व निंदनीय है। उन्होंने कहा कि किसी भी देश की सभ्यता व संस्कृति का सम्मान करना अच्छी बात है। वसुधैव कुटुंबकम देश का मूल्क संस्कार व विचारधारा है। अपने मूल्क में पड़ोसी मुल्क को जिंदाबाद का नारा लगाना निंदनीय है। आरक्षण को लेकर शांतिपूर्ण आंदोलन किया जाना व्यवस्था सम्मत है। ऐसे अवसरों पर पड़ोसी मूल्क का जिंदाबाद का नारा लगाये जाने का क्या अर्थ है। इस बात को उसी संगठन के नेता स्पष्ट कर सकते हैं जिनके बैनर तले बंद समर्थकों द्वारा पड़ोसी मूल्क जिंदाबाद का नारा लगाया गया है। भारत की एकता अखंडता व संप्रभुता पर कोई खतरा नहीं है। आरक्षण में वर्गीकरण को लेकर सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिया गया निर्णय अनुसूचित जाति जनजाति के किसी एक उपजाति का नहीं है। दोनों जातियों में सैकड़ों उपजातियां है। लोग न्यायालय के फैसले से सहमत नहीं हैं। लेकिन पड़ोसी मूल्क का जिंदाबाद का नारा लगाकर देशभर में एससी एसटी को उनकी सोच के अनुरूप खड़ा करने का कोई अधिकार नहीं है।

चियांकी हवाई अड्डा से की गयी मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना की शुरुआत

झारखंड की महिलाओं के सम्मान में गठबंधन की सरकार कटिबद्ध है : मुख्यमंत्री

- पूर्व में रांची से सरकार चलती थी वर्तमान में गांव घर से चल रही है सरकार

खबर मन्त्र संवाददाता

मेदिनीनगर। झारखंड गठन के बाद पहली ऐसी सरकार बनी है जो राज्य के सभी वर्ग के लोगों को ध्यान में रखते हुए जनकल्याणकारी योजनाओं को संचालित किया है। वर्ष 2019 के बाद झारखंड की गठबंधन वाली सरकार राज्य के उत्थान के साथ लोगों की भावना को ध्यान में रखते हुए सर्वजन पेंशन योजना, गुरुजी क्रेडिट कार्ड, सावित्री बाई फुले योजना, मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना समेत कई योजनाओं को लागू कर राज्यवासियों को लाभान्वित किया जा रहा है। उक्त बातें मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने चियांकी हवाई अड्डा में आयोजित प्रमंडलस्तरीय मुख्यमंत्री मईयां सम्मान योजना का उदघाटन कर कही। उन्होंने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि खराब मौसम होने के कारण विलंब से पहुंचा। कारण कि वर्तमान सरकार राज्यवासियों की परेशानी को देखते हुए अपनी कठिनाइयों को भूल जाती है। आज गांव स्तर के लोगों को अपनी छोटे छोटे कामों को लेकर ब्लॉक का चक्कर नहीं लगाना पड़ रहा है बल्कि बीडीओ, सीओ राज्यकर्मी लोगों के घर जा रहे हैं। यह पहली बार हुआ है कि सरकार गांव से संचालित हो रही है। मुख्यमंत्री मईयां सम्मान योजना से 21 वर्ष से 50 वर्ष तक की महिलाओं को लाभान्वित किया जा रहा है। इससे महिलाएं काफी मजबूत होंगी। उन्होंने केंद्र सरकार पर हमला करते हुए कहा कि यह सरकार कहती थी कि जो जनता हवाई चप्पल पहनती है उन्हें हवाई जहाज पर घुमायेंगे लेकिन जब झारखंड समेत पूरे देश में कोरोना जैसी महामारी आयी तो केंद्र की सरकार जनता को मरने के लिए छोड़ दिया। राज्य सरकार झारखंडवासियों की चिंता करते हुए हवाई जहाज, ट्रेन, स्पेशल बस से दूसरे राज्यों में फंसे हुए लोगों को घर तक लाने का काम किया। उन्होंने कहा कि जब गठबंधन की सरकार वर्ष 2019 में बनी तो दो वर्ष कोरोना काल में बीत गये। इसके बावजूद भी विपक्षी सरकार को अस्थिर करने में लगे रहे। विपक्षियों ने कोई कोर कसर नहीं छोड़ा। यहां तक कि मुझे जेल में डालने का काम किया। इसके बावजूद भी मैं अपनी हिम्मत नहीं हारा। गांव को मजबूत करने के लिए कई योजना संचालित किये। जब गांव मजबूत होगा तभी राज्य मजबूत होगा।

मईयां सम्मान योजना को लेकर विपक्ष की छाती पर लोट रहे हैं सांप : मंत्री मिथिलेश

झारखंड गठन के बाद महागठबंधन की सरकार ने राज्य में पहली बार मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना को लागू किया गया है। इससे राज्य की महिलाओं को काफी गौरव महसूस हो रहा है। उक्त बातें मंत्री मिथिलेश ठाकुर ने चियांकी हवाई अड्डा में मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि वर्ष 2019 के पहले की सरकार को जनता से कोई लेना देना नहीं था। जनता अपने भरोसे ही थी लेकिन जब हेमंत सोरेन की सरकार ने झारखंड के प्रत्येक वर्ग के लोगों को उत्थान के लिए योजना संचालित किया तो विपक्षी घबरा गये हैं।

मंईयां सम्मान योजना से महिलाएं होंगी सशक्त : मंत्री बेबी देवी

महिला बाल समाज कल्याण मंत्री बेबी देवी ने चियांकी हवाई अड्डा में सभा को संबोधित करते हुए कहा कि इस योजना से महिलाओं को मजबूती मिलेगी। हेमंत सोरेन के कार्यकाल में कई विकास योजनाओं की लकीर खिंची गई हैं जो झारखंड में दिखाई देता है लेकिन इसके पूर्व एक भी योजना से राज्यवासी लाभान्वित नहीं होते थे।

हेमंत सरकार विकास के प्रति गंभीर : मंत्री बैद्यनाथ राम

चियांकी हवाई अड्डा में मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मंत्री बैद्यनाथ राम ने कहा कि राज्य में विकास की गंगा बह रही है। जनकल्याणकारी योजनाओं को देखकर राज्य की विपक्षी पार्टियां अचंभित रह गई हैं। वे नहीं चाहती हैं कि राज्य की जनता का भलाई हो। उन्होंने आरक्षण के सवाल पर कहा कि केंद्र सरकार एससी एसटी के आरक्षण का अधिकार छिनना चाहती है जिसका विरोध हमलोगों ने किया। हेमंत सोरेन विकास के प्रति गंभीर हैं।

सरकार महिला सशक्तिकरण को ले संकल्पित : दीपिका पांडेय सिंह

कृषी मंत्री दीपिका पांडेय सिंह ने चियांकी हवाई अड्डा में आयोजित मंईयां सम्मान योजना को संबोधित करते हुए कहा कि झारखंड की गठबंधन की सरकार महिलाओं की सुरक्षा ही नहीं उनके सशक्तिकरण के लिए कृत संकल्पित है। महिलाओं को स्वावलंबी बनाया जा रहा है। राजनीतिक, आर्थिक व समाजिक, शिक्षा, स्वास्थ्य के क्षेत्रों में महिलाओं को मजबूती प्रदान किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि आंगनबाड़ी सेविका से लेकर राज्य सेवा में कार्यरत महिलाओं को भी मातृत्व अवकाश का लाभ दिया जा रहा है।

डबल इंजन की सरकार में राज्य का विनाश हुआ : सत्यानंद भोक्ता

श्रम नियोजन एवं प्रशिक्षण मंत्री सत्यानंद भोक्ता ने मंईयां सम्मान योजना को संबोधित करते हुए कहा कि डबल इंजन सरकार के कार्यकाल में कोई भी योजना धरातल पर न उतारी गई और ना ही कहीं दिखाई देती है। आज शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि के अलावे विभिन्न क्षेत्रों में महागठबंधन की सरकार ने जो विकास की योजनाएं धरातल पर उतारा है वह दिखाई दे रहा है। उन्होंने कहा कि महागठबंधन की सरकार झारखंडवासियों को पेंशन दे रही है तो वहीं विपक्षी पार्टियां राज्यवासियों को टेंशन देने में लगी हैं। उन्होंने कहा कि झारखंड में जब डबल इंजन की सरकार कार्य कर रही थी उस समय झारखंड को विनाश ही हाथ लगा है।

राज्य की महिलाओं को दिया जा रहा लाभ : सचिव मनोज कुमार

बाल विकास विभाग के सचिव मनोज कुमार ने कहा कि मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन का विजन जनोपयोगी है। जिसका प्रतिफल है कि मंईयां सम्मान योजना में राज्य की महिलाओं को लाभ दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि इस योजना में कुछ भ्रांतियां रही थी जिसे दूर किया गया है। यह सतत चलने वाली योजनी है।

पलामू में दो लाख से अधिक महिलाओं को योजना का लाभ दिया गया : उपायुक्त

उपायुक्त शशिरंजन ने चियांकी हवाई अड्डा में पलामू प्रमंडल स्तरीय मुख्यमंत्री मंइयां सम्मान योजना के सम्मान समारोह में स्वागत भाषण देते हुए कहा कि इस योजना से पलामू के दो लाख 65 हजार से अधिक महिलाओं को जोड़ा गया है। शेष छूटी हुई महिलाओं को इस योजना का लाभ अविलंब दिया जायेगा। यह योजना पलामू में महाअभियान का रूप ले चुका है। पलामू जिले में मिशन मोड पर काम किया जा रहा है।

कार्यक्रम में जो थे शामिल

मनिका विधायक रामचंद्र सिंह, प्रमंडलीय आयुक्त बालकिशुन मुंडा, पलामू जिला परिषद उपाध्यक्ष टुटू सिंह, गढ़वा जिला परिषद अध्यक्ष शांति देवी, डीआईजी वाइएस रमेश, पलामू एसपी रीष्मा रमेसन, गढ़वा के उपायुक्त एवं पुलिस अधीक्षक के अलावे लातेहार पुलिस अधीक्षक समेत कई अधिकारी मौजूद थे। इनके अलावे झामूमो जिलाध्यक्ष राजेंद्र सिन्हा, केंद्रीय समिति सदस्य संजीव तिवारी, राजद जिलाध्यक्ष धनंजय पासवान, सन्नु सिद्दिकी समेत काफी संख्या में लोग शामिल थे।

अंधविश्वास व पाखण्ड के खिलाफ थे डॉ दाभोलकर : डॉ शुभग सिंह

- एके सिंह कॉलेज में तर्कवादी डॉ नरेंद्र दाभोलकर पर सेमिनार आयोजित

खबर मन्त्र संवाददाता

हुसैनाबाद (पलामू)। नीलाम्बर पिताम्बर विश्वविद्यालय से संबद्धता प्राप्त एके सिंह कॉलेज जपला में गुरुवार को महान विचारक डॉ नरेंद्र दाभोलकर के स्मृति दिवस को 'राष्ट्रीय वैज्ञानिक चेतना दिवस' के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर एक सेमिनार आयोजित किया गया। जिसकी अध्यक्षता प्राचार्य सूर्य मणि सिंह ने की। वहीं संचालन प्रो राहुल कुमार सिंह ने किया। सेमिनार का विषय था- 'डॉ नरेंद्र दाभोलकर प्रखर तर्कवादी और अंधविश्वास के शत्रु'। मौके पर मुख्य वक्ता व दर्शन शास्त्र के विभागाध्यक्ष डॉ राम सुभग सिंह ने कहा कि दाभोलकर पेशे से डॉक्टर थे और 1989 ई. में 'महाराष्ट्र अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति' का गठन कर इन्होंने अंधविश्वास के खिलाफ मुहिम छेड़ दी। अनेक स्वयंभू भगवानों, बाबाओं, तांत्रिकों एवं ओझाओं का इन्होंने भंडाफोड़ किया। इनका मानना था कि इस लोक के परे कुछ नहीं है। कोई अलौकिक शक्ति नहीं होती। सब कुछ प्रकृति के कारण - कार्य नियम से संचालित होता है। दाभोलकर प्रचलित धर्मों एवं ईश्वर को ही अंधविश्वास का मूल स्त्रोत मानते थे। यह निरीश्वरवादी थे और तर्क एवं विज्ञान की रोशनी में ईश्वर, आत्मा, पुनर्जन्म, मोक्ष, अमरता, भूत - प्रेत, चमत्कार, ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, स्वर्ग - नरक इत्यादि किसी भी रहस्मय एवं पारलौकिक चीज को स्वीकार नहीं करते थे।

सेमिनार में कई विद्यार्थियों ने अपने विचार रखे जिसमें रानी कुमारी, दिव्या कुमारी, आलोक कुमार, लाडले हसन, नसीम आलम, आनंद उज्जवल, और फैजान अख्तर।

वहीं सेमिनार में दर्जनों छात्र - छात्राएं मौजूद थे। इसके अलावा आई क्यूएसी, समन्वयक प्रो. अरुण कुमार सिंह, एनएसएस कार्यक्रम पदाधिकारी प्रो. राजेश कुमार सिंह, डॉ शिव कुमार विश्वकर्मा, सुनील कुमार सिंह एवं अकाउंटेंट ओम प्रकाश सिंह भी मौजूद थे।

चिकित्सा पदाधिकारी ने दिया योगदान

हैदरनगर (पलामू)। सिविल सर्जन डा. अनिल कुमार ने अनुमंडलीय अस्पताल हुसैनाबाद के चिकित्सा पदाधिकारी डाक्टर प्रसिद्ध नारायण सिंह को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र हैदरनगर में प्रतिनियुक्त कर दिया है। डा. प्रसिद्ध नारायण सिंह ने गुरुवार को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र हैदरनगर में योगदान कर लिया है। पदभार ग्रहण करने के बाद चिकित्सा पदाधिकारी डा. पीएन सिंह ने बताया कि वह अपने कार्यों का निर्वहन पूरी निष्ठा व ईमानदारी के साथ करेंगे। अस्पताल में आने वाले मरीजों को जितनी व्यवस्था है उसमे ही बेहतर सेवा देने का प्रयास करेंगे। उन्होंने कहा कि उनका प्रयास होगा की हैदरनगर ने अधिक से अधिक समय दें। उन्होंने आम लोगों से भी सहयोग का आग्रह किया है।

विश्रामपुर नगर परिषद के अनुबंधकर्मी आज से अनिश्चित कालीन हड़ताल पर

- अनुबंधकर्मियों ने कार्यपालक पदाधिकारी को सौंपा ज्ञापन

खबर मन्त्र संवाददाता

विश्रामपुर (पलामू)। झारखण्ड लोकल बॉडीज इम्प्लाइज फोडरेशन के आह्वान पर विश्रामपुर नगर परिषद के अनुबंधकर्मी 23 अगस्त से अनिश्चित कालीन हड़ताल पर चले जायेंगे। अनुबंधकर्मियों ने गुरुवार को कार्यपालक पदाधिकारी को अपना ग्यारह सूत्री मांगों का ज्ञापन सौंपकर हड़ताल पर जाने की जानकारी दी। कार्यपालक पदाधिकारी सोमा खंडैत ने अनुबंधकर्मियों को आश्वस्त किया कि उनके मांग पत्र को संबंधित विभाग को भेज दिया जायेगा।

फेडरेशन के विश्रामपुर इकाई अध्यक्ष रमेश कुमार ने बताया कि जब तक सभी मांगें नहीं मानी जायेगी तब तक आंदोलन जारी रहेगा।

मौके पर सुबोध केशरी, रवि कुमार, मुबारक अंसारी, सुमित कुमार, राजेश प्रसाद, नीरज कुमार सहित निकाय के सभी अनुबंधकर्मी मौजूद थे।

पशुपालन विभाग के एआई कर्मचारियों की अनिश्चितकालीन हड़ताल जारी

- धरना के दौरान सभी एआई कर्मचारियों ने चार सूत्री मांगों का ज्ञापन हुसैनाबाद भ्रमणशील पशु चिकित्सा पदाधिकारी को सौंपा

खबर मन्त्र संवाददाता

हुसैनाबाद (पलामू)। हुसैनाबाद में झारखंड पशुपालन विभाग एआई कर्मचारी संघ के आह्वान पर हुसैनाबाद पशुपालन विभाग के एआई कर्मचारियों का अपनी चार सूत्री मांगों को लेकर अनिश्चितकालीन हड़ताल जारी है। मौके पर एआई के प्रखण्ड अध्यक्ष रमेश कुमार प्रजापति ने कहा कि हमलोग चार सूत्री मांगों को लेकर 20 अगस्त से पूरे झारखंड में अनिश्चितकालीन हड़ताल पर है। हमारी झारखंड सरकार से मांग है कि एआई कर्मचारी का न्यूनतम मजदूरी के आधार पर मानदेय निर्धारित हो एवं 2019 से बकाया राशियों का भुगतान हो, पशुपालन विभाग में वर्षों से कार्यरत एआई कर्मचारी की नियमावली तैयार कर वरीयता सूची निर्गत किया जाय। पशुपालन विभाग से तृतीय एवं चतुर्थ वर्ग के रिक्त पदों पर एआई कर्मचारी को वरीयता/ योग्यता के आधार पर नियमित किया जाये और वर्तमान मानदेय राशि एवं प्रोत्साहन राशि, देय बीमा लाभ को ससमय भुगतान की व्यवस्था सरल करे। वहीं धरना के दौरान सभी एआई कर्मचारियों ने अपनी चार सूत्री मांगों का ज्ञापन हुसैनाबाद भ्रमणशील पशु चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. मोहमद शाहिद इकबाल को सौंपा।

मौके पर सचिव श्री निवास सिंह, रंजीत सिंह, राधेश्याम सिंह, प्रेम प्रकाश दुबे, अनोज ठाकुर, विश्वनाथ प्रताप सिंह, सौरभ कुमार, संतोष मेहता, अभिषेक यादव, धर्मेंद्र राम, राजेन्द्र विश्वकर्मा, राजू प्रजापति, राजेश श्रीवास्तव, प्रेम नारायण, परशुराम प्रजापति, सियाराम निवास सिंह, संतोष मेहता शामिल थे।

एकम तिथि को निकलेगी भव्य कलश यात्रा : छोटन शर्मा

- शांतिपूर्ण तरीके से दशहरा पर्व मनाने का लिया गया निर्णय

खबर मन्त्र संवाददाता

पांडू (पलामू)। पांडू प्रखंड अन्तर्गत ग्राम मुसीखाप पूर्वारा टोला स्थित दुर्गा मंडप के प्रांगण में दुर्गा पूजा समिति के अध्यक्ष सह नाट्य मंडली के डायरेक्टर छोटन शर्मा की अध्यक्षता में दशहरा पर्व मनाने को लेकर बैठक की गई। संचालन पूजा समिति के कोषाध्यक्ष सह नाट्य मंडली के अध्यक्ष अवधेश गुप्ता ने किया। बैठक में सर्वसम्मति से शांतिपूर्ण तरीके से दशहरा पर्व मनाने का निर्णय लिया गया। वहीं मौके पर पूजा समिति के अध्यक्ष श्री शर्मा ने कहा कि हमलोग हमेशा की तरह इस बार भी ग्रामीणों के सहयोग से भव्यता के साथ मां दुर्गा की पूजा अर्चना करेंगे और शांतिपूर्ण तरीके से पर्व मनाएंगे। वहीं उन्होंने बताया कि शारदीय नवरात्र प्रतिपदा एकम तिथि को भव्य कलश शोभा यात्रा निकाली जाएगी, जिसकी तैयारी में पूजा समिति जुट गई है। वहीं नाट्य मंडली के अध्यक्ष श्री गुप्ता ने कहा कि इस बार भी पांच दिवसीय नाट्य मंचन सांस्कृतिक कार्यक्रम का अयोजन किया जाएगा जिसमें एक से बढ़कर एक भगवान के लीलाएं एवं काल्पनिक कहानी को मंडली के कलाकारों के द्वारा प्रस्तुत किया जाएगा। बैठक में पूजा समिति के उपाध्यक्ष सह उद्घोषक धर्मेन्द्र विश्वकर्मा, उपकोषाध्यक्ष जयगुरुदेव प्रजापति एवं निराला प्रजापति, उद्घोषक राजू शर्मा, संरक्षक नाट्य मंडली के वरिष्ठ कलाकार अशोक चंद्रवंशी, सम्मानित सदस्य ललन शर्मा, अनिल विश्वकर्मा, वृजदेव शर्मा, मुन्ना चंद्रवंशी, सोहर प्रजापति, योगेन्द्र प्रजापति,नवयुवक सुरक्षा दल प्रमोद विश्वकर्मा, विक्की राम, राहुल शर्मा, अनुज वर्मा, मोहित रवि, सूरज रवि सहित पूजा समिति के पदाधिकारी, सदस्य नाट्य मंडली से जुड़े कलाकार समेत कई लोग

एनसीपी नेता ने जिला मद्यनिषेध विभाग के सुप्रिटेंडेंट से की शहर में शराब दुकान की धांधली की शिकायत

परेशान हैं ग्राहक, रंगबाजी से वसूला जाता है ज्यादा पैसा

- कार्रवाई नही की गई तो करेंगे आंदोलन : बिमलेश सिंह

गौतम पटेल

हुसैनाबाद पलामू। झारखण्ड में सरकार द्वारा अंग्रेजी (मसालेदार) और हिन्दी (प्लेन) शराब का ठेका नही कराने और दुकानदारों द्वारा जबरन ग्राहकों से निर्धारित मूल्य से अधिक पैसा वसूलने तथा सरकारी राजस्व में हेराफेरी का चौतरफा विरोध शुरू हो गया है। बुधवार को एनसीपी नेता व हैदरनगर बीस सूत्री अध्यक्ष बिमलेश कुमार सिंह ने यह मामला सार्वजनिक तौर पर उठाते हुए दुकानदारों द्वारा जबरन पैसा उगाही करने व बिना नेम प्लेट व अनुज्ञप्ति संख्या तथा मूल्य तालिका लगाने की शिकायत पलामू जिला मद्यनिषेध विभाग के सुप्रिटेंडेंट अधिकारी संजीत देव से की। इस दौरान मीडिया से श्री सिंह बताया कि हुसैनाबाद, हैदरनगर, मोहम्मद गंज के सभी दुकानों में प्रशासन की नाक के नीचे धांधली की जा रही है। उन्होंने यह भी कहा कि शराब दुकान पर आये दिन आम लोगों का आर्थिक शोषण हो रहा है। वहीं दुकानदारों द्वारा ऊपर से नीचे तक मैनेज करने की बात की जाती है, आखिर यह कौन लोग हैं ऐसे भ्रष्टाचार में संलिप्त हैं। आगे उन्होंने कहा कि अगर इस तरह की नजायज वसूली पर रोक नहीं लगाया जाता है तो मद्यनिषेध मंत्रालय तक इस मामले को पंहुचाऊंगा तथा जरूरत पड़ी तो आंदोलन भी होगा।

इधर इस संबंध में पलामू जिला आबकारी मद्य निषेध विभाग के सुपरिटेंडेंट अधिकारी ने मीडिया को बताया कि मुझे जानकारी मिली है। मैं सभी दुकानों में नेमप्लेट, मूल्य तालिका सूची व ऑनलाइन डिजिटल पेमेंट समेत सभी व्यवस्था को लागू कराता हूं अगर ऐसे दुकानदारों के खिलाफ शिकायत मिली तो कार्रवाई निश्चित होगी।

क्या है मामला

हुसैनाबाद अनुमण्डल क्षेत्र के सभी दुकानों में कोई अनुज्ञप्ति या दुकान का नाम या बोर्ड नही लगा हुआ है। वहीं निर्धारित मूल्य से अधिक 30, 50 से 100 रुपये तक वसूला जा रहा है। सेल्समैन तीन प्रतिशत अधिक लेने व ऊपर से नीचे तक कमीशन देने की खुलेआम काउंटर पर बोलते हैं। इससे स्पष्ट होता है यह सामूहिक लूट व भ्रष्टाचार है। वही किसी भी दुकान पर शराब अधिनियम की प्रथमिक मानदण्ड या मूल्य तालिका नही है, जिससे ग्राहकों को सुविधा मिले, उतना ही नही इस तरह आवाज कब से अखबार की सुर्खियों में रहती हैं लेकिन कोई कार्रवाई नहीं होती है । ग्राहक अपने को ठगा हुआ महसूस करते हैं। इतना ही नही दुकादार अब डिजिटल पेमेंट को हटा कर सीधा नगद राशि लेते हैं यह सबसे बड़ी धांधली है। हुसैनाबाद में यह सिलसिला काफी दिनों से चल रहा है। मगर विभाग की ओर से अबतक किसी प्रकार की कार्रवाई नहीं की गई है।

भाजपाइयों ने राज्य सरकार के खिलाफ निकाला कैंडल मार्च

खबर मन्त्र संवाददाता

पाटन (पलामू)। भाजपाइयों ने भाजपा मंडल अध्यक्ष संजय सिंह के नेतृत्व में हेमंत सोरेन के खिलाफ लोहिया चौक से लेकर पाटन बाजार तक कैंडल मार्च निकाला। मौके पर भाजपा नेताओं ने राज्य सरकार के खिलाफ नारेबाजी की। मौके पर संजय सिंह ने कहा कि राज्य की सरकार युवा विरोधी, किसान विरोधी व मजदूर विरोधी है। हेमंत सोरेन के शासन काल में मंत्री से लेकर संतरी तक जनता को लूटने में व्यस्त हैं। अधिकारियों पर इनका अंकुश नहीं है, जिससे जनता त्रस्त है। हेमंत सोरेन ने कहा था कि युवाओं को नौकरी देंगे, लोगों को बेरोजगारी भत्ता देंगे। आखिर क्या हुआ इनका वायदा। मौके पर प्रखंड उपाध्यक्ष जितेंद्र सोनी ने कहा कि यदि हेमंत ईमानदार मुख्यमंत्री होते तो शायद इन्हें जेल नहीं जाना पड़ता। मौके पर भाजपा के वरिष्ठ नेता वशिष्ठ पांडे, सेनि डीएसपी कन्हाई राम, निरंजन पासवान, धर्मेंद्र सोनी, संदीप सोनी, अभिषेक सिंह, युवा मोर्चा अध्यक्ष पाटन, रिकी प्रसाद, पारस सिंह, अजित सिंह, प्रिंस कुमार, अरविन्द प्रसाद, मिथलेश सिंह, जितेन्द्र सिंह, पप्पू सिंह, रौशन कुशवाहा समेत सैकड़ों भाजपा कार्यकर्ता मौजूद थे।

डायन-बिसाही में महिला को बाबाओं ने किया प्रताड़ित

बकरा, बिल्ली, कबूतर की दी गई बलि, लोहे के रड से दागा

खबर मन्त्र संवाददाता

दुमका। जिले के सरैयाहाट थाना क्षेत्र के बंदरकोला गाँव में डायन के अंधविश्वास में अधेर उम्र की महिला को रातभर बंधक बना कर प्रताड़ित करने का मामला सामने आया है। मामलें में पुलिस ने त्वरित कार्यवाही करते हुए आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। घटना को लेकर 59 वर्षीय महिला झपनी हेमब्रम ने थाना में आवेदन देकर बताया है की उसके गाँव के शंकर मुर्मू व उसका छोटा बेटा हमेशा बीमार रहता है। बुधवार की रात शंकर मुर्मू उसे बुलाकर अपने घर ले गया जहां पहले से दस बारह की संख्या में बाबा के भेष में लोग मौजूद थे। तथा उसे गर्म लोहे से दागते हुए कहने लगा की तुम डायन हो। इसी बीच कुछ लोग उसे तरह तरह के जड़ी बूटी सुंघाने लगा। इसके बाद बाबाओं के द्वारा लाये गये बकड़ा, कबूतर, बिल्ली, मोड़ पँख इत्यादि के साथ मंत्रो का जाप किया जाने लगा। उसे पुरे रात डायन कहकर प्रताड़ित किया जाने लगा। पुलिस ने इस मामलें में शंकर मुर्मू और झार फूँक करने वाले बाबाओं के विरुद्ध बीएनएस की धारा 126(2), 127(2), 352, 351(2), 351(3) व डायन प्रथा अधिनियम 3/4 के तहत मामला दर्ज करते हुए 12 लोगों को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया।

पुलिस ने 12 आरोपियों को भेजा जेल

जिन्हें किया गया गिरफ्तार

गिरफ्तार लोगों में शंकर मुर्मू सहित देवलाल टूड्डू, सूरजफूल हांसदा, दोनों ग्राम डंदुआकूड़ा, मुनि मुर्मू, लुरथू सोरेन, मुंकू हांसदा तीनों ग्राम तितलखी, बहामुनी हांसदा, ग्राम बारिसत, सूरजमुनी सोरेन ग्राम सलैया, तालो टूड्डू, दिलीप मरांडी दोनों ग्राम कोठीडिंडा, अजित हेब्रम ग्राम सलैया और पुलिस टूड्डू ग्राम बेरिसाल सभी थाना जयपुर जिला बांका बिहार शामिल है।

स्पीड न्यूज

महिलाओं ने सिखे योग के गुर

मैथन। चिरकुंडा के अग्रसेन भवन में द योगा इंस्टीट्यूट मुंबई व मारवाड़ी महिला समिति चिरकुंडा शाखा के सौजन्य से महिलाओं के लिए लगाए गए तीन दिवसीय योग शिविर के दूसरे दिन योग के गुर सिखाए गए। योगा शिक्षक के रूप में द योगा इंस्टीट्यूट मुंबई की सीनियर फैकल्टी पूजा हेलीवाल ने दर्जनों महिलाओं व युवतियों को प्रशिक्षण दिया। हेलीवाल ने योग शिविर में ताड़ा आसन, एकपद आसन, वीरभद्र आसन,अधो मुख स्वशासन,भुजंग आसन, मर्जनी आसन,पर्वत आसन आदि आसन के गुर सिखाए। न्होने कहा कि शिविर के अंतिम दिन भी सुबह व शाम के सत्र में योग सिखाया जाएगा। मौके पर मारवाड़ी महिला समिति की अध्यक्ष सीमा अग्रवाल, उषा जिंदल, भगवती रुंगटा, सुमन गढ़याण, श्रद्धा गढ़याण व निलय गढ़याण आदि मौजूद थे।

बी-लिस एवं एम-लिस का परीक्षाफल जारी

दुमका। सिदो-कान्हू मुर्मू विश्वविद्यालय के परीक्षा विभाग ने बी-लिस एवं एम-लिस सेमेस्टर-1 परीक्षा 2023 सत्र 2023-24 का परीक्षाफल घोषित मंगलवार को किया है। जिसमें बी-लिस सेमेस्टर-1 में 99 .49 प्रतिशत एवं एम लिस सेमेस्टर-1 में 88 .89 प्रतिशत परीक्षार्थी उत्तीर्ण घोषित है।

निदेशक प्रभारी ने सिंटर प्लांट में सुरक्षा का लिया जायजा

बोकारो। बीएसएल के निदेशक प्रभारी बीरेंद्र कुमार तिवारी ने संयंत्र के सिंटर प्लांट विभाग में सेफ्टी वॉक कर सुरक्षा पहलुओं का जायजा लिया। इस दौरान उनके साथ मुख्य महाप्रबंधक सुरक्षा बीके सरतापे मुख्य महाप्रबंधक तकनीकी एल दास सहित सिंटर प्लांट विभाग के वरीय अधिकारी उपस्थित थे। निदेशक प्रभारी श्री तिवारी ने सेफ्टी वॉक के दौरान सिंटर प्लांट विभाग के कर्मियों से सुरक्षा पहलुओं पर चर्चा की। साथ ही उन्हें सुरक्षा से सम्बंधित पीपीई के इस्तेमाल और सुरक्षा नियमों के अनुपालन का निर्देश दिया। निदेशक प्रभारी ने शॉप फ्लोर में बेहतर हाउस कीपिंग पर भी बल दिया तथा सुरक्षा पहलुओं को और पुख्ता बनाने हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

युवा जनाक्रोश रैली को सफल बनाने का आह्वान

झरिया। भारतीय जनता युवा मोर्चा की झारखंड इकाई द्वारा 23 अगस्त को युवा आक्रोश रैली रांची के मोरहाबादी मैदान में होगी। जनता श्रमिक संघ की महामंत्री सह भाजपा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य श्रीमति रागनी सिंह के नेतृत्व में बैठक गुरुवार को बिहार बिल्डिंग स्थित जनता श्रमिक संघ के कार्यालय में हुई। बैठक मे धनबाद जिला के विभिन्न कोलियारी क्षेत्रों के जनता श्रमिक संघ के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। बैठक में संतोष सिंह, प्रदीप सिन्हा, सतेंद्र सिंह, इंद्रजित सिंह, शैलेन्द्र सिंह, सैलो पासवान, आलोक पमपम, गोपाल चौधरी, अनिल नोनिया आदि मौजूद थे।

नवजीवन नर्सिंग में 47 यूनिट रक्त संग्रह

रक्तदान शिविर

खबर मन्त्र संवाददाता

गिरिडीह। नवजीवन नर्सिंग होम व रोटरी क्लब ऑफ गिरिडीह कपल के संयुक्त तत्वावधान में नवजीवन नर्सिंग होम में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में नवजीवन के कर्मियों व रोटरी कपल के सदस्यों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और पूरे उत्साह के साथ रक्तदान किया। इस दौरान 47 यूनिट रक्त संग्रह किया गया। शिविर की विशेषता यह रही कि कई महिलाओं व युवतियों ने भी रक्तदान किया। मौके पर मौजूद नवजीवन की निदेशक स्वाति बगेड़िया ने कहा कि नवजीवन नर्सिंग होम में हर वर्ष रक्तदान शिविर लगाया जाता है। इस वर्ष शिविर में 47 यूनिट रक्त संग्रह किया गया। मौके पर मौजूद रेड क्रॉस के चेयरमेन अरविंद कुमार ने रक्तदान शिविर के लिए नवजीवन व रोटरी कपल परिवार को बधाई देते हुए कहा कि पिछले कुछ दिनों से गिरिडीह रक्त अधिकोष में रक्त की कमी थी। इस शिविर से कई जरूरतमंदों को नया जीवन मिल पायेगा।

शिविर में इन्होंने किया रक्तदान

शिविर में सतविंदर सिंह सलूजा, अभिषेक बगेड़िया, स्वाति बगेड़िया, सिद्धार्थ जैन, गुरविंदर सिंह, शीतल गौरिसरिया, गीता सलूजा, सत्यदीप सिंह, समीर कुमार सरावगी, नम्रता सरावगी, राखी कोहली, अनित खंडेलवाल, जितेंद्र जैन, वैभव शाहाबादी, देव मिश्रा, अंशिका जैन, मो अख्तर, विश्वजीत विश्वकर्मा, उज्ज्वल कुमार, अविनाश यादव, शालू जैन, प्रितेश कुमार, रितेश तरवे समेत कई अन्य लोगों ने रक्तदान किया। वहीं शिविर को सफल बनाने में ब्लड बैंक प्रभारी डॉ शोहेल अख्तर, रेड क्रॉस के उप चेयरमेन चरनजीत सिंह सलूजा, संत कुमार, सुधीर कुमार, रंजीत कुमार, आनंद कुमार आदि का सराहनीय योगदान रहा।

डीएनडब्ल्यू विभाग में हिन्दी कार्यशाला

बोकारो। बीएसएल के डीएनडब्ल्यू विभाग में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन सीजीएम पावर राजन कुमार की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का संचालन राजभाषा अधिकारी शशांक शेखर ने किया। कार्यक्रम में राजभाषा अधिकारी एजीएम संपर्क एवं प्रशासन शशांक शेखर ने हिन्दी का राष्ट्र भाषा के रूप में महत्व इसकी उपयोगिता संविधान में इसके महत्व के बारे में विस्तृत जानकारी दी तथा साथ ही प्रतियोगिता का आयोजन किया जिसमें सीजीएम राजन कुमार के द्वारा विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम में जीएम संजीव भारतीय संजय कुमार दिलीप कुमार गोंड एजीएम अनिल कुमार हेंब्रम के साथ वरीय अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित थे।

गोविंदपुर एरिया 3 में सतर्कता जागरुकता पर कार्यशाला

कतरास। बीसीसीएल गोविंदपुर एरिया 3 के महाप्रबंधक कार्यालय में गुरुवार को विद्युत एवं यांत्रिक विभाग द्वारा निवारक सतर्कता जागरुकता अभियान पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि विद्युत एवं यांत्रिक महाप्रबंधक आर आर कर्ण ने कोयला अधिकारियों को जागरुकता अभियान के बारे में अवगत कराया। उन्होंने कोयला अधिकारियों को आवश्यक निर्देश भी दिये।

जिला परिषद मैदान में आज से लगेगा मेला

खबर मन्त्र संवाददाता

धनबाद। जिला परिषद मैदान में पहली बार दुबई थीम पर आधारित दुबई कार्निवल इंटरनेशनल ट्रेड फेयर 2024 का आयोजन 23अगस्त से 15 सितंबर तक किया जा रहा है। उद्घाटन 23 अगस्त को संध्या 5बजे किया जाएगा। आयोजक मोहम्मद कैफी मल्लिक व मोहम्मद सलाउद्दीन ने बताया कि ट्रेड फेयर के आकर्षण का मुख्य केंद्र दुबई की गगनचुंबी बिल्डिंग जैसे बुजुर्ग खलीफा, ट्विन टावर एवं एफिल टावर है। इस ट्रेड फेयर में युवक एवं युवतियों के लिए विशेष तरह के आकर्षक सेल्फी प्लेटफार्म तैयार किए गए हैं। संतोष गुप्ता ने बताया कि इस बार ट्रेड फेयर में पहली बार बांग्लादेश की जामदानी साड़ी, अफगानिस्तान का ड्राई फ्रूट का स्टॉल लगाया जाएगा। मेले में राजस्थानी अचार,स्वादिष्ट चूर्ण, खादी वस्त्र, सहारनपुर फर्नीचर के साथ तीज त्योहार को ध्यान में रखते हुए महिलाओं के सौंदर्य प्रसाधन से संबंधित हर प्रकार के सामान उपलब्ध रहेंगे। मेला आयोजन में सलाउद्दीन संतोष गुप्ता अजीत भकोडिया, सुरेश गिरी एवं पवन यादव का अहम योगदान है।

खिलाड़ी खेल भावना से खेलें : सीईओ

डीवीसी मैथन में अखिल घाटी बैडमिंटन टूर्नामेंट शुरू

खबर मन्त्र संवाददाता

मैथन। डीवीसी मैथन परियोजना के वेलफेयर सेंटर में गुरुवार को तीन दिवसीय 41 वां अखिल घाटी बैडमिंटन टूर्नामेंट शुरू हुआ। टूर्नामेंट का उद्घाटन डीवीसी के कार्यपालक निदेशक सह मैथन परियोजना प्रमुख अंजनी कुमार दुबे ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। उन्होंने सभी खिलाड़ियों का प्रोत्साहित करते हुए कहा कि खेल हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। खेल भावना से सभी खेलें, हार-जीत को स्वीकार करें और जो कमियां हैं, उनमें सुधार करें। इससे पहले खिलाड़ियों ने श्री दुबे का जोरदार स्वागत किया, जबकि डीजीएम अनूप पुरकायस्थ ने सभी खिलाड़ियों का स्वागत किया। डीवीसी खेल परिषद द्वारा आयोजित बैडमिंटन टूर्नामेंट 24 अगस्त तक चलेगा, जिसमें विभिन्न परियोजनाओं से आये खिलाड़ी हिस्सा ले रहे हैं। इस मौके पर उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ यू कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक बीसी कुजूर, प्रबंधक पार्थसारथी मुखर्जी, तापस राय, विनायक कुमार और सेंट्रल स्पोर्ट्स काउंसिल के सचिव उज्ज्वल बनर्जी मौजूद थे।

पीजी व यूजी के फॉर्म भरने की तिथि 29 अगस्त तक

दुमका। सिदो कान्हू मुर्मू विश्वविद्यालय प्रशासन ने गुरुवार को तीन परीक्षाओं के लिए फॉर्म भरने की तिथि बढ़ा दी है। उक्त परीक्षाओं में पीजी सेमेस्टर-2, सत्र-2023-25, यूजी सेमेस्टर-3, सत्र-2022-26 और बीएड सेमेस्टर-2, सत्र-2023-25 शामिल हैं। इससे पहले तीनों परीक्षाओं के लिए बिना विलंब शुल्क के ऑनलाइन आवेदन करने की अंतिम तिथि 23 अगस्त तक निर्धारित थी। जिसे अब बढ़ाकर 29 अगस्त कर दिया गया है। जबकि क्रमशः 200 रुपये और 500 रुपये विलंब शुल्क के साथ ऑनलाइन फॉर्म भरने की तिथि अब 30 अगस्त से 1 सितंबर होगी।

असेंबली लेवल मास्टर ट्रेनरों को मिला प्रशिक्षण

विधानसभा चुनाव को लेकर दिया प्रशिक्षण

खबर मन्त्र संवाददाता

धनबाद। आसन्न विधान सभा चुनाव के आलोक में कर्मियों को प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से असेंबली लेवल मास्टर ट्रेनरों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण आज गुरुवार को कंबाइंड बिल्डिंग परिसर स्थित पुराना डीआरडीए सभागार में समाप्त हुआ। इन तीन दिनों में राज्य एवं जिलास्तरीय मास्टर ट्रेनर के रूप में भूमि सुधार उप समाहर्ता संतोष कुमार गुप्ता, अनुमंडल पदाधिकारी उदय रजक, वरीय उप निर्वाचन पदाधिकारी प्रदीप कुमार शुक्ला, उप निर्वाचन पदाधिकारी कालीदास मुंडा, वरीय मास्टर ट्रेनर दिलीप कुमार कर्ण, संजय कुमार, राज कुमार वर्मा तथा उमेश लाल ने निर्वाचन से जुड़े 22 बिंदुओं पर विस्तार से प्रशिक्षण दिया। इस अवसर पर भूमि सुधार उप समाहर्ता श्री गुप्त ने विगत लोक सभा चुनाव में उत्पन्न कुछ केस स्टडी को साझा करते हुए कहा कि इससे सीख लेकर और बेहतर करने का प्रयास करें। अनुमंडल पदाधिकारी श्री रजक ने आदर्श आचार संहिता के मुख्य बिंदुओं का उल्लेख करते हुए कहा कि निर्वाचन कार्य के लिए निर्धारित नियमों के आलोक में ही प्रशिक्षण दें। वरीय उप निर्वाचन पदाधिकारी ने कहा कि सभी मास्टर ट्रेनर एक विशेषज्ञ के रूप में प्रशिक्षण दें।

प्रशिक्षण में थे शामिल

इन तीन दिनों के प्रशिक्षण में आदर्श आचार संहिता, पोस्टल बैलेट, सेक्टर पदाधिकारी का प्रशिक्षण, पोल दिवस प्रशिक्षण, काउंटिंग प्रशिक्षण, ईवीएम प्रशिक्षण सहित 22 बिंदुओं पर 74 मास्टर ट्रेनरों को प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण को सफल बनाने में दिलीप कुमार कर्ण, राज कुमार वर्मा, संजय कुमार, उमेश लाल, कुमार वंदन, पुष्कर झा, बृज भूषण पांडे, महफूज आलम, आलोक कुमार तिवारी आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

डिगवाडीह गणेश पूजा मैदान में मेला का विवाद गहराया

जोड़ापोखर। कोयलांचल की बेहतरीन गणेश पूजा डिगवाडीह गणेश पूजा मौदान में होती है। इस वर्ष 36 वीं वार्षिक गणेश पूजा 7 सितम्बर से होगी। इस अवसर पर भव्य मेला को लेकर बिवाद गहरा गया है। इसके पहले वर्ष 2023 से मेला का संचालन कर रहे पवन प्रजापति ने बर्तमान पूजा कमेटी पर मारपीट करने व धोखाधड़ी का आरोप लगाया है। उन्होंने बताया है की पूजा कमेटी के दिनेश यादव, एम के ठाकुर एवं बर्तमान मेला संचालक राकेश गोस्वामी ने मिल कर मेला नहीं लगाने का षड्यंत्र रचा है। हालांकि जमीन मालिक बिनोद मरांडी को 5 लाख रुपये दे दिये हैं। एग्रीमेंट वर्ष 2031 तक का है। श्री प्रजापति ने बताया कि गणेश पूजा मैदान में बिना विवाद सलटाये ही तारा माची गिरा दिया गया है। जोड़ापोखर पुलिस कमेटी को पूरा सहयोग कर रही हैं।

28 अगस्त को धकोकसं मनायेगा पर्यावरण दिवस

धनबाद। धनबाद कोलियरी कर्मचारी संघ (भामसंघ) 28 अगस्त को अमृता देवी बलिदान दिवस के अवसर पर पर्यावरण दिवस मनायेगा। संघ के महामंत्री उमेश कुमार सिंह ने बताया कि बीसीसीएल की सभी कोलियरियों पर्यावरण दिवस मनेगा।

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय
ग्रामीण विकास विशेष प्रमण्डल, लातेहार।
शुद्धि –पत्र

अल्पकालिन ई–निविदा आमंत्रण सूचना संख्या–EE/RDSD/LATEHAR/11/2024-25 जिसका PR NO- 332873 Rural Development(24-25)D में निम्न प्रकार आंशिक संशोधित किया जाता है:–

(1) क्रमांक–2. में अंकित वेबसाइट में निविदा प्रकाशन की तिथि – 13.08.2024 के स्थान पर वेबसाइट में निविदा प्रकाशन की तिथि – 23.08.2024 पढ़ा जाय।

(2) क्रमांक–3. में अंकित ई–निविदा प्राप्ति की तिथि दिनांक 13.08.2024 से दिनांक 27.08.2024 के स्थान पर ई–निविदा प्राप्ति की तिथि दिनांक–23.08.2024 से दिनांक–31.08.2024 पढ़ा जाय।

(3) क्रमांक–5. में अंकित ई–निविदा खोलने की तिथि दिनांक–29.08.2024 के स्थान पर ई–निविदा खोलने की तिथि–दिनांक–04.09.2024 पढ़ा जाय।

निविदा की अन्य शर्तें पूर्ववत रहेगी।

PR 333376 Rural Development(24-25)D
कार्यपालक अभियंता
ग्रामीण विकास विशेष प्रमण्डल,लातेहार।

झारखंड सरकार
कार्यपालक अभियंता का कार्यालय,
ग्रामीण कार्य विभाग, कार्य प्रमंडल, गुमला

अल्पकालीन ई– निविदा आमंत्रण सूचना

ई–निविदा संख्या:- 08/2024-25/RWD/W/EE/GUMLA दिनांक–21-08-2024

कार्यपालक अभियंता, ग्रामीण कार्य विभाग, कार्य प्रमण्डल, गुमला द्वारा निम्न विवरण के अनुसार e-procurement पद्धति से निविदा आमंत्रित की जाती है।

क्र0 सं0	आईडेन्टीफिकेशन संख्या/ पैकेज संख्या	कार्य का नाम	प्राक्कलित राशि अंक में (लाख)	प्राक्कलित राशि अक्षर में	कार्य समाप्ति की अवधि।	टेण्डर कॉल सं0
1	RWD/W/EE/ GUMLA/ 05/ 2024-25	भीजपुर मुख्य पथ से झलियाबांध होते हुए काड़ामुखा सीमाना तक पथ निर्माण कार्य । (लं0–2.100 कि0मी0)	227.844	दो करोड़ सताईस लाख चौरासी हजार चार सौ रू0 मात्र।	12 माह	प्रथम
2	RWD/W/EE/ GUMLA/ 06/ 2024-25	मरियमटोली पुल से लुंगा होते हुए जारी सीमाना तक पथ निर्माण कार्य । (लं0–6.200 कि0मी0)	655.815	छः करोड़ पचपन लाख एकासी हजार पाँच सौ रू0 मात्र।	18 माह	प्रथम
3	RWD/W/EE/ GUMLA/ 07/ 2024-25	भेलवाडीह से सान्याकोना, कोजांग, खुटियारी तक पथ निर्माण कार्य । (लं0–5.000 कि0मी0)	503.030	पाँच करोड़ तीन लाख तीन हजार रू0 मात्र।	18 माह	प्रथम
4	RWD/W/EE/ GUMLA/ 08/ 2024-25	कापोडीह पारसगढ़ा से चापाटोली तक पथ निर्माण कार्य । (लं0–2.200 कि0मी0)	252.441	दो करोड़ बावन लाख चौवालीस हजार एक सौ रू0 मात्र।	15 माह	प्रथम

2 वेबसाईट में निविदा प्रकाशन की तिथि:– 27.08.2024
3 ई– निविदा प्राप्ति की अंतिम तिथि एवं समय:–03.09.2024 अपराह्न 05.00 बजे तक।
4 निविदा खोलने की तिथि एवं समय:– 04.09.2024 अपराह्न 05.30 बजे।
5 निविदा आमंत्रित करने वाले पदाधिकारी का नाम एवं पता:– कार्यपालक अभियंता, ग्रामीण कार्य विभाग, कार्य प्रमण्डल, गुमला, विकास भवन, गुमला के बगल में, पिन–835207
6 ई–निविदा प्रकोष्ठ का दूरभाष सं0–06524–465040 ।
विस्तृत जानकारी के लिए वेबसाईट jharkhandtenders.gov.in में देखा जा सकता है।

ह0/–
कार्यपालक अभियंता
ग्रामीण कार्य विभाग, कार्य प्रमण्डल, गुमला
PR 333406 Rural Work Department(24-25)#D

-: कार्यालय :-
प्राधिकृत पदाधिकारी–सह–वन प्रमण्डल पदाधिकारी,लातेहार वन प्रमण्डल

-: आवश्यक सूचना :-

भारतीय वन अधिनियम 1927 (बिहार संशोधन अधिनियम 1989) की धारा–52 के अंतर्गत अधिहरण वादों की सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि लातेहार वन प्रमण्डल, लातेहार अन्तर्गत जप्त वाहनों एवं जप्त वन पदार्थ से संबंधित विभिन्न वादों में सुनवाई हेतु अगली तिथि 09.10.2024 को निर्धारित की जाती है :–

क्र0 स0	अधिहरण वाद संख्या	वाद प्रारम्भ की तिथि	अभियुक्त का नाम	वाहन का प्रकार/वाहन संख्या	जप्त वन पदार्थ
1	12/2021	13.04.2021	मो0 अहमद	Tractor Engine No. 39.1355/SZD01931	पत्थर 20 CFT
2	35/2022	01.11.2022	मुकेश कुमार	Truck No.JH-02AF-1522	कोयला लगभग 25.020 MT
3	21/2023	31.05.2023	संतोष यादव हंसराज प्रसाद	Pickup Van Reg. No JH-01T-0899	साल चौकठ 12 पीस
4	24/2023	31.05.2023	मनोज प्रसाद गुप्ता पवन कुमार	Moterecyle Reg No. JH-01N-6823	गम्हार पटरा 04 पीस
5	26/2023	02.06.2023	मोहन प्रजापति	-	साल चौकठ 13 पीस
6	29/2023	16.06.2023	सुमन्त कुमार कमलेश यादव	Mahendra Tractor Reg. No. JH-08D-9761 Engine No. RYNB00729	साल बल्ली 31 पीस
7	35/2023	11.10.2023	रविन्द साव	Tempo Reg. No JH-19C-9160	सेमल पटरा 25 पीस
8	41/2023	05.12.2023	अवधेश यादव संतोष यादव	-	करम चौकठ–25 पीस करम बोटा–01 पीस आरा –01 पीस
9	34/2023	23.09.2023	सुरेन्द्र प्रसाद गंगा राम	Piyaggio Tempo Reg. No JH-08F-0615	साल चौकठ–10 पीस साल बिरान–04 पीस
10	01/2024	18.01.2024	छोटू राय उर्फ गुडू राय	-	युकेलिप्टस बोटा 19 पीस
11	10/2024	19.06.2024	कुन्दन कुमार भुईयां अमलेश कुमार उपेन्द्र कुमार	-	करम बोटा–02 पीस आरा – 02 पीस कुल्हाड़ी 01 पीस

समाचार पत्र के माध्यम से उपर्युक्त अभियुक्तों को सूचित किया जाता है कि दिनांक 09.10.2024 को 11:00 बजे पूर्वाह्न में प्राधिकृत पदाधिकारी–सह–वन प्रमण्डल पदाधिकारी, लातेहार वन प्रमण्डल के न्यायालय में स्वयं अथवा अपने अधिवक्ता के माध्यम से उपस्थित होकर अपना पक्ष प्रस्तुत करेंगे, अन्यथा यह समझा जायेगा कि आपको इस विषय में कुछ नहीं कहना है तथा एकतरफा सुनवाई करते हुए जप्त वन पदार्थ को सरकार के पक्ष में अधिहरित कर लिया जायेगा।

PR 333375 Forest, Environment and Climate Changes(24-25).D
प्राधिकृत पदाधिकारी–सह–
वन प्रमण्डल पदाधिकारी,लातेहार वन प्रमण्डल

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय
एन0 आर0ई0पी0-1, राँची

अति अल्पकालीन निविदा आमंत्रण सूचना संख्या – 23/2024–25

1. विज्ञापनदाता का नाम : कार्यपालक अभियंता, एन0आर0ई0पी0–1,राँची
2. परिमाण विपत्र बिक्री का स्थान : कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, एन0आर0ई0पी0–1,राँची
3. परिमाण विपत्र बिक्री की तिथि : दिनांक 31.08.2024 (अपराह्न 3.00 बजे तक)
4. निविदा प्राप्त करने की तिथि : दिनांक 02.09.2024 को 3.00 बजे तक।
5. निविदा प्राप्त करने का स्थान : जिला नियंत्रण कक्ष, राँची
6. निविदा खोलने की तिथि : दिनांक 03.09.2024 को 11:00 बजे पूर्वाह्न।
7. निविदा खोलने का स्थान : कार्यालय एन0आर0ई0पी0–1,राँची
8. कार्य का विस्तृत विवरणी :

क्र0 स0	योजना का नाम	प्राक्कलित राशि	अग्रधन की राशि	परिमाण विपत्र का मूल्य	कार्य समाप्ति की अविध	यंत्र संयत्र का स्वामित्व
1	ओरमांझी प्रखण्ड के ग्राम–हेन्देबेली बनलोटवा बस्ती से तालाब तक पी0सी0सी0 पथ निर्माण	17,18,400.00	34,500.00	5,000.00	तीन माह	कार्य के अनुरुप
2	ओरमांझी प्रखण्ड के ग्राम–हेन्देबेली ईमली पेड़ से जराटोली रोड नन्दू के घर तक पी0सी0सी0 पथ निर्माण	17,00,500.00	34,100.00	5,000.00	तीन माह	कार्य के अनुरुप
3	ओरमांझी प्रखण्ड के ग्राम हेन्देबेली टोला पुरन पुनिया में पी0सी0सी0 पथ निर्माण	9,50,200.00	19,100.00	1,250.00	तीन माह	कार्य के अनुरुप
4	ओरमांझी प्रखण्ड के ग्राम–हेन्देबेली टोला मनातू झारखण्ड पब्लिक स्कूल तक 500 फीट पी0सी0सी0 पथ निर्माण	8,79,400.00	17,600.00	1,250.00	तीन माह	कार्य के अनुरुप
5	ओरमांझी प्रखण्ड के ग्राम–हेन्देबेली उत्क्रमित प्राथमिक विद्यालय में दो कक्षा का निर्माण	19,94,300.00	39,900.00	5,000.00	तीन माह	कार्य के अनुरुप
6	ओरमांझी प्रखण्ड के ग्राम–चुटुपालू खीराबेरा बड़ा तालाब में सुन्दरीकरण तथा शेड का निर्माण	19,16,700.00	38,500.00	5,000.00	तीन माह	कार्य के अनुरुप
7	ओरमांझी प्रखण्ड के ग्राम–जयडीहा बरतुआ ग्राम प्रधान के घर तक 500 फीट पी0सी0सी0 पथ निर्माण	9,73,800.00	19,500.00	1,250.00	तीन माह	कार्य के अनुरुप
8	ओरमांझी प्रखण्ड के ग्राम–उकरीद नगवा टोली तालाब में गार्डवाल एवं सुन्दरीकरण कार्य	20,08,200.00	40,200.00	5,000.00	तीन माह	कार्य के अनुरुप
9	ओरमांझी प्रखण्ड के ग्राम– उकरीद प्राथमिक विद्यालय उकरीद का चहारदीवारी निर्माण	8,27,300.00	16,600.00	1,250.00	तीन माह	कार्य के अनुरुप

नोट :– 1. निविदा से सम्बन्धित अन्यशर्तें कार्यपालक अभियंता, एन0आर0ई0पी0–1, राँची के कार्यालय के सूचना पट्ट पर देखी जा सकती है।
2. इस निविदा में ग्रामीण विकास विभाग, झारखण्ड राँची अन्तर्गत निबंधित संवेदक भाग लेंगे।
3. B.O.Q लेने के समय अग्रधन की राशि (F.D) साथ मे Registration, Ucan, Character Copy लगाना अनिवार्य होगा तभी B.O.Q दिया जायगा।

PR 333419 (NREP) 24-25 (D)
कार्यपालक अभियंता
एन0आर0ई0पी0–1, राँची

खबर मन्त्र

रांची. शुक्रवार .23 अगस्त 2024

अभिव्यक्ति

epaper.khabarmantra.net

लंबित मामलों की चिंता

देश की अदालतों में करीब 5 करोड़ लंबित मामले पड़े हैं। अगर कोई जज 50 मामलों का निपटारा करता है, तो 100 नए मुकदमे दायर कर दिए जाते हैं। क्योंकि लोग अब अधिक जागरूक हैं और विवादों को निपटाने के लिए अदालतों का दरवाजा खटखटाते हैं। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की मौजूदगी में सशस्त्र बल न्यायाधिकरण के कामकाज पर एक सेमिनार में रिजिजू ने कहा कि सरकार अदालतों में लंबित मामलों को कम करने के लिए टेक्नोलॉजी का उपयोग कर रही है। कानून मंत्री किरेन रिजिजू ने कहा कि वैकल्पिक विवाद समाधान तंत्र पर नए सिरे से ध्यान देने के साथ मध्यस्थता पर प्रस्तावित कानून अदालतों में मुकदमों की संख्या को कम करने में मदद करेगा। रिजिजू ने यह भी कहा कि दूसरे देशों में लंबित मामलों और भारत के मामलों की संख्या में कोई तुलना नहीं होनी चाहिए क्योंकि हमारी समस्याएं अलग तरह की हैं। संसद के मानसून सत्र के दौरान एक सवाल के जवाब में कानून मंत्री रिजिजू ने कहा था कि देश भर की अदालतों में कुल 4.83 करोड़ से अधिक मामले लंबित हैं। निचली अदालतों में 4 करोड़ से अधिक मामले लंबित हैं, जबकि सुप्रीम कोर्ट में 72,000 से अधिक मामले लंबित हैं। अगर इन मामलों के पीछे हमारे जनबल को आंका जाए तो एक मामले के पीछे चार से छह लोग लगे होते हैं। इस प्रकार 25 से 30 करोड़ लोग इन मामलों में अपना धन और समय लगाते हैं। हमारे देश में मामलें बहुत लंबी प्रकिया से गुजरती है जिससे लोग न्याय को लेकर बहुत उम्मीद नहीं रखते। देश अपराध बढ़ने का यह भी एक बड़ा कारण है। देश में पुलिस व्यवस्था भी राज्यों की सरकारें और राजनीति सहित भ्रष्टाचार से प्रभावित है जिससे न्याय का मार्ग और अधिक कठिन हो जाता है। इसी कारण देश में हिंसा, रेप और अपराध अनियंत्रित हो रहें हैं।

बढ़ती निर्धनता

वित्त वर्ष 2022-23 की पहली तिमाही में भारतीय परिवारों की औसत आय 2021-22 की पहली तिमाही से कम रहने का अनुमान है। हालांकि इसी तुलनात्मक आधार पर उपभोक्ता रुझान में कमी आयी है। साफ तौर पर परिवारों की अपनी आर्थिक सेहत की धारणा पर उससे कहीं अधिक चोट पड़ी है, जो उनकी आमदनी पर चोट पड़ी है। यह तुलना पूरी तरह सही नहीं है क्योंकि रुझान की गणना में सभी परिवारों को समान माना जाता है, लेकिन पारिवरिक आमदनी की गणना में सभी परिवार एकसमान नहीं हैं। समृद्ध परिवारों का औसत में बड़ा हिस्सा है क्योंकि उनकी आमदनी गरीब परिवारों की तुलना में अधिक है। इसलिए अंतर का पता इन दो गणनाओं में निहित भारांश के अंतर से ज्ञात किया जा सकता है। अनुमानों की ऐसी उलझन वित्त वर्ष 2022-23 की दूसरी तिमाही की पहली तिमाही से तुलना को जटिल नहीं बनाती है। दूसरी तिमाही में औसत पारिवारिक आय पिछले साल की इसी तिमाही के मुकाबले 14 फीसदी कम थी। यह पहली तिमाही में दर्ज 33 फीसदी गिरावट की तुलना में काफी कम हुई है। हालांकि आमदनी में काफी सुधार हुआ है, लेकिन रुझान में इस अनुपात में सुधार नहीं आया। उपभोक्ता रुझान अब भी पिछले साल की इसी अवधि के मुकाबले 57 फीसदी नीचे है। यह 'सुधार' महज दो फीसदी था, जो 59 फीसदी की गिरावट से 57 फीसदी की गिरावट पर आ गया है। इस बात पर गौर किया जाना चाहिए कि आय में बढ़ोतरी के साथ रुझान आनुपातिक रूप में नहीं बढ़ता है। जब तक रुझान में सुधार नहीं आता है, तब तक मांग आय में सुधार के अनुपात में नहीं बढ़ेगी। शायद यह वित्त वर्ष 2022-23 की दूसरी तिमाही में जारी आधिकारिक राष्ट्रीय खातों के आंकड़ों में निजी अंतिम उपभोग व्यय में 2.4 फीसदी गिरावट का कारण बताता है।

विनिर्माण क्षेत्र और बदलते भारत की तस्वीर

भारत में आज भी देश की लगभग 60 प्रतिशत आबादी ग्रामीण इलाकों में निवास कर रही है और वह अपने रोजगार के लिए सामान्यतः कृषि क्षेत्र पर निर्भर है तथा देश की कुल अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र का योगदान केवल 16-18 प्रतिशत के आसपास बना रहता है। अब यदि देश की 60 प्रतिशत आबादी देश के सकल घरेलू उत्पाद में केवल 16-18 प्रतिशत तक का योगदान दे पा रही है तो स्वाभाविक रूप से इस क्षेत्र में गरीबी तो बनी ही रहेगी। परंतु, यह स्थिति अब धीरे धीरे बदल रही है क्योंकि हाल ही के वर्षों में भारत के विनिर्माण क्षेत्र का योगदान देश के सकल घरेलू उत्पाद में बढ़ता जा रहा है, जिसके चलते ग्रामीण इलाकों के नागरिक शहरी क्षेत्रों में स्थापित की जा रही विनिर्माण इकाईयों में रोजगार के नए अवसर प्राप्त करने के उद्देश्य से शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। विनिर्माण क्षेत्र में कई ऐसे नए क्षेत्र भी उभरकर सामने आए हैं जिन क्षेत्रों में भारत में उत्पादन बहुत कम मात्रा में होता रहा है। उदाहरण के लिए रक्षा क्षेत्र, दवा क्षेत्र, सेमी-कंडक्टर निर्माण क्षेत्र एवं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का क्षेत्र आदि का वर्णन यहां प्रमुख रूप से किया जा सकता है।

वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान भारत में स्वदेशी रक्षा के क्षेत्र में उत्पादन की मात्रा 1.27 लाख करोड़ रुपये की रही है जो पिछले वर्ष की तुलना में उल्लेखनीय 16.7 प्रतिशत अधिक है। यह भारत सरकार द्वारा देश में उत्पादन के विभिन्न क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से सरकारी नीतियों और सरकार के प्रयासों की प्रभावशीलता को रेखांकित करता है। वर्तमान में रक्षा के क्षेत्र में उत्पादन करने वाली इकाईयों में सरकारी क्षेत्र की कम्पनियों एवं निजी क्षेत्र की कम्पनियों द्वारा संयुक्त रूप से प्रयास किए जा रहे हैं। वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान उक्त वर्णित उत्पादन में सरकारी क्षेत्र की कम्पनियों का योगदान 79.2 प्रतिशत का रहा है जबकि निजी क्षेत्र की कम्पनियों का योगदान 20.8 प्रतिशत का रहा है। हर्ष का विषय तो यह भी है कि रक्षा के क्षेत्र में भारत में निर्मित किए जा रहे उत्पादों की अन्य देशों में भारी मांग निर्मित होती जा रही है और इन उत्पादों का निर्यात भी लगातार बढ़ रहा है। वित्तीय वर्ष 2023-24 में 21,083 करोड़ रुपये के मूल्य का निर्यात भारत से विभिन्न देशों में किया गया है जो पिछले वर्ष की तुलना में 32.5 प्रतिशत अधिक है और यह भारत में रक्षा के क्षेत्र में हुए कुल उत्पादन का लगभग 20 प्रतिशत है।

– पी सबनानी

भारतीय दवा उद्योग के वर्ष 2024 के अंत तक 6,500 करोड़ अमेरिकी डॉलर से बढ़कर वर्ष 2030 तक 13,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने की उम्मीद की जा रही है। वर्ष 2013-14 के बाद से वर्ष 2021-22 तक भारतीय दवा निर्यात में 103 प्रतिशत की वृद्धि अंकित की गई है। जेनेरिक दवाओं के वैश्विक निर्यात में भारत की हिस्सेदारी 20 प्रतिशत हो गई है, जिससे भारत को अब विश्व का फामेर्सी हब भी कहा जाने लगा है।

भारत में विनिर्माण इकाईयों की स्थापना को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हाल ही के समय में कई रणनीतिक पहल भी केंद्र सरकार द्वारा की गई है, जैसे, मजबूत नीतिगत ढांचे को विकसित करना, सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र की भागीदारी को बढ़ावा देना, अनुसंधान एवं विकास कार्यों में पर्याप्त निवेश को बढ़ावा देना, आदि शामिल हैं। स्वदेशीकरण की नीति के अनुपालन का असर भी रक्षा के क्षेत्र में उत्पादन एवं निर्यात में हो रही भारी भरकम वृद्धि के रूप में दिखाई देने लगा है। रक्षा के क्षेत्र में उपयोग होने वाले सैकड़ों उत्पादों के आयात पर रोक लगाकर इन उत्पादों का उत्पादन भारत में ही करने के निर्णय का असर भी अब धरातल पर स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा है। रक्षा के क्षेत्र में विभिन्न उत्पादों का उत्पादन भारत में ही करने की नीति को लागू करने से देश में न केवल राष्ट्रीय सुरक्षा को बढ़ावा मिलेगा बल्कि देश में आर्थिक प्रगति, तकनीकी उन्नति एवं रोजगार सृजन को भी बढ़ावा मिलेगा।

कुछ वर्ष पूर्व तक दवा निर्माण के क्षेत्र में उपयोग किए जाने वाले एपीआई (ऐक्टिव फार्मास्यूटिकल इंग्रीडीयंट) नामक कच्चे माल का लगभग पूरे तौर पर चीन से आयात किया जाता था। परंतु, कोरोना महामारी के दौरान भारत को यह अहसास हुआ कि यदि चीन इस कच्चे माल का निर्यात भारत को करना कम कर दे अथवा बंद कर दे तो भारत में तो दवा उद्योग की इकाईयों में निर्माण कार्य ही ठप्प पड़ जाएगा। इसके बाद केंद्र सरकार ने एपीआई के उत्पादन को भारत में ही करने का फैसला लिया, आज स्थितियां पूर्णतः बदल गई है एवं एपीआई का निर्माण भारत में ही किया जाने लगा है। सम्भव है कि आगे आने वाले कुछ समय में एपीआई के निर्माण के क्षेत्र में भी भारत आत्मनिर्भरता हासिल कर लेगा। भारत आज एपीआई के उत्पादन के क्षेत्र में विश्व में तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश बन गया है एवं भारत की वैश्विक एपीआई उद्योग में 8 प्रतिशत की हिस्सेदारी बन गई है। आज भारत में 500 से अधिक प्रकार के विभिन्न एपीआई का उत्पादन किया जा रहा है।

भारत में एपीआई का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि पिछले कुछ वर्षों में भारतीय दवा उद्योग में तेज गति से वृद्धि दृष्टिगोचर हुई है और आज यह देश के सकल घरेलू उत्पाद में 1.72 प्रतिशत का योगदान देने लगा है एवं दवा उद्योग आज देश में रोजगार के करोड़ों अवसर निर्मित कर रहा है। भारतीय दवा उद्योग के वर्ष 2024 के अंत तक 6,500 करोड़ अमेरिकी डॉलर से बढ़कर वर्ष 2030 तक 13,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने की उम्मीद की जा रही है। वर्ष 2013-14 के बाद से वर्ष 2021-22 तक भारतीय दवा निर्यात में 103 प्रतिशत की वृद्धि अंकित की गई है। जेनेरिक दवाओं के वैश्विक निर्यात में भारत की हिस्सेदारी 20 प्रतिशत हो गई है, जिससे भारत को अब ह्वविश्व का फामेर्सी हबह्व भी कहा जाने लगा है। केंद्र सरकार एपीआई के उत्पादन को भारत में बढ़ाने के उद्देश्य से एक समग्र एवं अनुकूल पारिस्थितिकीय तंत्र का निर्माण करने पर जोर दे रही है।

वर्ष 2020 में केंद्र सरकार ने एपीआई के घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए उत्पादन लिंक्ड प्रोत्साहन योजना के लिए 6,940 करोड़ रुपये की राशि निर्धारित की थी। 35 सक्रिय दवा सामग्री का विनिर्माण, जो एपीआई का लगभग 67 प्रतिशत है, जिसके लिए भारत की 90 प्रतिशत आयात पर निर्भरता है, वर्ष 2022 के बाद से भारत के फार्मास्यूटिकल व्यवसाय में जबरदस्त बदलाव आया है एवं भारत अब वॉल्यूम उत्पादक से एक मूल्यवान आपूर्तिकर्ता देश बन गया है। दवाई के क्षेत्र में भारत अब वैश्विक स्तर पर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने को तैयार हो गया है।

खास बात

संवैधानिक अधिकार

उमेश चतुर्वेदी

संविधान सभा में जब मतदान के अधिकार और चुनावों की चर्चा हो रही थी तो पूर्वी पंजाब से चुने हुए सदस्य ठाकुर दास भार्गव ने एक सुझाव रखा था, जिसे संविधान सभा में खारिज कर दिया गया था। उनका सुझाव था कि समान और वयस्क मतदान के अधिकार में एक शर्त जोड़ दी जानी चाहिए। वह शर्त थी साक्षरता की। तब भारत की जनसंख्या 33 करोड़ थी और संविधान सभा में अंदाजा लगाया गया था कि समान और वयस्क मतदाता के आधार पर तकरीबन 12 करोड़ मतदाता होंगे। ठाकुर दास भार्गव का सुझाव बेहतर होते हुए भी इसलिए गिर गया, क्योंकि तब भारत की साक्षरता दर महज 12 फीसदी थी।

चुनाव-दर-चुनाव भारत में जाति, धर्म, क्षेत्र की बुनियाद लगातार मजबूत होती जा रही है। जाति, धर्म और क्षेत्र की संकुचित मानसिकता को बढ़ावा देने के लिए अक्सर राजनीतिक दल सवालों के घेरे में रहते हैं। लेकिन इस सोच में ही बुनियादी खोट है। चाहे जिस भी पक्ष की राजनीति हो, वह महज दिखावे के लिए ही समाज सेवा रह गई है। वैसे व्यवस्था भी वैसी ही हो गई है। इसलिए धर्म, राजनीति और क्षेत्र के संकुचित वाद को बढ़ावा देना और उसके जरिए सत्ता की आंख पर निशाना साधना राजनीतिक दलों की दिनचर्या हो गई है। लेकिन अफसोस की बात यह है कि देश का बौद्धिक समाज और मीडिया भी चुनाव-दर-चुनाव इसी सोच के आधार पर बहसें करता है और राजनीतिक कदमों का समर्थन या विरोध करता है। लोकतंत्र की बुनियाद नागरिक हैं। लेकिन दुर्भाग्यवश चुनाव को लेकर होने वाले विमर्शों में मतदाता को सिर्फ एक उपादान यानी जरियाभर मान लिया गया है और उससे उम्मीद की जाती है कि वह जाति, धर्म और क्षेत्र को बढ़ावा देने वाली राजनीति के साथ अपनी जाति, धर्म और क्षेत्रवादी सोच के साथ जुड़े और वोट दे। बेशक सर्वोच्च न्यायालय ने जाति और धर्म की खुलेआम चर्चा पर रोक लगा रखी है। ऐसे में सवाल यह है कि जाति, धर्म और क्षेत्रवाद की घुट्टी पिए तंत्र से बनने वाली सरकार और उसकी बुनियाद समाज से ऐसे समानता आधारित समाज की उम्मीद कैसे कर सकते हैं?

सुलोचना का विश्वास

धर्म-प्रवाह

स्वामी सत्यानंदजी सरस्वती

वानर सेना को रावण के आने से दुविधा हो गयी। उन्होंने राम से पूछा कि आपने विभीषण को लंकापति बनने का वचन दिया हैं हमलोग उन्हें लंकेश कहते हैं। राम बोले आप लोग धवराइये नहीं। आप लोग धबराइये नहीं अगर रावण वास्तव में हमारे पास शरणागत हो जाता है तो दुनिया में सबसे अधिक मेरे लिये प्रिये हो जाएगा मैं उसे अवधेश बना दूंगा। अयोध्या की गद्दी में रावण को दे दूंगा। जब पालकी निकट आई उसमें से सुलोचना निकली। वह राम के सम्मुख गयी। हाथ जोड़कर परिचय दी। मैं रावण की पुत्रवधू और मेघनाथ की पत्नी हूं। उसके आप्त भरे वचन एवं दुख को देखकर राम द्रवित हो गये। उन्होंने कहा सुलोचना मैं तुम्हारे दुख से दुखी हूं। तुम्हारे पति की मृत्यु अवश्य हुई हैलेकिन अगर मेरे सारे पुण्य लेने से तुम्हारे पति जीवित होते हैं तो तुम ले लो। मैं जीवन भर के पुण्य तुम्हें देने को तैयार हूं। इससे अगर तुम्हारे पति जिंदा होत हैं तो मैं तैयार हूं। सुलोचना बोली प्रभु जैसा सुनी थी वैसा पायी लेकिन मेरे पति स्वर्ग की शोभा बढ़ा रहें हैं मैं उन्हें धरती पर वापस नहीं लाना चाहती हूं। मैं उनके मृतक शरीर को लेकर सती बनना चाहती हूं इसलिये मेरे पति का सिर मुझे मिलजाए तो मैं वापस चला जाऊं। राम ने आदेश दिया सती नारी को उसके पति का सिर सम्मान के साथ वापस किया जाए। वह सिर लेने के बाद बोली मैं जाने की आज्ञा चाहती हूं। आपको आर्शिवाद देकर जाती हूं। संसार में सत्य की विजय होती है।

(ब्रह्म विद्यालय सह आश्रम)

अंतःकरण-पावित्रय, आत्म-विश्वास और आशावादिता जीवन की महत्तम विभूति हैं ! जीवन अंतहीन संभावनाओं और अवसरों का अखंड स्रोत है ! आध्यात्मिक व्यक्ति प्रत्येक प्रतिकूल परिस्थिति में अनुकूलता और उचित अवसर ढूंढ लेता है।

– स्वामी अवधेशानंद गिरी

रोचक ट्वीट

काफी अकेला हूं ! या अकेला काफी हूं...!
नजरिया बदलिये और चमत्कार देखिए .... :

– अनुपम खेर अभिनेता

झारखण्ड में हमने पिछले 24 सालों में कई सरकारें देखी हैं, पर हमारी बहन-बेटियों के उत्थान और उन्हें सशक्त बनाने के लिए जमीनी स्तर पर काम करने का संकल्प सिर्फ हमारी सरकार ने दृढ़ता से निभाया है।

– हेमंत सोरेन, सीएम

जब भूजल विषाक्त हो जाएगा तब क्या होगा ?

सामयिक

राकेश दुबे

यह वैज्ञानिक रिपोर्ट निश्चित ही चौंकाने वाली है कि सन 2100 में लगभग 59 करोड़ लोग ऐसे जल स्रोतों पर निर्भर हो सकते हैं जो पीने योग्य पानी के लिए सबसे कड़े मानकों को पूरा नहीं करते हैं।तथ्य यह है कि दुनिया में लगभग हर चार में से एक व्यक्ति जीवित रहने के लिए पृथ्वी की सतह के नीचे मौजूद जलाशयों पर निर्भर है, क्योंकि साफ पानी की झीलों, नदियों और बांधों तक सभी लोगों की पहुंच नहीं है। वैज्ञानिकों ने चेताया है कि सदी के अंत तक लाखों लोग पानी की इस मामूली आपूर्ति से भी वंचित हो सकते हैं क्योंकि बढ़ते तापमान के कारण उथले भूजल के विषाक्त होने का खतरा है।

एक अंतरराष्ट्रीय टीम ने वैश्विक तापमान वृद्धि के विभिन्न परिदृश्यों के तहत दुनिया भर में भूजल स्रोतों के तापमान परिवर्तनों को सटीक संख्या में बताने के लिए ऊष्मा परिवहन का एक विश्व-स्तरीय मॉडल विकसित किया है। इस समय गर्मी की लहरें, बर्फ की पिघलती हुई टोपियां और समुद्रों का बढ़ता स्तर नियमित रूप से सुर्खियां बटोर रहे हैं,लेकिन हमारा ध्यान भूमि पर ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावों की तरफ नहीं जाता।

हमें भूजल पर पड़ने वाले जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के बारे में अधिक व्यापक रूप से सोचने की आवश्यकता है। यह सच है कि हमारे पैरों के नीचे की चट्टान और मिट्टी की परतें समुद्री जल की गर्मी को अवशोषित करने की क्षमता से मेल नहीं खाती हैं। फिर भी,यह आश्चर्यजनक है कि भूजल के गर्म होने के परिणामों पर इतना कम ध्यान दिया गया है, खासकर जब पानी की कमी और रिचार्ज (पुनर्भरण) दर पर इतनी अधिक चर्चा होती है। सतह के ठीक नीचे छिद्रपूर्ण चट्टानों के भीतर फंसा पानी घुले हुए खनिजों, प्रदूषकों और संभावित रोगजनकों से भरा हो सकता है। बहुत बड़ी आबादी के समक्ष इस प्रदूषित जल पर निर्भर रहने के सिवाय और कोई विकल्प नहीं है। इन भूमिगत जलाशयों को सिर्फ.एक या दो डिग्री गर्म करने से परिणाम भयावह हो सकते हैं। इससे पर्यावरण में ऑक्सीजन की कमी हो सकती है और खतरनाक बैक्टीरिया के विकास को बढ़ावा मिल सकता है,या आर्सेनिक और मैंगनीज जैसी भारी धातुओं की अत्यधिक मात्रा पानी मे घुल सकती है।

दुनिया मे पहले से ही लगभग तीन करोड़ लोग ऐसे क्षेत्रों में रह रहे हैं,जहां भूजल पीने के पानी के सख्त दिशा-निर्देशों में निर्धारित तापमान से ज्यादा गर्म है। इसका मतलब है कि बिना ट्रीटमेंट के वहां का पानी पीना सुरक्षित नहीं है। आसपास पर्याप्त आकार के सतही जलाशयों वाली आबादी के लिए भी गर्म भूजल उन प्रमुख कारकों को बदल सकता है जो पानी को मानव उपभोग के लिए सुरक्षित रखते हैं। 7.7 करोड़ से 18.8 करोड़ लोगों के ऐसे क्षेत्र में रहने का अनुमान है जहां भूजल 2100 तक पीने योग्य मानकों को पूरा नहीं कर पाएगा। इस अध्ययन के नतीजे बताते हैं कि भूजल की रक्षा के लिए कार्रवाई करना और भूजल पर जलवायु परिवर्तन के नकारात्मक प्रभाव का मुकाबला करने के लिए स्थायी समाधान खोजना कितना आवश्यक है। इस बीच, जलवायु परिवर्तन से संबंधित एक अन्य अध्ययन में वैज्ञानिकों ने दुनिया में मीथेन उत्सर्जन में वृद्धि पर चिंता व्यक्त की है। रिकॉर्ड तोड़ गर्मी, लोगों की गिरती सेहत, गायब होती बर्फ की चादरों और अप्रत्याशित मौसम के रूप में जलवायु परिवर्तन की बड़ी चेतावनियां हमें लगातार मिल रही हैं। फिर भी हम वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों की बढ़ती मात्रा को उत्सर्जित कर रहे हैं। इससे हमारा अस्तित्व खतरे में पड़ रहा है।

पूर्वोत्तर राज्यों के लिए बड़ा खतरा बना बांग्लादेश

समस्या

अभिषेक अग्रवाल

भारत के पूर्वोत्तर राज्य मणिपुर, पड़ोसी देश म्यांमार और बांग्लादेश की घटनायें एक-दूसरे से संबंधित है। यह सभी घटनायें एक बड़े षड्यंत्र का हिस्सा है। अमेरिकी सरकार ने बांग्लादेश के राजनीतिक मामलों में हस्तक्षेप किया, लोकतंत्र और स्वतंत्र चुनाव को बढ़ावा देने की आड़ में कई सारे प्रतिबंध लगाए। यह कार्रवाई बांग्लादेश में राजनीतिक परिदृश्य को प्रभावित करने का एक रणनीतिक हिस्सा है। बांग्लादेशी अधिकारियों ने दावा किया है कि उनके पास बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) के कार्यवाहक प्रमुख और खालिदा जिया के बेटे तारिक रहमान और सऊदी अरब में आईएसआई अधिकारियों के बीच बैठकों के सबूत हैं।

बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना ने भी दावा किया था कि बांग्लादेश और म्यांमार के कुछ हिस्सों को काटकर एक नया ईसाई देश बनाने की साजिश रची जा रही है। अमेरिका उनसे एक हवाई पट्टी बनाने की मांग भी कर रहा था। अमेरिका ने बांग्लादेश नेशनल पार्टी और उसके सहयोगी जमात-ए-इस्लामी को भी समर्थन दिया था। जमात-ए-इस्लामी, बांग्लादेश बनने के बाद से ही कई तरह की अस्थिर गतिविधियों में शामिल रहा है और कहीं ना कहीं पाकिस्तान का समर्थक भी है।

बांग्लादेश की सबसे बड़ी समस्या अस्थिरता और अराजकता रही है। बांग्लादेश बनने के बाद से कभी भी सरकार पूर्ण मजबूती के साथ स्थिरता से नहीं चल पाई। मुजीबुर रहमान ने भारत के सहयोग से मुक्ति वाहिनी बनाई और बांग्लादेश का गठन किया। परंतु सेना में गुटबाजी और महत्वाकांक्षाएं होना के कारण वह तीन साल बाद ही लगभग पूरे परिवार सहित सेना द्वारा मार दिए गए। मुजीबुर्रहमान की दो बेटियां शेख हसीना और उनकी बहन शेख रिहाना ही बचीं, जो उस समय देश से बाहर थीं। जिया उर रहमान मिलिट्री कमांडर थे, जिसने शेख मुजीबुर्रहमान का आजादी के संग्राम मे साथ दिया। शेख मुजीब की हत्या के बाद उन्होंने देश का शासन संभाला। वह ही शेख हसीना को बांग्लादेश वापस लेकर आया और उसे राजनीति में स्थापित किया। बाद में उसने अपनी पत्नी बेगम खालिदा जिया को भी राजनीति में उतार दिया और 1977 में राष्ट्रपति बन बैठा और चार साल बाद 1981 में उनकी भी सैन्य तख्तापलट में हत्या कर दी गई। इसके बाद बांग्लादेश के सैन्य प्रमुख मोहम्मद इरशाद ने देश की सत्ता पर कब्जा कर लिया। इरशाद को हटाने के लिए हसीना और जिया दोनों साथ आईं और जीत भी हासिल की, परंतु इरशाद के हटने के बाद वे एक दूसरे के खिलाफ हो गईं। खालिदा को शेख हसीना के खिलाफ करने में उस समय सीआईए का बहुत बड़ा हाथ था। वहाँ के कट्टर मुस्लिमों का एक धड़ा पाकिस्तान समर्थक है, जो भारत विरोधी हैं। वहाँ पर अरब देशों से पेट्रो-डॉलर फंडिंग वाले कट्टरपंथी तब्लीगियों का भी अच्छा प्रभाव बनता जा रहा है। जमात-ए-इस्लामी भी विदेशी फंडिंग पाती है, साथ ही वह आईएसआई और सीआईए के संपर्क सहयोग में भी है।

वर्तमान में केवल शेख हसीना ही भारत समर्थक और सहयोगी हैं और अमेरिकन डीप स्टेट को नापसंद है। अब अंतरिम सरकार प्रमुख मोहम्मद यूनुस को बनाया गया है, जिन्होंने 1984 में माइक्रोफाइनेंस स्कीम के नाम पर गरीब बांग्लादेशी नागरिकों को विदेशी पैसे बांटकर उनका दोहन किया। बांग्लादेश की गरीबी में कोई सुधार नही आया, परंतु विदेशी धन के माध्यम से बांग्लादेश के लोगों और अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करने का प्रयास किया, जिसकी शेख हसीना प्रबल विरोधी है। इन पर टैक्स चोरी और अत्यधिक ब्याज से लोगों के दोहन के आरोप लगते रहे, साथ ही यह विदेशी प्रतिनिधित्व के प्रबल समर्थक हैं।म्यांमार का संघर्ष राज्य बनाने वाले बर्मी बहुसंख्यकों व अल्पसंख्यकों के मध्य है। अल्पसंख्यक मुख्य रूप से सीमावर्ती क्षेत्रों में स्थित हैं, जबकि बर्मी देश के मध्य और दक्षिणी हिस्सों पर हैं। कई अल्पसंख्यक समूह प्राकृतिक संसाधनों, जुए, ड्रग्स या विदेशी सहायता (खासकर मिशनरीज) के माध्यम से खुद को बनाए रखते हैं।

कॉर्टून वर्ल्ड

लेटर टू एडिटर

भारत की छवि

अमेरिका के पेंटागन ने हाल ही में कहा है कि अब भारत के अधिकारियों के अमेरिका आने-जाने पर कोई कागजी कार्रवाई या फिर कड़ी छानबीन नहीं की जाएगी। दरअसल इसकी घोषणा अमेरिका ने तब की जब भारत अपने आजादी के 78 साल होने पर आजादी का महोत्सव मना रहा है। ज्ञात हो कि अमेरिका यह दर्जा अपने सबसे करीबी देशों को देता है। –अनिल सिंह, रांची

रेवड़ी कल्चर के खतरे

लगभग सभी राजनीतिक दल चुनाव के समय सत्ता पाने के लिए लोकलुभावन मुफ्त योजनाओं का सहारा लेते हैं जिनका राजकोष पर विपरीत असर पड़ता है। कोर्ट के सख्त रुख के बाद देश में राजनीतिक दलों के बीच एक बहस छिड़ गई है कि कौन-सी घोषणा रेवड़ी कल्चर के अन्तर्गत आती है। निश्चित तौर पर यह एक गंभीर विषय है।

–सचिन जैन, जमशेदपुर

स्पीड न्यूज

बिनोद भारती के निधन पर शोक

भुरकुंडा (रामगढ़)। पटेलनगर भुरकुंडा निवासी रामगढ़ चैंबर ऑफ कॉमर्स के आजीवन सदस्य सह व्याख्याता बिनोद भारती के आकस्मिक निधन पर चेंबर के सदस्यों ने गहरा शोक व्यक्त किया है। साथ ही इस दुख की घड़ी में उनके परिजनों को सहन शक्ति प्रदान करने की भगवान कामना की है। इस दौरान चैम्बर ऑफ कॉमर्स के लोगों ने भुरकुंडा में दिवंगत आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन धारण कर ईश्वर से प्रार्थना की। शोक संवेदना व्यक्त करने वालो में बिनय कुमार सिंह, दिलीप अग्रवाल, अशोक सिन्हा, परमजीत सिंह धामी, प्रेम रंजन सिंह, अशोक मनकसिया, शिवकुमार गुप्ता, जय प्रकाश सिंह, अशोक कुमार, विजय वर्णवाल, श्याम किशोर सिंह, अजित सिंह, अशोक सोनी, शैलेन्द्र सिंह, लालमुनि ठाकुर, जीवन गुप्ता, सीटू सलूजा आदि शामिल हैं।

बरका-सयाल के कई समस्याओं पर चर्चा

भुरकुंडा (रामगढ़)। सीसीएल हेडक्वार्टर रांची में गुरूवार को अखिल झारखंड कोयला श्रमिक संघ के प्रतिनिधियों और सीसीएल प्रबंधन की बैठक हुई। इसकी अध्यक्षता डायरेक्ट पर्सनल हर्षनाथ मिश्र ने की। बैठक में यूनियन की ओर से केंद्रीय अध्यक्ष रोशन लाल चौधरी एवं केंद्रीय महासचिव सतीश सिन्हा उपस्थित थे। यूनियन प्रतिनिधियों ने बरका-सयाल क्षेत्र के समस्याओं पर चर्चा करते हुए क्षेत्रीय अस्पताल भुरकुंडा में पोर्टेबल एक्स-रे मशीन लगाने, क्षेत्र के सभी फिल्टर प्लांटों का साफ-सफाई एवं मरमती कराने, नियमित रूप से शुद्ध पेय जलापूर्ति करने, सभी कार्यालय के सभी विभागों में कंप्यूटर उपलब्ध कराने, चुनाव के ड्यूटी में गए कर्मचारियों का संडे का पैसा जल्द भुगतान करने सहित विषयों से प्रबंधन को आकृष्ट कराया। सभी मुद्दों पर प्रबंधन ने कहा कि जल्द से जल्द इन सभी समस्याओं का समाधान करा दिया जाएगा।

लोहा चोरी करने वाले दो गिरफ्तार

रामगढ़। 22 अगस्त को भुचूगडीह रेलवे लाईन एंव सीसीएल के बंद खादानों तथा भारत माला परियोजना सड़क निर्माण कार्य में चोरो द्वारा गैस कटर एंव अन्य सामग्रियों से विजली पोल एवं ढलाई में प्रयुक्त होने वाले लोहे का प्लेट एवं लोहे के अन्य समानों को काटकर पिकअप में लोड कर चोरी लगातार की जा रही थी। इस संदर्भ में रजरप्पा थाना मामला दर्ज किया गया था। एसपी ने कांड के उद्भेदन, घटना में शामिल अभियुक्तों की गिरफ्तारी एवं चोरी गये समानों की बरामदगी हेतु अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी रामगढ के नेतृत्व में टीम का गठन किया गया। एसडीपीओ परमेश्वर प्रसाद ने बताया कि टीम द्वारा विभिन्न संदिग्ध स्थानों पर छापामारी कर दो मनौवर आलम, अरगडा बुध बाजार और सलमान अंसारी, रजरप्पा को गिरफ्तार किया। एक बिना नम्बर के सफेद रंग का पिकअप वाहन जिस पर लदे लोहा, चोरी करने में प्रयुक्त गैस कटर, ऑक्सीजन सेलेंडर, चेन कुपी आदि समानों के साथ रेलवे की पटरी में लगने वाले आयरन स्लीपर 10 पीस (05 जोडा) एवं हाउस पाईप के साथ कटर सेट बरामद किया।

फरार अभियुक्त के घर चिपका इश्तेहार

भुरकुंडा (रामगढ़)। बासल थाना क्षेत्र के आर्म्स एक्ट के अप्राथमिकी अभियुक्त राजेश वर्मा, पिता प्रयाग राम ग्राम बादाम, थाना बड़कागांव, जिला हजारीबाग के घर पर इश्तेहार चसपाया है। बासल थाना प्रभारी कैलाश कुमार ने बताया कि फरार आरोपी माही रेस्टोरेंट के मालिक रोशन साव की हत्या में संलिप्त था और वह फरार चल रहा है। पुलिस उसके विरुद्ध कुर्की-जब्ती की कारवाई करेगी।

पतरातु प्रखंड के दो सड़कें बनेंगी

भुरकुंडा (रामगढ़)। बड़कागांव विधायक अंबा प्रसाद के प्रयास से 4 करोड़ 47 लाख 79 हजार 300 की लागत से बड़कागांव विधानसभा क्षेत्र के पतरातु प्रखंड के दो मुख्य सड़कों का मुख्यमंत्री ग्राम सड़क योजना अंतर्गत ग्रामीण कार्य विभाग से प्रशासनिक स्वीकृति मिली है। पालू पंचायत के ग्राम टोकीसुद जीभीके बाउंड्री सरना से लमकीटांड़ खेल मैदान मुख्य पथ एवं बबलू मांझी के घर से चोरगढ़ा तक 1.700 किमी पथ का निर्माण कार्य लगभग 2 करोड़ 16 लाख की लागत से और ग्राम टेरपा 52 नंबर पथ से ढोढ़ी सरना देव स्थल एवं चोरगढ़ा पुल से रखोताटांड़ तक लगभग 2.2 किलोमीटर पथ निर्माण कार्य लगभग 2 करोड़ 31 लाख की लागत से होगा। विधायक प्रतिनिधि कृष्णा सिंह ने बताया कि दोनों सड़कों का जल्द ही निविदा (टेंडर) निकलेगा। इसके बाद कार्य शुरू हो जायेगा। उन्होंने कहा कि विधायक अंबा प्रसाद द्वारा बड़कागांव विधानसभा क्षेत्र में विकास की नई गाथा लिखी जा रही है।

उज्जवला फाउंडेशन ने बांटा खाद्य सामग्री

कुजू। मोतीराम कॉम्प्लेक्स बोंगावार में गुरूवार को उज्जवला फाउंडेशन की बैठक हुई। इसकी अध्यक्षता फाउंडेशन अध्यक्ष सह भाजपा ओबीसी मोर्चा के रांची महानगर प्रभारी जगेश्वर प्रजापति ने किया। बैठक के दौरान सदस्यों ने फाउंडेशन के विकास के लिए चर्चा किया। प्रजापति ने कहा कि मेरे पिछले कार्यकाल को देखते हुए भाजपा के वरीय पदाधिकारियों द्वारा मुझे रांची महानगर का जिला प्रभारी मनोनीत किया है। उन्होंने उज्जवला फाउंडेशन आने वाले समय में काफी आगे जायेगा। साथ ही इससे जुड़े महिला सदस्यों को काफी सुविधाएं प्राप्त होगी। उन्होंने फाउंडेशन के 51 सदस्यों के बीच खाद्य सामग्री का वितरण किया। मौके पर सुखदेव सोनी, प्रकाश केशरी, प्रमोद यादव, आशा कुमारी, शांति देवी, मनसरी देवी, कौशल्या देवी,रानी, उषा, मुनिया, मंजू, प्रियंका आदि शामिल थे।

फरार कैदी शाहिद गिरफ्तार

हवलदार चौहान हेंब्रम हत्या के आरोपी को एसआइटी ने दिल्ली में दबोचा

खबर मन्त्र संवाददाता

हजारीबाग। जिले के शेख भिखारी मेडिकल कॉलेज अस्पताल में सुरक्षाकर्मी हवलदार चौहान हेंब्रम की निर्मम हत्या के बाद फरार हुए सजायाफ्ता कैदी शाहिद अंसारी को आखिरकार पुलिस ने धर दबोचा है। हजारीबाग एसपी अरविंद कुमार सिंह के नेतृत्व में गठित टेक्निकल टीम ने बड़ी मशक्कत के बाद बुधवार सुबह दिल्ली से शाहिद अंसारी को गिरफ्तार किया। इस गिरफ्तारी के लिए एसआईटी (विशेष जांच टीम) को लंबी और जटिल प्रक्रिया से गुजरना पड़ा। शाहिद अंसारी की गिरफ्तारी से क्षेत्र में राहत की सांस ली गई है, वहीं पुलिस की तत्परता की सराहना भी की जा रही है।

शाहिद अंसारी उम्रकैद की सजा काट रहा था, जिसे हाल ही में धनबाद जेल से हजारीबाग सेंट्रल जेल शिफ्ट किया गया था। स्वास्थ्य बिगड़ने पर उसे हजारीबाग के शेख भिखारी मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भर्ती कराया गया था। अस्पताल में इलाज के दौरान शाहिद ने अस्पताल के सुरक्षा में तैनात हवलदार चौहान हेंब्रम की लोहे की रॉड से हमला कर हत्या कर दी और फरार हो गया। घटना के तुरंत बाद हजारीबाग एसपी अरविंद कुमार सिंह, एसडीओ समेत अन्य अधिकारियों ने घटनास्थल का दौरा किया और विस्तृत जांच शुरू की. फॉरेंसिक टीम को भी घटनास्थल पर बुलाया गया था ताकि सभी सबूतों का संकलन किया जा सके। शाहिद अंसारी की फरारी के बाद हजारीबाग पुलिस पर भारी दबाव था। इसे देखते हुए एसपी अरविंद कुमार सिंह ने एक विशेष टीम का गठन किया जिसमें टेक्निकल और इंटेलिजेंस यूनिट्स को शामिल किया गया। शाहिद की तलाश में पुलिस ने कई राज्यों में छापेमारी की और अंततः दिल्ली से उसकी गिरफ्तारी संभव हो पाई। एसआईटी ने शाहिद को पकड़ने के लिए टेक्नोलॉजी और मानव संसाधनों का पूरी तरह से उपयोग किया। शाहिद की गिरफ्तारी के लिए पुलिस ने कई मुखबिरों की मदद भी ली। आखिरकार, बुधवार की सुबह शाहिद को दिल्ली से गिरफ्तार कर लिया गया। शाहिद अंसारी की गिरफ्तारी के बाद पुलिस अब उसकी फरारी के दौरान की गतिविधियों और संभावित सहयोगियों की जांच कर रही है। पुलिस का मानना है कि शाहिद को फरार होने में स्थानीय और बाहरी दोनों सहयोग मिल सकते हैं। पुलिस की टीम अब शाहिद से पूछताछ कर उसके सभी संपर्कों का खुलासा करने का प्रयास कर रही है। हवलदार चौहान हेंब्रम की हत्या ने हजारीबाग के लोगों में गुस्सा और डर का माहौल पैदा कर दिया था। शाहिद की गिरफ्तारी के बाद स्थानीय लोगों ने राहत की सांस ली है और पुलिस की सक्रियता की प्रशंसा की है। हजारीबाग एसपी अरविंद कुमार सिंह और उनकी टीम को अपराधी को पकड़ने के लिए मिले समर्थन और सहयोग का श्रेय दिया जा रहा है।

सांसद ने मंडईखुर्द वासियों से किया वादा निभाया, नाली निर्माण का किया शिलान्यास

ग्रामीणों को आवागमन और परिवहन में बड़ी सहूलियत होगी : मनीष जायसवाल

खबर मन्त्र संवाददाता

हजारीबाग। लोकसभा क्षेत्र के सदर विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत सदर प्रखंड स्थित ग्राम पंचायत मंडई खुर्द के ग्रामीणों का सड़क में नाली नहीं होने के कारण बरसात में आवागमन दुभर था। इस समस्या को करीब से देखने के बाद सांसद मनीष जायसवाल ने मंडई खुर्द ग्राम वासियों से वादा किया था कि नाली निर्माण जल्द होगा।

गुरूवार को सांसद मनीष जायसवाल ने कसियाडीह मोड़ पर भारत के संविधान निर्माता बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया। उसके बाद हजारीबाग जिले के जिला परिषद अध्यक्ष उमेश प्रसाद मेहता और मुखिया उषा देवी सहित अन्य लोगों संग मिलकर यहां डीएमएफटी मद की राशि करीब 01 करोड़ 57 लाख रुपए की राशि से मंडईखूर्द ग्राम बड़कीखोरी मंडई में मनोज यादव के घर से न्यू पंचायत भवन मंडई होते हुए अंबेडकर चौक तक नाली निर्माण का शिलान्यास किया। इस दौरान उन्होंने ग्रामीणों की अन्य समस्यों से भी रूबरू हुए।

सांसद मनीष जायसवाल ने बताया कि करीब डेढ़ किमी लम्बी दूरी के नाली का निर्माण यहां होगा। जिससे ग्रामीणों को आवागमन और परिवहन में बड़ी सहूलियत होगी। मंडई खुर्द क्षेत्र के राणा मोहल्ला, सुमन नगर, गौरी मोहल्ला, महतो मोहल्ला, कसियाडीह की जनता को सीधे लाभ मिलेगा। सांसद मनीष जायसवाल ने मंडई खुर्द ग्राम वासियों से गुणवत्ता नाली निर्माण के लिए संवेदनशील रहने और स्टीमेट के अनुरुप संवेदक से गुणवत्ता कार्य करवाने का अपील भी की।

मौके पर भाजपा नेता विजय कुमार, अनिल पांडेय, महेश प्रसाद, राजकुमार महतो, रोहित कुशवाहा, लीलो महतो, यमुना यादव, शंकर दास,संजय यादव, रामचंद्र साव, दशरथ साव, युगल साव, हरदयाल साव, सीता राम साव, नरेश साव, राजू राम,भोला महतो, विजय साव, महेश साव, रंजन चौधरी सहित अन्य गणमान्य लोग मौजूद थे।

कैरम प्रतियोगिता में 8वीं बार चैंपियन बने शशि मोहन महतो

भुरकुंडा (रामगढ़)। सीसीएल इंटर एरिया शतरंज और कैरम प्रतियोगिता में भुरकुंडा सौंदा डी निवासी सह मगध परियोजना में सीसीएलकर्मी शशि मोहन महतो ने लगातार आठवीं बार सीसीएल में चैंपियन बनकर पूरे क्षेत्र का मान बढ़ाया है। शशि मोहन महतो को सीसीएल के स्पोर्ट्स मैनेजर आदिल हुसैन, ढ़ोरी क्षेत्र के महाप्रबंधक रंजय कुमार सिन्हा, स्टॉफ ऑफिसर प्रतुल कुमार, स्टॉफ ऑफिसर बीएंडके के राजीव कुमार ने ट्रॉफी देकर सम्मानित करते हुए कहा कि सीसीएल उत्पादन के साथ-साथ खिलाड़ियों की प्रतिभा निखारने का भी काम बखूबी करती रही है, जो आगे भी जारी रहेगा।

खैरा करमा उच्च विद्यालय के किचन शेड में अनिमियता की जांच करने पहुंचे अधिकारी

टाटीझरिया । खैरा पंचायत के उत्क्रमित उच्च विद्यालय खैरा करमा परिसर में गुरुवार को डीएमफ्टी से 24 लाख की लागत से बन रहे किचन शेड निर्माण को लेकर अनिमियत्ता की खबरमंत्र हिंदी दैनिक अखबार में 13 अगस्त को प्रकाशित खबर को लेकर डीडीसी विभाग से अनिमियता की खबर पर संज्ञान लेते हुए जांच अधिकारी उक्त स्थल पर किचन सेड निर्माण को जांच करने आए तो ग्रामीणों द्वारा लगाए गए संवेदक पर आरोपों को सत्य पाया। उन्होंने मौजूद ग्रामीणों में अरविंद केशरी, हेमन कुमार , राजेन्द्र रजक,शंकर वर्मा, भुनेश्वर पांडेय ,प्रेम प्रकाश,हरेंद्र प्रसाद,बालेश्वर महतो,मुखिया प्रतिनिधि मिथलेश वर्मा समेत अन्य कई ग्रामीण,जनप्रतिनिधियों में टाटीझरिया जीप सदस्य रामप्रसाद उर्फ कंपनी , खैरा पंचायत की स्थानीय मुखिया कुमारी माधुरी को आश्वासन दिया और कहा की जो पूर्व में अनिमियता किचन शेड निर्माण में बरती गई है उनमें सुधार किया जायेगा। वही ग्रामीणों ने जांच अधिकारियों को खराब और जमा कोणार्क सीमेंट को किचन सेड निर्माण किए जाने को लेकर सीमेंट की बोरा को भी दिखाया। और कहा की जब हम ग्रामीणों ने विरोध किया तब संवेदक द्वारा पीएससी सीमेंट को बहुत ही मुश्किल से लाया गया। पंचायत की मुखिया कुमारी माधुरी ने बताया कि हमारे पंचायत क्षेत्र के दो गांव के विद्यालयों में डिएमफ्टी विभाग द्वारा किचन शेड निर्माण योजना आया था। जिसमे एक तो सिमराढाव गांव के विद्यालय था जहां संवेदक द्वारा बेहतर तरीके से गुणवत्ता पूर्ण ईट, बालु,सीमेंट , छड़ का उपयोग किया गया जहां कोई भी ग्रामीणों द्वारा शिकवा शिकायते सुनने देखने को नहीं मिला । लेकिन वही बात की जाय खैरा करमा उच्च विद्यालय परिसर में किचन सेड निर्माण की तो यहां संवेदक द्वारा निर्माण कार्य में अनिमीयता की लगातार शिकवा शिकायते ग्रामीणों द्वारा सुनने को एक जन प्रतिनिधि के नाते मुझे मिला तो मैं एक प्रतिनिधी होने के नाते कार्य स्थल पर निरीक्षण पहुंची तो देखा की उक्त स्थल पर कार्यों में अनिमियता बरती जा रही है।

खबर मन्त्र के खबर का असर

संविधान की रक्षा के लिए लड़ाई जारी रहेगी : बेदिया

भुरकुंडा (रामगढ़)। झारखंड मुक्ति मोर्चा के केंद्रीय सचिव सह झारखंड राज्य परिवहन प्राधिकार समिति सदस्य संजीव बेदिया ने र्वोच्च न्यायालय के एससी-एसटी आरक्षण पर दिए गए निर्णय का विरोध करते हुए भारत बंद का नैतिक समर्थन किया है। उन्होंने 21 की बंदी की सफलता लोगों के प्रति आभार जताते हुए इसे ऐतिहासिक बताया। बेदिया ने कहा कि सभी एकजुटता बनाए रखने की अपील करते हुए कहा कि संविधान और सामाजिक न्याय की रक्षा के लिए हमारी लड़ाई जारी रहेगी।

मालूम हो कि उच्चतम न्यायालय द्वारा प्रस्तावित अनुसूचित जाति-जनजाति आरक्षण में वर्गीकरण के विरोध में बुधवार को उरीमारी में बंदी का असर शत प्रतिशत रहा। दुकानें बंद रही और कोयले का ट्रांसपोर्टिंग भी पूरी तरह से ठप रहा। इसके कारण सीसीएल को लाखो रुपए का नुकसान होने का अनुमान है। बंदी को सफल बनाने में यूसीडब्ल्यू के क्षेत्रीय सचिव विंध्याचल बेदिया, आरसीएमयू के क्षेत्रीय सचिव राजू यादव, दसई मांझी, मुखिया चरका करमाली सहित दर्जनों लोगों का योगदान रहा।

खाद दुकानों का औचक निरीक्षण करें : उपायुक्त

▸▸ **पशुपालन, गव्य विकास, मत्स्य पालन से जुड़े लाभुकों को केसीसी कार्ड दें**

खबर मन्त्र संवाददाता

रामगढ़। कृषि एवं अन्य संबद्ध विभागों द्वारा किए जा रहे कार्यों को लेकर गुरुवार को उपायुक्त चंदन कुमार की अध्यक्षता में बैठक हुई। उपायुक्त ने इस वर्ष जिले के अलग-अलग क्षेत्र में हुई वर्षापात सहित कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आत्मा) द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं की जानकारी परियोजना निदेशक आत्मा से ली गई । वहीं धान, मक्का, दलहन, तिलहन, मोटा अनाज सहित अन्य फसलों के अच्छादन के तहत प्रखंडवार अब तक हुए कार्यों की समीक्षा कर उपायुक्त ने लक्ष्य के अनुरूप प्राप्ति करने का निर्देश दिया। जिले में फर्टिलाइजर की उपलब्धता की समीक्षा के क्रम में उपायुक्त ने किसी भी परिस्थिति में निर्धारित दर से अधिक दर पर फर्टिलाइजर्स की बिक्री अथवा कालाबाजारी जिले में न होने देना सुनिश्चित करने का निर्देश दिया । वहीं, उन्होंने इस संबंध में कार्यपालक दंडाधिकारियों, प्रखंड विकास पदाधिकारियों, सहायक कृषि पदाधिकारियों सहित अन्य संबंधित अधिकारियों को जिले के अलग-अलग क्षेत्र में फर्टिलाइजर विक्रेताओं की दुकानों का औचक निरीक्षण करने का निर्देश दिया। बीज वितरण कार्यों की समीक्षा के क्रम में उपायुक्त ने रामगढ़ जिला को बीज उत्पादन की दिशा में अग्रणी बनाने को लेकर सभी संबंधित अधिकारियों के साथ चर्चा के क्रम में अगले एक सप्ताह में विस्तृत कार्य योजना तैयार कर जिला स्तर पर उपलब्ध कराने का निर्देश दिया वहीं उन्होंने इस कार्य में कृषि विज्ञान केंद्र के साथ समन्वय करने तथा आगामी रबी मौसम के पूर्व जिला स्तर पर पर्याप्त मात्रा में बीज उत्पादन करने तथा अन्य जिलों व राज्यों को बीज उपलब्ध कराने की दिशा में जिला को अग्रसर बनाने के संबंध में आवश्यक निर्देश दिए। उपायुक्त के द्वारा बिरसा प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत चल रहे कार्यों की समीक्षा के क्रम में जिला सहकारिता पदाधिकारी सहित अन्य संबंधित अधिकारियों को योजना पर विशेष ध्यान देते हुए 31 अगस्त तक अभियान मोड में योग्य लाभुकों को योजना से जोड़ने का निर्देश दिया । किसानों को किसान क्रेडिट कार्ड उपलब्ध कराने के तहत हो रहे कार्यों की समीक्षा के क्रम में उपायुक्त ने कृषि के साथ-साथ पशुपालन, मत्स्य पालन से जुड़े किसानों को किसान क्रेडिट कार्ड के लाभ से आच्छादित करने का निर्देश दिया वहीं उन्होंने मुख्यमंत्री पशुधन विकास योजना सहित पशुपालन से जुड़ी अन्य योजनाओं के लाभुकों को केसीसी उपलब्ध कराने को लेकर जिला अग्रणी प्रबंधक सहित अन्य संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए।

एक नजर में

सड़क दुर्घटना में महिला की मौत, पति समेत दो बच्चे घायल,ग्रामीणों ने किया एनएच जाम

मनोज यादव के पहल पर शुरू हुआ आवागमन

बरही। शिवपुर गडलाही मोड़ के पास भीषण सड़क दुर्घटना में 28 वर्षीय महिला रानी कुमारी की मौत हो गई, जबकि पति आदित्य कुमार ठाकुर और दोनों बेटियां अनुष्का कुमारी और अरियांशी कुमारी गंभीर रूप से घायल हो गईं। घायल परिवार को तुरंत इलाज के लिए बरही अनुमंडल अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां एक की हालत नाजुक बताई जा रही है। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि रानी कुमारी, जो बिहारी पदमा गांव की रहने वाली थी, अपने मायके करियातपुर में रक्षाबंधन मनाने आई थी। त्योहार के बाद वहपति आदित्य ठाकुर और बच्चों के साथ मोटरसाइकिल संख्या जेएच 12 एल 3225 से ससुराल लौट रही थी। तभी गडलाही मोड़ के पास एक अज्ञात वाहन ने मोटरसाइकिल को जोरदार टक्कर मार दी। रानी कुमारी की मौत हो गई, जबकि पति और दोनों बेटियां बुरी तरह घायल हो गईं। घटना के बाद स्थानीय ग्रामीणों ने एनएच 2 को जाम कर दिया, जिससे आवागमन पूरी तरह ठप हो गया। घटना की सूचना मिलते ही बरही पुलिस प्रशासन मौके पर पहुंची और ग्रामीणों को समझाने का प्रयास किया। पूर्व विधायक मनोज यादव ने मौके पर पहुंचकर परिजनों से मुलाकात की। उन्होंने एनएच अधिकारियों से बातचीत कर हिट एंड रन मामले में मुआवजा दिलाने का आश्वासन दिया। पूर्व विधायक के हस्तक्षेप के बाद ही ग्रामीणों ने जाम हटाने पर सहमति दी और आवागमन पुनः शुरू हो सका।

मनोज यादव के प्रयास से लगा ट्रांसफॉर्मर

बरही। पंचायत बेंदगी रामनगर टोला के ग्रामीणों ने हाल ही में 100 केवीए के ट्रांसफार्मर के जलने की सूचना पूर्व विधायक मनोज कुमार यादव को दी। ग्रामीणों की समस्या को गंभीरता से लेते हुए पूर्व विधायक मनोज यादव ने तुरंत बिजली विभाग के अधीक्षण अभियंता से संपर्क साधा और मिलकर उनसे बात की। उनके प्रयास से महज 24 घंटे के अंदर नया 100 केवीए का ट्रांसफार्मर गांव में उपलब्ध कराया गया। ट्रांसफार्मर का उदघाटन पूर्व विधायक मनोज कुमार यादव के उपस्थिति में जिला परिषद सदस्य प्रीति गुप्ता ने किया। ग्रामीणों ने पूर्व विधायक की सराहना की। ग्रामीणों ने इस त्वरित समाधान के लिए पूर्व विधायक का आभार व्यक्त किया। पूर्व विधायक मनोज यादव ने कहा कि जनसेवा उनकी पहली प्राथमिकता है।

पदमा में सिपाही के लिए 784 अभ्यर्थी सफल

पदमा। ब्लॉक सड़क पर उत्पाद विभाग के लिए सिपाही पद के लिए दौड़ हो रही है।उत्पाद विभाग के 583 पदों पर नियुक्ति के लिए 73405 अभ्यर्थी पदमा प्रखंड मुख्यालय के सड़क पर दौड़ लगाकर अपनी किस्मत आजमाएंगे। पदमा बहाली केंद्र पर 73405 अभ्यर्थी का दौड़ होना है। गुरुवार को दो हजार अभ्यार्थी को बुलाया गया जिसमें 860अभ्यर्थियों ने सुबह 5 बजे पहुंचे जिनका दौड़ हुआ, जिसमें 784 अभ्यर्थी सफल होने की जानकारी मिली। 9 अभ्यार्थी दौड़ में घायल हो गए जिनका इलाज स्वास्थ केंद्र में चल रहा है। ब्रैकेटिंग के वजह से जहां अभ्यर्थियों को दौड़ाया जा रहा है वहां से स्वास्थ केंद्र महज लगभग 400 मीटर पर स्थित है लेकिन ब्रैकेटिंग के वजह से लगभग 5 किलो मीटर घूम कर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पदमा ले जाया जा रहा है यह भी काफी चिंता का विषय है ।

पारा शिक्षक मुनेश्वर सिंह को दी श्रद्धांजलि

बरही। एकीकृत सहायक अध्यापक संघर्ष मोर्चा के आह्वान पर बुद्धिजीवी मंच कार्यालय में शहीद पारा शिक्षक मुनेश्वर सिंह के शहादत दिवस पर श्रद्धांजलि दी गई। मुनेश्वर सिंह के चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किए गए। गौरतलब है कि 22 अगस्त 2007 को रांची में आंदोलन के दौरान पुलिस लाठीचार्ज में मुनेश्वर सिंह शहीद हो गए थे। तब से हर वर्ष इस दिन को शहादत दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस मौके पर 2018 के आंदोलन में शहीद हुए अन्य शिक्षकों को भी श्रद्धांजलि दी गई। प्रदेश अध्यक्ष संजय दुबे ने कहा कि जब तक राज्य के सभी सहायक अध्यापकों की वेतनमान, ईपीएफ और अन्य मांगें पूरी नहीं होती, तब तक उनका संघर्ष जारी रहेगा। प्रखंड सचिव मनोज घोष ने सरकार से मांग की कि शिक्षकों को सिर्फ पढ़ाने का कार्य सौंपा जाए और गैर-शैक्षणिक कार्यों से मुक्त रखा जाए। उन्होंने बताया कि आकलन पास किए हुए एक वर्ष बीतने के बावजूद 10 प्रतिशत मानदेय वृद्धि अब तक नहीं की गई है, जिससे शिक्षकों में रोष है। सीआरसी अध्यक्ष रामेश्वर, कोषाध्यक्ष सनोवर, रंजीत सिंह, मनोज ठाकुर, पुष्पा देवी और ललिता देवी ने शहीद को श्रद्धांजलि दी।

चट्टान के नीचे फंसे व्यक्ति को बचाने का प्रयास जारी

कटकमसांडी। शाहपुर पंचायत के गांव शाहपुर टोला डिबलबनथ में महोड़ा पहाड़ की ऊंचाई पर एक व्यक्ति पत्थरों के बीच में फंसा हुआ है, जिसका केवल पैर बाहर दिखाई दे रहा है। इस घटना ने पूरे इलाके में सनसनी फैला दी है और स्थानीय लोग और प्रशासन इस व्यक्ति को बचाने के लिए हर संभव प्रयास कर रहे हैं। महोड़ा पहाड़, जो अपनी दुर्गमता और विशाल पत्थरों के लिए प्रसिद्ध है, उसी पहाड़ की चोटी के पास यह अप्रत्याशित घटना घटित हुई। गांव के कुछ लोग जब पहाड़ की ओर गए, तो उन्हें वहां एक व्यक्ति की पैर दिखाई दी, जो कि बड़े पत्थरों के बीच फंसा हुआ था। हालांकि उस व्यक्ति की पहचान अब तक स्पष्ट नहीं हो सकी है, लेकिन स्थानीय लोगों ने बताया कि वह अंदर से बचाव के लिए चिल्ला रहा है। किसी को नहीं पता कि यह व्यक्ति पत्थरों के नीचे कैसे फंस गया, लेकिन उसकी जान बचाने की कोशिशें लगातार जारी हैं। ग्रामीणों ने पहले तो खुद ही उसे बाहर निकालने का प्रयास किया, लेकिन जब उन्हें इस काम में सफलता नहीं मिली, तो उन्होंने तुरंत स्थानीय प्रशासन को सूचना दी।जैसे ही प्रशासन को इस घटना की जानकारी मिली, हजारीबाग के जिलाधिकारी और पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर बचाव कार्यों के लिए एक टीम मौके पर भेजी गई। आपदा प्रबंधन टीम के साथ-साथ स्थानीय पुलिस और प्रशासनिक अधिकारी भी घटनास्थल पर पहुंचे। बचाव कार्य के दौरान बड़ी सावधानी बरती जा रही है, क्योंकि पत्थर बहुत बड़ा और भारी है। इसे हटाने के लिए भारी मशीनरी की जरूरत है, जो कि इस दुर्गम पहाड़ी इलाके में लाना अपने आप में एक चुनौती है।

कोल डंपिंग यार्ड में लोगों ने किया प्रदर्शन

कटकमसांडी। कटकमसांडी रेलवे स्टेशन स्थित कोल डंप यार्ड में स्थानीय लोगों को दरकिनार कर बाहरी लोगो द्वारा कोल रैकिंग, लोडिंग व अपलोडिंग व कोल धंधे में संलिप्तता से स्थानीय लोगों, युवाओं ने झामुमो के बोनर तले प्रदर्शन किया। झामुमो प्रखंड अध्यक्ष सह झारखंड श्रमिक संघ के जिलाध्यक्ष राजा मोहम्मद ने कहा कि कटकमसांडी रेलवे स्टेशन के समीप संचालित कोल डंपिंग यार्ड में कोल डंपिंग, लोडिंग, अपलोडिंग व रैकिंग से उड़ रहे गर्द व गुब्बार और धूल कण से आसपास के करीब एक दर्जन गांव प्रभावित है। एक ओर जहां दूर दूर के बाहर से आए लोगों द्वारा कोयला बेच प्रतिदिन लाखो करोड़ों रूपए कमाया जा रहा है। यहां के बच्चे, बड़े, बुजुर्ग, महिला व किशोरियां कोयले के उड़ रहे डस्ट को फांक रहे हैं और बीमार हो रहे हैं। मौके पर बसंतपुर, मालीआम, नैनादोहर, कटकमसांडी, चट्टी, लखनु, उलांज, कसियाडीह, करीवाआसन, बंजिया, हटकौना, एदला, बाझा आदि गांव के सैकड़ो लोग उपस्थित थे।

स्पीड न्यूज

150 मेडिकेटेड मच्छरदानी का वितरण

कोडरमा। उपायुक्त मेघा भारद्वाज के निर्देश के आलोक में कोडरमा प्रखंड के बाढ़ प्रभावित सुदूरवर्ती क्षेत्र मेघातरी के ग्रामीणों के बीच जिला मलेरिया पदाधिकारी डॉ. मनोज कुमार द्वारा 150 मेडिकेटेड मच्छरदानी का वितरण किया गया। वहीं डॉ.मनोज ने बताया कि हाल के दिनों में मेघातरी में पुल टूटने और बाढ़ का पानी लोगों के घरों में घुस जाने से वर्षा जनित रोग बढ़ने की सम्भावनाओं को देखते हुए उपायुक्त के निर्देश पर लोगों के बीच मच्छरदानी का वितरण किया गया।

कृषि विज्ञान केंद्र में गाजर घास सप्ताह का समापन

जयनगर (कोडरमा)। प्रखंड कृषि विज्ञान केंद्र में बीते एक सप्ताह से चल रहा गाजर घास सप्ताह कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में जयनगर मध्य विद्यालय के छात्राओं ने भाग लिया और विद्यालय के शिक्षक भी इस कार्यक्रम में मौजूद रहे। वहीं कृषि विज्ञान केंद्र के प्रधान डॉक्टर एके राय ने गाजर घास से होने वाले नुकसान को छात्राओं को बताया और केंद्र की बागवानी विशेषज्ञ डॉक्टर भूपेंद्र सिंह ने कार्यक्रम के संचालन करते हुए बच्चे को गाजर घास को कैसे पहचाने और उसका नुकसान और निदान बताएं। मौके पर रूपेश रंजन, विनय कुमार ने बच्चों को प्रशिक्षित करते नजर आए।

ग्रिजली कॉलेज में बीएड एसोसिएशन की बैठक

कोडरमा। ग्रिजली कॉलेज ऑफ एजुकेशन में बीएड.एसोसिएशन की बैठक आयोजित की गई। जिसमें जिले में संचालित सभी बीएड. कॉलेज के प्रबंधकों ने अपनी उपस्थिति दर्ज की। उक्त बैठक में गिरिडीह जिले में निर्माणाधीन नव विश्वविद्यालय के भौगोलिक क्षेत्र में कोडरमा जिले में संचालित सभी सरकारी एवं सरकार से संबंधता प्राप्त महाविद्यालयों को गिरिडीह जिले में निर्माणाधीन नव विश्वविद्यालय में समावेश करने की सूचना विश्वसूत्रों एवं दैनिक समाचार पत्रों से प्राप्त हुआ है।

बाल विवाह की रोकथाम के लिए जिला प्रशासन कटिबद्ध : मेघा भारद्वाज

कोडरमा। डोमचांच थाना अन्तर्गत जानपुर में एक नाबालिक बालिका वधु बनने से बच गई। प्रशासन की तत्परता से बाल विवाह को रोका जा सका। मिली जानकारी अनुसार उपायुक्त को नाबालिग बालिका उम्र–16 वर्ष लगभग का बाल विवाह उत्तर प्रदेश निवासी 35 वर्षीय सुधीर कुमार के साथ किये जाने की सूचना मिली। जब उपायुक्त को इसकी सूचना मिली तो जिला प्रशासन की टीम और पुलिस विभाग की टीम को आवश्यक कार्रवाई करने का निर्देश दिया। जिसपर जिला प्रशासन एवं पुलिस विभाग टीम के द्वारा तत्काल कार्यवाई करते हुए बालिका को निवास स्थल से रेस्क्यू कर लिया गया। तत्पश्चात् बाल कल्याण समिति कोडरमा के समक्ष उपस्थापित कराया गया। समिति द्वारा उक्त बालिका से परामर्श कर सूचना प्राप्त की गई।

मुआवजे की मांग को लेकर रांची-पटना रोड को किया जाम

कोडरमा। जिले के सुदूरवर्ती क्षेत्र मेघातरी के बाढ़ प्रभावित ग्रामीणों ने मुआवजे और डैम निर्माण की मांग को लेकर गुरुवार शाम करीब 4–5 बजे रांची पटना मुख्य मार्ग को जाम कर दिया। जिससे दोनों ओर वाहनों की लंबी कतारें लग गयी, घटना की जानकारी मिलते ही कोडरमा पुलिस और सीओ जाम स्थल पर पहुंचे और ग्रामीणों को मनाने का प्रयास कर रहे हैं। समाचार लिखे जाने तक जाम की स्थिति यथावत है। गौरतलब हो कि कोडरमा प्रखंड के सुदूरवर्ती क्षेत्र मेघातरी पंचायत के वार्ड एक के कुसाहना टोला के समीप वन विभाग द्वारा वर्षों बनाये गए पुल बीते 18 अगस्त को हुए भारी बारिश के बीच टूट गया था, डैम के टूटने से पूरा पानी लोगों के घरों में घुस गया, जिससे खाने पीने के समान, कपड़े, बर्तन आदि बह गए, कई मकान, बाउन्ड्रीवाल टूट गए थे, तो कुछ जानवर भी बह गए थे।

चंद्रा क्लीनिक में इलाजरत नवजात की मौत, क्लीनिक पुलिस छावनी में तब्दील

डॉक्टर पर लापरवाही का आरोप, हंगामा

खबर मन्त्र संवाददाता

कोडरमा। झुमरीतिलैया शहर के पानी टंकी से सटे डॉ.विकास चंद्रा क्लीनिक में लापरवाही का मामला सामने आया है। 19 अगस्त से क्लीनिक में भर्ती एक नवजात बच्ची की बुधवार देर रात मौत के बाद परिजन आक्रोशित थे। परिजनों का आरोप है कि बच्ची यहां भर्ती किए जाने के बाद बच्ची पूरी तरह से नॉर्मल थी और मां का दूध भी पी रही थी। बच्ची की नार्मल स्थिति को देखते हुए परिजनों ने उसे घर ले जाने का आग्रह भी किया, लेकिन अस्पताल प्रबंधन के द्वारा उसे कुछ और समय अस्पताल में भर्ती रखने का निर्देश दिया। बता दें कि 19 अगस्त को झुमरीतिलैया के ही एक अन्य क्लीनिक में नॉर्मल डिलीवरी से बच्ची का जन्म हुआ था। जन्म के बाद बच्ची को चाइल्ड स्पेशलिस्ट डॉक्टर से दिखाने की सलाह दी गई थी। इसके बाद बच्ची के पिता चिगलावर निवासी विकास यादव उक्त क्लीनिक में डॉ.विकास चंद्रा के पास उसे दिखाने पहुंचे। इस दौरान डॉक्टर विकास चंद्रा ने बच्ची को अस्पताल में भर्ती करने की सलाह दी। दो दिनों तक बच्ची को इसी अस्पताल के चाइल्ड केयर यूनिट में रखा गया। इस दौरान बच्ची को लगातार ऑक्सीजन भी दिया जा रहा था। परिजनों का आरोप है कि बुधवार रात 2:30 बजे जब उन्हें अपनी बच्ची के जीवित नहीं होने की सूचना मिली तो चाइल्ड केयर यूनिट में न तो कोई नर्स थी और न ही कोई डॉक्टर। परिजनों ने आरोप लगाया की डॉक्टर की लापरवाही से उनकी बच्ची की मौत हुई है। वहीं दूसरी तरफ इस घटना के बाद बच्ची की मौत की सूचना परिजनों को देने से पहले इस अस्पताल के डॉक्टर विकास चंद्र ने पुलिस प्रशासन को इसकी सूचना दी। जिसके बाद क्लीनिक के बाहर बड़ी संख्या में पुलिस जवानों की तैनाती की गई। अस्पताल की सुरक्षा को लेकर उसे पुलिस छावनी में तब्दील कर दिया गया है। वहीं इस मामले पर अस्पताल के डॉ. विकास चंद्रा ने लापरवाही की बात से इनकार कर रहे हैं। इधर बच्ची के परिजनों ने इलाज के दौरान बच्ची के पैर में एक घाव का निशान दिखाकर डॉक्टर पर लापरवाही बरतने का आरोप लगा रहे हैं। फिलहाल पुलिस के द्वारा समझाने बुझाने के बाद परिजनों का गुस्सा शांत हुआ और नवजात को ले जाने के बाद मामला शांत हुआ।

पीसी पीएनडीटी सलाहकार समिति की बैठक में कई निर्णय

कोडरमा। उपायुक्त मेघा भारद्वाज की अध्यक्षता में पीसी एंड पीएनडीटी एक्ट के जिला सलाहकार समिति की बैठक की गयी। बैठक के दौरान पूर्व में दिए गए निर्देशों के अनुपालन की समीक्षा करते हुए उपायुक्त ने सिविल सर्जन डॉ.अनिल कुमार को नियमित रूप से अल्ट्रासाउंड केंद्रों का जांच करने और पीसी पीएनडीटी एक्ट के नियमों का उल्लंघन करने वाले केंद्र संचालकों को चिन्हित कर आवश्यक कार्रवाई करने को कहा गया। बैठक में श्री अल्ट्रासाउंड, तथागत अल्ट्रासाउंड, तिलैया हार्ट क्लिनिक, निदान अल्ट्रासाउंड के नए रजिस्ट्रेशन और एडवांस अल्ट्रासाउंड सेंटर के निबंधन से सम्बंधित मामले आये, जिस पर चर्चा करते हुए आवश्यक दिशा निर्देश दिया गया। मौके पर उपायुक्त के अलावे एसडीओ रिया सिंह, सीएस डॉ.अनिल कुमार, डीएमओ डॉ. मनोज कुमार, डीपीएम महेश कुमार आदि मौजूद थे।

पल्स पोलियो अभियान को लेकर उपायुक्त की अध्यक्षता में बैठक संपन्न

जिले में शत-प्रतिशत बच्चों को पोलियो ड्रॉप पिलाना सुनिश्चित करेंगे : उपायुक्त

खबर मन्त्र संवाददाता

कोडरमा। जिले में 25 से 27 अगस्त तक राष्ट्रीय पल्स पोलियो अभियान चलाया जायेगा। अभियान की सफलता को लेकर समाहरणालय सभागार में उपायुक्त मेघा भारद्वाज की अध्यक्षता में द्वितीय जिला स्तरीय टास्क फोर्स की बैठक की गयी। जिसमें उपायुक्त ने राष्ट्रीय पल्स पोलियो अभियान को सफल बनाने में सभी संबंधित विभागों को समन्वय स्थापित कर कार्य करने का निर्देश दिया। बैठक में डीडीएम पवन कुमार द्वारा पल्स पोलियो अभियान के तहत पोलियो बूथ का आयोजन करने व घर-घर जाकर छुटे हुए बच्चों को पल्स पोलियो पिलाने के संबंध में जानकारी दी। वहीं उन्होंने बताया कि जिले के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों, उप स्वास्थ्य केंद्रों, आंगनबाड़ी केंद्रों समेत अन्य चिह्नित स्थानों पर 25 अगस्त को बूथ का आयोजन कर बच्चों को पल्स पोलियो की खुराक दी जायेगी। इसके अलावे 26 व 27 अगस्त को स्वास्थ्य सहिया व सेविका द्वारा घर-घर जाकर छुटे हुए बच्चों को पल्स पोलियो की खुराक दी जायेगी। वहीं उपायुक्त ने सिविल सर्जन व सभी प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी को पल्स पोलियो अभियान के सफल आयोजन में सक्रिय भूमिका निभाने का निर्देश दिया। उपायुक्त ने कहा कि हमारा लक्ष्य है कि हम जिले में शत-प्रतिशत बच्चों को पल्स पोलियो अभियान के तहत पोलियो ड्रॉप पिलाना सुनिश्चित करें। मौके पर सिविल सर्जन डॉ. अनिल कुमार, एसीएमओ सह डीएस डॉ. रंजीत कुमार, डीएमओ डॉ. मनोज कुमार, डीटीओ डॉ. रमण कुमार, डीआरसीएचओ डॉ. कुलदीप कुमार, डीएसडब्लूओ नीतीश कुमार निषाद, डीईओ अविनाश राम, डीपीसी पंकज कुमार, विनीत अग्निहोत्री, फिजियोथेरेपिस्ट राजीव रंजन समेत अन्य पदाकािरी व कर्मी मौजूद थे।

समन्वय बनाकर अभियान को बनाएं सफल : उपायुक्त

कोडरमा। कुष्ठ रोगी खोज अभियान के प्रथम चरण के सफल क्रियान्वयन को लेकर गुरुवार को उपायुक्त मेघा भारद्वाज की अध्यक्षता में जिला स्तरीय समन्वय समिति की बैठक की गयी। बैठक के दौरान उपायुक्त ने कहा कि अभियान के दौरान शत-प्रतिशत कुष्ठ रोगियों की पहचान सुनिश्चित करें, इसके लिए सभी विभाग आपस में समन्वय बनाकर दायित्वों का निर्वहन करें। उन्होंने शिक्षा विभाग के पदाधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि कुष्ठ रोगी खोज अभियान में शिक्षकों का सहयोग लें, अभियान को लेकर प्रचार प्रसार विद्यालयों में करवाएं, गांवों में स्वास्थ्य सम्बन्धी बैठक में अभियान की चर्चा करें, कुष्ठ रोगियों के पहचान के लिए सर्वे कार्य को बहुत ही गम्भीरतापूर्वक निष्पादन करें। वहीं सिविल सर्जन डॉ.अनिल कुमार ने अभियान की जानकारी देते हुए बताया कि कुष्ठ रोगी खोज अभियान का प्रथम चरण 28 अगस्त से शुरू होगा जो 13 सितंबर तक चलेगा, अभियान के दौरान गांव गांव से कुष्ठ रोगियों के पहचान के लिए सर्वे कार्य किया जाएगा।

डॉक्टर के लिए इंसाफ की मांग

अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार संघ ने निकाला कैंडल मार्च

खबर मन्त्र संवाददाता

चतरा। अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार ऐसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष अरबिंद कुमार सिंह के निर्देश पर कोलकाता में नहिला डॉक्टर मौमिता देवनाथ के साथ हुई बलात्कार और हत्या के विरोध में चतरा में भव्य विरोध प्रदर्शन और कैंडल मार्च निकाला गया। प्रदर्शनकारियों ने बंगाल में राष्ट्रपति शासन लागू करने, ममता बनर्जी को हटाने, बलात्कारियों को फांसी देने और भारत माता की जय के नारे लगाए।

प्रदेश महासचिव ने मीडिया को संबोधित करते हुए कहा कि बंगाल में महिलाएं और पुरुष दोनों ही सुरक्षित नहीं हैं और केंद्र सरकार को तुरंत राष्ट्रपति शासन लागू करना चाहिए। जिला अध्यक्ष आलोक रंजन ने कहा कि कोलकाता में घटना करने वालों को कड़ी से कड़ी सजा मिलनी चाहिए। इस कार्यक्रम में युवा मोर्चा के प्रदेश उपाध्यक्ष संजीत कुमार, जिला सचिव हिमांशु कुमार, जिला उपाध्यक्ष रंजन कुमार सागर, मीडिया प्रभारी अजित यादव, कोषाध्यक्ष अशोक कुमार, जिला कार्यक्रम सचिव अरविंद कुमार साहू, जितेंद्र कुमार पाठक, गंगाधर शास्त्री, राजेश पासवान, जितेंद्र रजक, चम्पा कुमारी, भेखलाल मुंडा, राजेंद्र प्रसाद और राजू राणा समेत कई लोग उपस्थित थे।

सोलह सूत्री मांगों को लेकर रैयत विस्थापित मोर्चा का आंदोलन छठे दिन जारी

रैक लोडिंग छठे दिन भी रहा बाधित, आज होगी वार्ता

खबर मन्त्र संवाददाता

टंडवा (चतरा)। शिवपुर साइडिंग में हक-अधिकार व रोजगार सहित सोलह सूत्री मांगों को लेकर रैयत विस्थापित मोर्चा के बैनर तले आंदोलित लोग छठे दिन भी अपनी मांगों को लेकर आंदोलन स्थल पर जमे रहे। जिससे छठे दिन भी नेक लाईन हड़गड़ा साइडिंग में कोयले का डिस्पैच व रैक लोडिंग कार्य बाधित रहा।

वहीं साइडिंग में हक-अधिकार व रोजगार सहित वर्चस्व को लेकर जहां एक ओर पिछले छह दिनों से रैयत विस्थापित मोर्चा के बैनर तले शिवपुर सहित आस-पास के गांवों के लोग आंदोलन पर बैठे हैं। दरअसल आंदोलन पर बैठे लोगों का कहना है कि साइडिंग में रैक लोडिंग के कार्य में स्थानीय रैयतों को रोजगार से वंचित रखा गया है। वहीं दुसरी ओर साइडिंग में रैक लोडिंग कार्य कर रहे स्थानीय कबरा गांव के रैयतों ने आंदोलन कर बैठे लोगों पर साइडिंग में कार्य कर रहे मूल रैयतो का साजिश के तहत रोजगार छिनने का आरोप लगाया है। साइडिंग में रैक लोडिंग का कार्य कर रहे खुर्शीद अंसारी ने कहा कि बगल में सीसीएल का शिवपुर रेलवे साइडिंग है जिससे हर रोज दस-बारह रैक कोयला देश के विभिन्न हिस्सों में जाता है। जिसमें मात्र दस-बारह लोगों को ही रोजगार के नाम पर रखा गया है। वहीं नेक लाईन हड़गड़ा साइडिंग से हर रोज मात्र एक-दो रैक ही कोयला जाता है जिसमे गांव के 80 लोगों को रोजगार से जोड़ा गया है। वहीं साइडिंग में रोजगार कर रहे गांव के अनवर अंसारी ने बताया कि हम युवा जहां दुसरे प्रदेशों में जाकर रोजगार के लिए भटकते थे अब हमें गांव के ही साइडिंग में रोजगार मिल रहा है जिससे हमारा परिवार खुशी-खुशी चल रहा है जो दूसरे खेमे में बैठे लोगों को बर्दाश्त नहीं हो रहा है। बहरहाल हक-अधिकार अथवा रोजगार की मांग को लेकर आंदोलन पर बैठे लोगों की मांगों को लेकर आज दोपहर आम्रपाली के महाप्रबंधक कार्यालय में रैयत विस्थापित मोर्चा के लोगों के साथ वार्ता रखी गई है। जिसमें सभी लोगों की निगाहे टिकी हुई है।

लंबित व पूर्व की योजनाओं को जल्द करायें पूर्ण शमशेर आलम

राज्य अल्पसंख्यक आयोग के उपाध्यक्ष ने जिले के अधिकारियों संग किया बैठक

खबर मन्त्र संवाददाता

चतरा। झारखण्ड राज्य अल्पसंख्यक आयोग के उपाध्यक्ष (दर्जा प्राप्त राज्य मंत्री) शमशेर आलम ने चतरा परिसदन भवन का दौरा किया और उपायुक्त रमेश घोलप ने उनका स्वागत किया। जनसुनवाई कार्यक्रम में अल्पसंख्यकों की समस्याओं को सुना गया और समाहरणालय सभा कक्ष में अल्पसंख्यकों के विकास के लिए केन्द्र और राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं की समीक्षा की गई।मुख्यमंत्री रोजगार श्रृजन योजना, कब्रिस्तान घेराबंदी, प्रधानमंत्री आवास योजना, अबुआ आवास योजना, अल्पसंख्यकों के लिए छात्रावास, विद्यालय, मदरसा, उर्दू शिक्षकों की बहाली, स्वास्थ्य केन्द्र समेत अन्य योजनाओं की विस्तृत जानकारी ली गई। चतरा जिले में दो मदरसा हैं, जिसमें शिक्षकों की स्वीकृत बल 12 है, लेकिन केवल 1 शिक्षक कार्यरत है और 11 पद रिक्त हैं। कार्यरत शिक्षक को जुलाई 2024 तक का वेतन भुगतान किया जा चुका है। वर्ष 2022-23 में कुल 6 लाभुकों को मुख्यमंत्री रोजगार श्रृजन योजना से लाभान्वित किया गया है। साइकिल वितरण योजना, छात्रवृति वितरण योजना, अल्पसंख्या कब्रिस्तान घेराबंदी, मुख्यमंत्री स्वास्थ्य योजना की समीक्षा की गई और लंबित या प्रगति पर चल रही योजनाओं को जल्द से जल्द पूरा करने का निर्देश दिया गया। जन सुनवाई के दौरान यह जानकारी मिली कि अल्पसंख्यकों के लिए अल्पसंख्यक बहुल क्षेत्रों में स्वास्थ्य केन्द्र नहीं हैं, इसलिए सिविल सर्जन चतरा को स्वास्थ्य केन्द्र के लिए नियमसंगत कार्रवाई करने और व्यवस्था सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया। बैठक में उपायुक्त श्री रमेश घोलप, उप विकास आयुक्त पवन कुमार मण्डल, सिविल सर्जन दिनेश प्रसाद, अनुमण्डल पदाधिकारी चतरा सुरेन्द्र उरांव, जिला जन सम्पर्क पदाधिकारी शकिल अहमद, जिला परिवहन पदाधिकारी इंद्र कुमार, जिला शिक्षा पदाधिकारी दिनेश कुमार मिश्र, जिला शिक्षा अधीक्षक अभिषेक बड़ाईक समेत अन्य संबंधित पदाधिकारी उपस्थित थे।

एक नजर में

विद्यालय में बैठक का आयोजन और सदस्यों का चयन

खबर मन्त्र संवाददाता

गिद्धौर। बारीसाखी के राजकीय मध्य विद्यालय में एक बैठक आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता शिवकुमार यादव ने की और संचालन नवनीत सिंहा ने किया। बैठक में सदस्यों का चयन किया गया और सर्वसम्मति से सत्येंद्र दांगी को अध्यक्ष, निलम कुमारी को उपाध्यक्ष और सरस्वती देवी को संयोजिका पद के लिए चुना गया। सत्येंद्र दांगी के अध्यक्ष बनने पर ग्रामीणों ने उन्हें बधाई दी। इस अवसर पर मुखिया सुमीरा कुमारी, पारा शिक्षक मुनीश्वर यादव और बड़ी संख्या में ग्रामीण और समाजसेवी उपस्थित थे।

फसल बीमा योजना जागरूकता रथ को उपायुक्त ने किया रवाना

कोडरमा। उपायुक्त मेघा भारद्वाज ने गुरुवार को बिरसा प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना जागरूकता रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि राज्य सरकार द्वारा बिरसा प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना की शुरुआत की गई है, इस योजना का लाभ एक रुपये टोकन मनी देकर लिया जा सकता है। उपायुक्त ने कहा कि जिले के शत प्रतिशत कृषकों को बीमा योजना का लाभ मिले, इसके लिए जागरूकता रथ घूम घूम कर आमजनों को इसके प्रति जागरूक करने का कार्य करेगा। बीमा योजना की जानकारी देते हुए उपायुक्त ने कहा कि बिरसा प्रधानमंत्री फसल योजना का लाभ लेने के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 31 अगस्त है।

डीसी ने ऑनलाइन माध्यम से जिला व प्रखण्ड स्तरीय पदाधिकारियों के साथ किया बैठक

खबर मन्त्र संवादाता

चतरा। झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के हजारीबाग दौरे से पहले उपायुक्त रमेश घोलप ने जिला स्तरीय पदाधिकारियों के साथ बैठक की। बैठक में मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना की समीक्षा की गई और प्रमंडल स्तरीय कार्यक्रम की तैयारियों पर चर्चा हुई। उपायुक्त ने जिला खनिज फाउंडेशन ट्रस्ट मद से ली जाने वाली विकास योजनाओं के लिए ग्राम सभा से संबंधित सभी कार्यों को पूरा करने का निर्देश दिया। उन्होंने बिरसा प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के बारे में जानकारी दी और गैर ऋणी किसानों के लिए नामांकन की अंतिम तिथि 31 अगस्त 2024 तक बढ़ाने की घोषणा की।उपायुक्त ने सभी अंचल अधिकारियों और प्रखंड विकास पदाधिकारियों को निर्देश दिया कि वे अपने अधीनस्थ राजस्व उप निरीक्षकों, अंचल निरीक्षकों, बीटीएम, एटीएम, कृषक मित्रों, ग्राम पंचायत के मुखिया, पंचायत सचिव, जनसेवकों के माध्यम से अपने-अपने अंचल अंतर्गत गैर-ऋणी किसानों का प्रज्ञा केंद्रों में निर्धारित तिथि के अंदर नामांकन कराना सुनिश्चित करें। साथ ही अनुमंडल पदाधिकारी चतरा और सिमरिया को निर्देशित किया गया कि वे अपने-अपने अनुमंडल क्षेत्र अंतर्गत अंचलों में गैर-ऋणी किसानों के प्रज्ञा केंद्रों में नामांकन का प्रतिदिन समीक्षा करें और प्रत्येक दिन की प्रगति रिपोर्ट उपलब्ध कराएं।

आरोपी को सात वर्ष सश्रम कारावास व पांच हजार रूपये जुर्माना

खबर मन्त्र संवाददाता

कोडरमा। जमीन विवाद में मारकर गंभीर रूप से घायल करने के एक मामले की सुनवाई करते हुए अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश तृतीय राकेश चंद्रा की अदालत ने गुरुवार को जोवराज सिह पिता चेतलाल सिंह डोमचांच कोडरमा निवासी को 307 आईपीसी के तहत दोषी पाते हुए 7 वर्ष सश्रम कारावास की सजा सुनाई। साथ ही पांच हजार रूपये जुर्माना भी लगाया। जुर्माना की राशि नहीं देने पर 3 माह अतिरिक्त सजा भुगतनी होगी। वहीं न्यायालय ने केदार सिंह पिता धमक सिंह, पिंकू सिंह पिता दशरथ सिंह दोनों डोमचांच निवासी को साक्ष्य के अभाव में बरी कर दिया। मामला वर्ष 2021 का है। इसे लेकर डोमचांच थाना में मामला दर्ज कराया गया था। अभियोजन का संचालक लोक अभियोजक पीपीएंजेलिना वारला ने किया। इस दौरान सभी 8 गवाहों का परीक्षण कराया गया। कार्रवाई के दौरान अपराध की गंभीरता को देखते हुए पीपी एंजेलिना वारला ने न्यायालय से अभियुक्तों को अधिक से अधिक सजा देने का आग्रह किया। वहीं बचाव पक्ष की ओर से अधिवक्ता अशोक कुमार सिंह ने दलीलें पेश करते हुए बचाव किया। अदालत ने सभी गवाहों और साक्ष्यों का अवलोकन करने के उपरांत उपरोक्त अभियुक्त को 307 आईपीसी के तहत दोषी पाते हुए 7 साल कारावास की सजा मुकर्रर की और जुर्माना लगाया। इसे लेकर घायल मथुरा सिंह के बयान पर डोमचांच थाना में मामला दर्ज किया गया था।

पुलिया बह जाने से ग्रामीणों को हो रही परेशानी

खबर मन्त्र संवादाता

चतरा। मूसलाधार बारिश के कारण गिद्धौर प्रखंड के इचाक पिंडारकोन मुख्य पथ पर बनी पुलिया बह गई है, जिससे सैकड़ों ग्रामीणों को आवागमन में परेशानी हो रही है। कान्हाचट्टी, पीतीज, सरहेता, चकरवार के लोग हजारीबाग जाने के लिए इसी रास्ते का इस्तेमाल करते हैं।यह पुलिया पूर्व में भी क्षतिग्रस्त हुई थी और मझगवां पंचायत की मुखिया सरिता देवी और समाजसेवी बसंत सिंह ने अपने निजी खर्चे से इसकी मरम्मत कराई थी।

लेकिन तेज बारिश के कारण यह पुलिया फिर से पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई है। पुल टूट जाने से ग्रामीणों के साथ-साथ स्कूली बच्चों को भी परेशानी हो रही है, उन्हें कई किलोमीटर की दूरी तय कर दूसरे रास्ते से घूमकर स्कूल जाना पड़ रहा है। ग्रामीणों ने जिला प्रशासन से जल्द से जल्द पुलिया को दुरुस्त कराने की मांग की है।

स्पीड न्यूज

बसिया प्रखंड परिसर में एक पेड़ मां के नाम कार्यक्रम का किया गया आयोजन

बसिया। प्रखंड परिसर बसिया में गुरुवार को एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत प्रखंड परिसर बसिया में पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।जिसमें कई मूल्यवान एवम फलदार पौधे लगाए गए।मौके पर बीडीओ सुप्रिया भगत सी ओ नरेश मुंडा के अलावे प्राथमिक विद्यालय के छात्र छात्राए प्रखंड एवम अंचलकर्मी उपस्थित थे।इस अवसर पर बीडीओ सुप्रिया भगत ने कहा कि अगर धरती को बचाना है तो हर व्यक्ति का कर्तव्य है कि एक पेड़ अवश्य लगाए और उसे संरक्षण देकर पेड़ का रूप दे।उन्होंने पौधा लगाकर अभियान की शुरूआत की साथ ही अंचल अधिकारी नरेश मुंडा ने भी पौधरोपण किया। मौके पर बीटीएम रश्मि सुरीन दिवाकर केशरी राजीव कंठ सोनू ओहदार सुकरात उराँव रबिन्द्र भगत सही कई लोग उपस्थित थे।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव 26 को, भजन संध्या व झांकी का होगा मंचन

गुमला। रौनियार वैश्य समाज गुमला के द्वारा प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव धूमधाम के साथ मनाया जाएगा। इस निमित्त समाज के पदाधिकारियों की बैठक रौनियार धर्मशाला में संपन्न हुई। जिसमें निर्णय लिया गया कि आगामी 26 अगस्त को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का त्यौहार रौनियार धर्मशाला परिसर में धूमधाम से मनाया जाएगा। कार्यक्रम में विनय मिश्रा एंड म्यूजिकल ग्रुप के द्वारा भजन संध्या की प्रस्तुति की जाएगी। इसके अलावा कलाकारों द्वारा बृहत रुप से आकर्षक झांकी का मंचन किया जाएगा। समाज के अध्यक्ष विनोद प्रसाद और सचिव अनमोल गुप्ता ने बताया कि कार्यक्रम संध्या 7:00 बजे से आरंभ होगा। मंदिर परिसर में भव्य पंडाल का निर्माण होगा और आकर्षक रूप से श्रीराधा कृष्ण मंदिर को सजाया जाएगा। मौके पर समाज के कई पदाधिकारी मौजूद थे।

शास्त्री नगर में एसडीपीओ ने की मुहल्ले के लोगों की सुरक्षा को लेकर बैठक

गुमला। अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी सुरेश प्रसाद यादव की अध्यक्षता में टोटो बीट अन्तर्गत शास्त्री नगर में पुलिस नागरिक सुरक्षा समिति तथा सुगंधा आजीविका महिला समिति के सदस्यों की बैठक हुई। उक्त बैठक में नशापान, डायन प्रथा, यातायात से संबंधित नियमों के बारे मे जागरूक किया गया। साथ ही मुख्य प्रतिष्ठानों में सीसीटीवी कैमरा लगाने, संवेदनशील जगहों की पहचान, क्षेत्र में गश्ती बढ़ाने, किरायेदारों की पहचान तथा पर्व त्यौहार या अन्य अवसर पर घर बंद कर अन्यत्र जाने की जानकारी संबंधित पुलिस अधिकारियों को देने जैसे बिन्दुओं पर विचार विमर्श किया गया। बैठक में काफी संख्या में उपस्थित थे।

कृषि विज्ञान केंद्र की ओर से किसानों के बीच सरगुजा बीज का किया गया वितरण

गुमला। कृषि विज्ञान केंद्र विकास भारती बिशनपुर के द्वारा क्लस्टर अग्र पंक्ति प्रत्यक्षण के अंतर्गत सरगुजा प्रभेद बिरसा नाइजर वन का किसानों के बीच वितरण किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे श्री महेंद्र भगत ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों से सरगुजा की खेती में कमी आई है। परंतु यह फसल कम पानी में भी अच्छी पैदावार देने में सक्षम थी। इस वितरण कार्यक्रम के अंतर्गत कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक व प्रधान डॉक्टर संजय कुमार ने बताया कि सरगुजा की फसल लगभग 75 से 80 दिन में तैयार हो जाती है। साथी ही साथ इसमें लागत कम होने के कारण किसानों के लिए काफी उपयोगी है। डॉ कुमार ने बताया कि इसके बीजों की मांग विदेशों में ज्यादा है। इस कारण इसका बाजार मूल्य भी ज्यादा होता है' डॉ कुमार ने बताया कि इस वर्ष कृषि विज्ञान केंद्र 250 एकड़ में किसानों के खेत पर सरगुजा की खेती करने का लक्ष्य रखा गया है। जिसे गुमला जिला तिलहन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर हो सके ' कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक अटल बिहारी तिवारी, एन ओ राई के साथ-साथ कलवारी उरांव, लालमोहन उरांव, राजेश उरांव के साथ 25 किसानों ने भाग लिया।

मनरेगा में हो रही गड़बड़ी व घोटाले पर कार्रवाई की उपायुक्त से मांग

गुमला। झारखंड नवनिर्माण दल व प्रगतिशील मनरेगा मजदूर यूनियन गुमला द्वारा जिले में मनरेगा की कूप निर्माण, वृक्षारोपण, इत्यादि विभिन्न योजनाओं में मनरेगा कर्मी तथा बिचौलियों से मिली भगत कर हो रही घपले घोटाले की जांचोंपरांत कानूनी कार्रवाई की मांग गुमला उपायुक्त से की है । खासकर प्रगतिशील मनरेगा मजदूर यूनियन के द्वारा यह भी कहा गया है कि गुमला जिला के सुदूरवर्ती पंचायत व गांव में जहां मनरेगा मजदूर उपलब्ध है वहां भी कागज पर योजना चला कर बड़े पैमाने पर फजीर्वाड़ा हो रहा है । इस पर जिले के उपायुक्त का ध्यान आकृष्ट कराते हुए यूनियन ने कहा है कि मनरेगा एक्ट होने के बावजूद योजनाओं में लूट मची है और मजदूर को काम देने वाले एक्ट लूट का चारागाह बनी हुई है जिसे बर्दाश्त नहीं किया जाएगा । शहीद तेलंगा खड़िया के गांव मुरगू में सिसई प्रखंड स्थित भूमिहीन गरीबों के नाम से वृक्षारोपण इत्यादि योजना स्वीकृत कर 50 लाख से भी ज्यादा रुपए की घोटाले कर ली गई है। वहीं डूमरी प्रखंड में 25 लाख की भी गबन का मामला मनरेगा की योजना के नाम पर आया है जिस पर जल्द ही कार्रवाई की मांग उपायुक्त से की गई है जिसकी लिखित सूचना प्रगतिशील मनरेगा मजदूर यूनियन के द्वारा गुमला जिला प्रशासन को दी गई है। यूनियन जिले के सभी प्रखंड जहां से मनरेगा मजदूरों की शिकायत मिलती है उन सभी पंचायत व गांव में यूनियन की खास टीम निरीक्षण के लिए जाएगी और गलत पाए जाने पर जांचोपरांत कार्रवाई के लिए प्रशासन को पूरे साक्ष्य के साथ मांग-पत्र दिया जाएगा । जरूरत पड़ी तो यूनियन मजदूरों को संगठित कर आंदोलन भी करेगी।

संस्थापक
स्व. डॉ अभय कुमार सिंह
स्वामित्व वृन्दा मीडिया पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक, प्रकाशक
मंजू सिंह
द्वारा चिरौंदी, बोड़ेया रोड, रांची (झारखंड) से मुद्रित एवं प्रकाशित।
संपादक
अविनाश ठाकुर*
फोन : 95708-48433
पिनः -834006
e-mail
khabarmantra.city@gmail.com
R.N.I No.
JHAHIN/2013/51797
*पीआरबी एक्ट के अंतर्गत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी। प्रकाशित खबरों से संबंधित किसी भी विवाद का निपटारा रांची न्यायालय में ही होगा।

वैज्ञानिक प्रगति से ही विश्व में बने कई आधुनिक उपकरण: एसडीपीओ

सांता पब्लिक स्कूल गुमला में साइंस एग्जीबिशन का किया गया आयोजन

खबर मन्त्र संवाददाता

गुमला। एसडीपीओ सुरेश प्रसाद यादव ने कहा है कि आधुनिक युग को विज्ञान के युग के नाम से जाना जाता है। वैज्ञानिक प्रगति के कारण ही आज विश्व में कई ऐसे उपकरण बन पाए हैं। जिससे सभी देश प्रगति की ओर आगे बढ़ रहा है। श्री यादव ने गुरुवार को सांता पब्लिक स्कूल गुमला में आयोजित साइंस एग्जीबिशन कार्यक्रम में शामिल लोगों को संबोधित करते हुए उक्त बातें कही। उन्होंने कहा कि इस तरह के कार्यक्रम से बच्चों की प्रतिभा को निखार जा सकता है। सांता पब्लिक स्कूल का प्रयास सराहनीय है। वहीं विशिष्ट अतिथि डालसा के सदस्य शंभू सिंह ने कहा कि सांता पब्लिक स्कूल में फ्री एडमिशन करना तारीफ के काविल है। आज का विज्ञान प्रदर्शनी निश्चित ही तारीफ के काबिल है। उन्होंने कहा विज्ञान का अर्थ है विशेष ज्ञान। विज्ञान प्रदर्शनी बच्चों में वैज्ञानिक सोच को प्रोत्साहित करती है। वहीं लायंस क्लब गुमला ग्रेटर के अध्यक्ष राजेश लोहानी और स्कूल के संरक्षक शंकर लाल जाजोदिया ने कहा की विज्ञान प्रदर्शनी जैसे कार्यक्रम से बच्चों में मानसिक तथा बौद्धिक विकास होता है और बच्चें कुछ नया करने को प्रोत्साहित होते हैं। स्कूल के डायरेक्टर हेमंत कुमार ने कहा कि विज्ञान जीवन का अभिन्न अंग है। विज्ञान के बिना जीवन अधूरा है। उन्होंने बताया की कार्यक्रम को लेकर पूरे स्कूल को 6 ग्रुप में बांटा गया है। जिसमें गाँधी दल, नेहरू दल, सुभाष दल, तिलक दल, भगत दल,, पटेल दल बनाया गया। आज के विज्ञान प्रदर्शनी में सुभाष दल फर्स्ट, पटेल दल सेकंड व नेहरू दल थर्ड हुआ। विजय दलों को स्कूल द्वारा मेडल और प्रमाण पत्र और कई पुरस्कार प्रदान की गई। मंच का सफल संचालन टीचर हिमा कुमारी ने की। इस अवसर पर स्कूल की टीचर्स अंकिता कुमारी, जसिंता बेक, नेहा, सीमा, सुनीता, मुस्कान, अंजनी, नोर्बेर्ट बेक, आदि सहित स्कूल के टीचर्स और पेरेंट्स उपस्थित थे।

जय श्रीराम समिति के चुनाव को लेकर अध्यक्ष पद के लिए मैदान में उतरे सुनील अग्रवाल

खबर मन्त्र संवाददाता

लोहरदगा। जय श्रीराम समिति के चुनाव को लेकर अध्यक्ष पद के लिए सुनील अग्रवाल ने नामांकन पत्र खरीद कर अपनी दावेदारी प्रस्तुत की है। ज्ञात हो कि रमेश राय उर्फ गुड्डू ने भी पर्चा खरीद अपनी दावेदारी पेश की थी। अब सुनील अग्रवाल के मैदान में आ जाने से मुकाबला जबरदस्त होने वाला है। अभी तक अध्यक्ष पद के लिए दो, महामंत्री के लिए एक और कोषाध्यक्ष के लिए एक नामांकन पत्र की बिक्री हुई है। 22 सितंबर को होने वाला चुनाव कई मायनों में महत्वपूर्ण माना जा रहा है। समिति के इस चुनाव को लेकर सारा शहर जिज्ञासा से भरा है। कई लोगों की पर्ची लेने की प्रबल संभावना है। इस मौके पर सुनील अग्रवाल ने कहा मेरे रग रग में मेरे तन मन में भक्ति भाव कूट-कूट कर भरी है। सेवा करना हमारा परम कर्तव्य है। समिति के उच्च पद पर आकर मैं समाज, धर्म संस्कृति की सेवा एवं रक्षा कर सकूं ऐसा मेरा लक्ष्य है।

सिपाही बहाली को लेकर दौड़ का अभ्यास कर रही युवती ट्रक के धक्के से घायल

- विरोध में ग्रामीणों ने किया सड़क जाम, बॉक्साइट ट्रकों को तेज गति चलाने पर अंकुश लगाने की मांग

खबर मन्त्र संवाददाता

घाघरा। घाघरा थाना क्षेत्र के देवाकी के समीप गुरुवार की सुबह सिपाही बहाली की तैयारी के लिए दौड़ का अभ्यास कर रही युवती पूर्णिमा कुमारी बॉक्साइट ट्रक के धक्के से घायल गंभीर रूप से घायल हो गई । वही ग्रामीणों के सहयोग से 108 एंबुलेंस की मदद से घायल को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र घाघरा लाया गया। जहां चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज हेतु युवती को गुमला सदर अस्पताल रेफर कर दिया। वहीं गुस्साए ग्रामीणों और परिजन ने देवाकी के समीप सड़क जाम कर दिया। जिससे बॉक्साइट व अन्य वाहन खड़ी रही। घटना की सूचना मिलने पर पुलिस घटनास्थल पहुंच लोगों को समझाया। लेकिन परिजन ट्रक मालिक को बुलाने पर अड़े रहे। इसके बाद लगभग 9:00 बजे ट्रक मालिक घटनास्थल पहुंचा। जहां घायल के इलाज की मदद की बात परिजनों द्वारा कही गई। वहीं पुलिस के दुबारा समझाने के बाद जाम हटा लिया गया। परिजनों ने बताया कि उत्पाद विभाग में सिपाही का वैकेंसी निकला है। जिसे लेकर प्रत्येक दिन पूर्णिमा द्वारा अभ्यास दौड़ का किया जा रहा था।जहां आज प्रातः भी वह दौड़ रही थी। जहां बॉक्साइट ट्रक ने टक्कर मार दी। जिससे वह घायल हो गई। लगातार बॉक्साइट ट्रक तेज गति से अपने वाहनों को चलाते हैं। जिस पर अंकुश लगाने की जरूरत है।

लगातार पांचवीं बार निर्मल गोयल अध्यक्ष व रमेश कुमार चुने गये सचिव

- शारदीय नवरात्र व दुर्गा पूजा को लेकर श्री बड़ा दुर्गा मंदिर पूजा समिति की बैठक आयोजित

खबर मन्त्र संवाददाता

गुमला। शारदीय नवरात्र एवं दुर्गा पूजा धूमधाम से मनाये जाने को लेकर श्री बड़ा दुर्गा मंदिर के प्रांगण में नगर के सनातन धर्मावलंबियों की बैठक श्री बड़ा दुर्गा मंदिर पूजा समिति के अध्यक्ष निर्मल कुमार गोयल की अध्यक्षता में हुई। बैठक में समिति के कोषाध्यक्ष मिथुन कुमार द्वारा विगत वर्ष के आय व्यय का व्यौरा प्रस्तुत किया गया।इसके पश्चात नये सत्र के लिए बड़ा दुर्गा मंदिर पूजा समिति के पदाधिकारियों का चयन किया गया। पदाधिकारियों में लगातार पांचवीं बार निर्मल कुमार गोयल अध्यक्ष एवं रमेश कुमार चीनी सचिव चुने गये। जबकि उपाध्यक्ष ओम प्रकाश साहु तथा विश्वनाथ पांडेय सह सचिव, भूपन साहु तथा राम निवास प्रसाद और द्वारिका मिश्र सुमन को कोषाध्यक्ष चुना गया। इसके अतिरिक्त कार्यसमिति सदस्य के रुप में रुपेश भगत, गुन्नू शर्मा, अवधेश गोप,किशोर रजक, दीपक केसरी, मिथुन कुमार, दीपक सिन्हा, शिशुपाल सिंह, भिखेश्वर नागमणी, सुमित कुमार, वृज गोप, मिथलेश गुप्ता,जय प्रकाश ओहदार, राकेश खड़िया, संतोष यादव, प्रदीप कसेरा, अमित सिंह, भोला नाग, नितेश सिंह, मयंक केसरी, अशोक शर्मा, रंजन सोनी, ब्रजकिशोर पाठक, संदीप कुमार, ओम प्रकाश साह एवं हिमेश कुमार को चुना गया।

मंत्री प्रतिनिधि बनाकर वित्त मंत्री ने की अच्छी शुरुआत : रोहित उरांव

- मंत्री प्रतिनिधि का विरोध सांसद सुखदेव भगत का निजी विचार : हाजी अफसर कुरैशी

खबर मन्त्र संवाददाता

लोहरदगा । लोहरदगा से विधायक और राज्य के वित मंत्री डॉ रामेश्वर उरांव द्वारा हाजी अफसर कुरैशी को मंत्री प्रतिनिधि बनाए जाने पर लोहरदगा से कांग्रेस के सांसद सुखदेव भगत ने सवाल खड़े करते हुए नाराजगी जताई थी। सुखदेव भगत ने इसे असंवैधानिक बताते हुए वित मंत्री डॉ रामेश्वर उरांव पर निशाना साधा था। वही अब वित मंत्री डॉ रामेश्वर उरांव के नवनियुक्त मंत्री प्रतिनिधि हाजी अफसर कुरैशी और वित मंत्री के पुत्र समाजसेवी रोहित उरांव ने पलटवार किया है। गुरुवार को हाजी अफसर कुरैशी के आवास पहुंचे मंत्री पुत्र रोहित उरांव मंत्री प्रतिनिधि नियुक्ति को जायज ठहराते हुए कहा की उनके पिताजी वित मंत्री डॉ रामेश्वर उरांव ने राज्य में देर से ही लेकिन एक अच्छी परंपरा का शुरूवात किया है। राज्य में नए चलन का शुरूवात हुआ है सबको इसका स्वागत करना चाहिए। वित मंत्री कांग्रेस पार्टी को मजबूत करने के लिए यह निर्णय लिए है। उन्होंने कहा की सांसद सुखदेव भगत विरोध कर रहे हैं वह उनका निजी निर्णय है। वही नवनियुक्त मंत्री प्रतिनिधि हाजी अफसर कुरैशी ने वित मंत्री डॉ रामेश्वर उरांव का आभार व्यक्त करते हुए कहा वित मंत्री अल्पसंख्यक के चहेते रहे हैं। कांग्रेस पार्टी सभी समुदाय का है और इस पार्टी में सबको अधिकार मिले इसी सोच के साथ मुझे प्रतिनिधि बनाया गया है। सांसद और कुछ कांग्रेस के लोग विरोध कर रहे हैं वो उनके निजी विचार है। मैं शुरू से कांग्रेसी रहा हूं और कांग्रेस के लिए काम करते आया हूं। इस मौके पर जमील अंसारी, हाजी शमशेर कुरैशी, इरशाद आलम, रबिल खान, काजू कुरैशी, जाफर इमामा, रिंकू कुरैशी, एमडी दानिश, रौनक इकबाल, टिंकू कुरैशी, रिंकू कुरैशी, असरफ अंसारी, मो.साजिद, तनवीर अंसारी, जफर आलम आदि मौजूद थे।

एटीएस ने कुडू में की छापेमारी, दो देसी हथियार बरामद

- छापेमारी में आतंकी साहित्य सहित कई कई आपत्ति जनक सामान भी बरामद

खबर मन्त्र संवाददाता

लोहरदगा। जिले के कुडू थाना क्षेत्र में आतंकवाद निरोधी दस्ता (एटीएस) को बड़ी सफलता मिली है। एटीएस ने कुडू के कौवाखाप गांव से आतंकी संगठन से जुड़े अल्ताफ अंसारी के घर पर छापेमारी कर हथियार सहित कई आपत्ति जनक सामग्री बरामद की है। एटीएस की टीम ने अल्ताफ अंसारी के घर से दो कंट्री मेड हथियार बरामद किया है। हालांकि आतंकी संगठन से जुड़े अल्ताफ अंसारी फरार है, जिसकी धड़ पकड़ के लिए छापेमारी की जा रही है। एटीएस की टीम ने राज्य के 14 जगहों पर छापेमारी कर अलकायदा इंडियन सबकॉन्टिनेंट (एक्यूआईएस) आतंकी संगठन के कई आर्तांकियों को पकड़ा है। एटीएस की टीम ने लोहरदगा के कुडू, हजारीबाग सहित अन्य कई जिलों में 14 जगहों पर छापेमारी कर आर्तांकियों को गिरफ्तार किया है। लोहरदगा से हालांकि एक आतंकी फरार हो गया है लेकिन उसके घर से हथियार सहित कई आतंकी साहित्य आदि बरामद कर एटीएस की टीम अपने साथ ले गई। फरार आतंकि के परिवार से एटीएस ने पूछताछ किया है। उनकी योजना क्या थी, कब से और किसके संपर्क में थे, इसपर एटीएस के अधिकारी जानकारी ले रहे हैं। एटीएस को सूचना है कि अलकायदा इंडियन सब कांटिनेंट अंसारूल्लाह बांग्ला टीम के साथ इस्लामिक राज्य बनाने की फिराक में है। इसके लिए लगातार प्रयास कर रहा है। पूरे मामले की लोहरदगा एसपी हारिस बिन जमां ने पुष्टि की है। एसपी ने कहा की कुडू थाना क्षेत्र के कौवा खाप गांव में अलताफ अंसारी के घर पर एटीएस की टीम ने छापेमारी की है। मौके से अल्ताफ फरार हो गया है। अल्ताफ के घर से कई देशी हथियार मिले हैं। मामले को लेकर छानबीन की जा रही है।

मरीज के जीवन रक्षा को लेकर किया रक्तदान

गुमला। मारवाड़ी युवा मंच गुमला संस्था के सचिव संजीव मलानी जी ने बी पॉजिटिव ब्लड डोनेशन करके सदर अस्पताल में इलाजरत एक महिला की सहायता की मारवाड़ी युवा मंच गुमला रक्तदान प्रभारी रोहित खंडेलवाल ने बताया कि ब्लड बैंक में बी पॉजिटिव ब्लड उपलब्ध नहीं था और, स्थिति की गंभीरता को समझते हुए संजीव मलानी ने तुरंत ब्लड बैंक पहुंचकर रक्तदान किया। इनका कार्य बहुत ही प्रशंसनीय है।इस मौके पर लैब टेक्नीशियन मंजू किंडो संगीता कुजूर रोहित खंडेलवाल रक्तदान शिविर उपस्थित थे

नागपुरी केगायक व लेखक के निधन पर शोक व्यक्त

गुमला। अखिल भारतीय क्षत्रिय महासंघ के द्वारा नागपुरी के प्रसिद्ध गायक व लेखक रमोचित सिंह के निधन पर शोक व्यक्त किया। वह 68 वर्ष के थे। उनके निधन से क्षत्रिय समाज सहित नागपुरी भाषा संस्कृति को अपूर्णिया क्षति है। शोक व्यक्त करने वालों में जगनारायण सिंह, शांतनु सिंह, लाल केशव नाथ शाहदेव, विजय बहादुर सिंह, मनमोहन सिंह, सुरेश सिंह, रविंद्र सिंह, विकास सिंह, ओम शंकर सिंह, वशिष्ठ नारायण सिंह, निर्मल सिंह, अरुण जय सिंह, संजय सिंह, निरंजन सिंह, पूनम देवी, सत्यभामा देवी, योगेंद्र सिंह, सूरज देव सिंह, सुनील कुमार सिंह सहित अन्य के नाम हैं।

लाभुकों के बीच खाद्यान्न का 100 प्रतिशत वितरण सुनिश्चित करें : डीडीसी

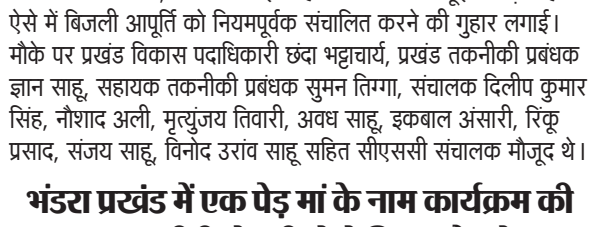

लोहरदगा। उप विकास आयुक्त दिलीप प्रताप सिंह शेखावत की अध्यक्षता में आपूर्ति विभाग की बैठक समाहरणालय सभागार में आयोजित हुई। बैठक में सर्वप्रथम जिला में एनएफएसए, हरा राशन कार्ड अंतर्गत प्राप्त खाद्यान्नव वितरण, चना दाल का वितरण, एनएफएसए अंतर्गत राज्य में लोहरदगा जिला में खाद्यान्न वितरण की स्थिति, प्रखण्डों में खाद्यान्न वितरण की स्थिति, हरा राशन कार्ड अंतर्गत वितरण किये गये खाद्यान्न की स्थिति, पीवीटीजी डाकिया योजना से संबंधित लाभुकों के बीच खाद्यान्न वितरण की स्थिति, धोती-लुंगी-साड़ी वितरण की स्थिति समेत अन्य की समीक्षा की गई। उप विकास आयुक्त द्वारा खाद्यान्न का 100 प्रतिशत वितरण, पीवीटीजी डाकिया योजना अंतर्गत छुटे हुए लाभुकों के बीच 100 प्रतिशत वितरण का निदेश जिला आपूर्ति पदाधिकारी को दिया गया तथा क्षेत्र में जहाँ नेटवर्क की दिक्कत हो रही नेटवर्क की सुविधा को ठीक करने के लिए भी कहा गया जिससे लाभुकों को परेशानी का सामना न करना पड़े। धोती-लुंगी-साड़ी का वितरण भी 100■ कराए जाने का निदेश दिया गया। बैठक में अपर समाहर्ता जितेंद्र मुण्डा, जिला आपूर्ति पदाधिकारी ज्ञान शंकर जायसवाल समेत अन्य उपस्थित थे।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना को लेकर बीडीओ ने की बैठक

कैरो। प्रखंड सभागार में गुरुवार को प्रखंड विकास पदाधिकारी छंदा भट्टाचार्य की अध्यक्षता में सीएससी संचालको के साथ बैठक हुई। जिसमें प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना 2024 को लेकर ऑनलाईन आवेदन करने के समय लगने वाली कागजात सहित कई अहम बिंदु पर जानकारी देते हुए प्रखंड विकास पदाधिकारी ने कहा कि जो आवेदक किसान आते हैं उनका आधार, बैंक पासबुक, लगान रसीद, मोबाईल नम्बर व वंशावली कागज लेकर उसे ऑनलाइन करना है। जिन किसानों का खुद के नाम पर जमीन हो तो सत्यापन की आवश्यकता नही है। और इसके लिए जिला कार्यालय द्वारा प्रतिदिन 700 आवेदन जमा करने का लक्ष्य रखा गया है जिसके लिए सभी सीएससी संचालको को जोर लगाकर काम करने की जरूरत है। बैठक में सीएससी संचालको ने भी अपनी समस्या बताते हुए कहा कि काम करते समय बिजली, नेट और कई तरह की समस्या से जूझना पड़ता है ऐसे में बिजली आपूर्ति को नियमपूर्वक संचालित करने की गुहार लगाई। मौके पर प्रखंड विकास पदाधिकारी छंदा भट्टाचार्य, प्रखंड तकनीकी प्रबंधक ज्ञान साहू, सहायक तकनीकी प्रबंधक सुमन तिग्गा, संचालक दिलीप कुमार सिंह, नौशाद अली, मृत्युंजय तिवारी, अवध साहू, इकबाल अंसारी, रिंकू प्रसाद, संजय साहू, विनोद उरांव साहू सहित सीएससी संचालक मौजूद थे।

भंडरा प्रखंड में एक पेड़ मां के नाम कार्यक्रम की शुरुआत, बीडीओ, सीओ ने किया पौधरोपण

भंडरा। प्रखंड मुख्यालय में गुरुवार को एक पेड़ मां के नाम कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें लोगों को पर्यावरण पर जानकारी देते हुए पर्यावरण संरक्षण पर जानकारी दी गई है। वहीं आयोजित कार्यक्रम में बीडीओ प्रतिमा कुमारी ,सीओ दुर्गा कुमार सहित उपस्थित कर्मियों और जनप्रतिनिधियों ने पौधा रोपण किया। कार्यक्रम में लोगों से अपने आसपास अधिक से अधिक वृक्ष लगाने को कहा गया है। मौके पर बीडीओ प्रतिमा कुमारी ने लोगों को जीवन में वृक्षों के महत्व पर जानकारी दी. और उपयोगिता को बताई गई। बीडीओ ने अपने संबोधन में कहा कि सबको संकल्प लेना चाहिए की अपने आसपास जितना अधिक पेड़ लगा सकें लगाएं, क्योंकि वृक्ष हमें जीवन प्रदान करता है। सीओ दुर्गा कुमार ने लोगों को जागरूक करते हुए कहा कि पौध रोपण करने का मुख्य उद्देश्य पर्यावरण को संतुलित करना है और पर्यावरण के सुरक्षित रहने से ही वातावरण संतुलित रह सकता है। इस मौके पर सीडीपीओ नंदी रानी, नीलम मिंज,मनीष अग्रवाल,सुहेल अमीन, बजरंग भगतसहित तमाम कर्मचारी और जनप्रतिनिधि मौजूद थे।

लगातार तीसरे दिन अनशन पर बैठे शिक्षक संघ के सदस्य

- प्रोन्नति की मांग को लेकर उपायुक्त से हुई सकारात्मक वार्ता को संघ ने सराहा

खबर मन्त्र संवाददाता

गुमला। शिक्षक समन्वय समिति जिला गुमला के तत्वाधान में प्रोन्नति की मांग को लेकर आयोजित क्रमिक अनशन के तीसरे दिन गुरुवार को संघ कू सदस्य शिवजतन साहू, लालमोहन साहू ,जनार्दन प्रसाद साहू, सुरंजन कुमार, सुमन बिलुंग अनशन पर बैठे हैं।

उल्लेखनीय है कि गुमला जिला के शिक्षक 17 अगस्त से प्रोन्नति की मांग को लेकर चरण वद्ध रूप से आंदोलनरत हैं ,परंतु जिला शिक्षा अधीक्षक गुमला के नकारात्मक कारवाई के कारण शिक्षकों के जायज मांगों पर कोई भी सकारात्मक पहल नहीं हो सका है। जिससे जिले के सभी शिक्षकों में आक्रोश है। इसी क्रम में 21 अगस्त को संघ के सदस्य मामले पर संज्ञान लेते हुए जिला शिक्षा अधीक्षक की उपस्थिति में उनसे वार्ता की।

उक्त वार्ता के क्रम में जिला शिक्षा अधिकारी गुमला के द्वारा विभिन्न प्रकार के व्यवधान बनाकर प्रोन्नति बाधित रखने का प्रयास किया जाता रहा है। जो उनकी पूर्वाग्रह की मानसिकता को परिलक्षित करता है। परंतु जिले के मुखिया उपायुक्त सह अध्यक्ष जिला शिक्षा स्थापना समिति गुमला द्वारा संबंधित नियमावली एवं उप नियमों पर सम्यक विचारोपरांत जिला शिक्षा अध्यक्ष गुमला को स्पष्ट रूप से निदेशित किया गया है कि प्रकाशित वरीयता सूची के आधार पर आवश्यक अभिलेख तैयार कर अभिलंब आरडीडीई रांची को भेजने का कार्रवाई करें। ताकि शिक्षकों को जल्द से जल्द प्रोन्नति प्रदान की जा सके। उपायुक्त के सकारात्मक पहल का संघ स्वागत करता है। वहीं अनशन को विभिन्न सामाजिक एवं राजनीतिक संगठनों द्वारा लगातार समर्थन मिल रहा है एवं विभिन्न कर्मचारी संगठनों के द्वारा समर्थन प्राप्त हो रहा है।

इस अवसर पर निरंजन कुमार, सदय प्रताप जायसवाल, मंगलेश्वर उरांव ,जीवन नाथ तिवारी, नीरज कुमार,पवन कुमार केसरी, मनोज कुमार तिवारी , मंगल उरांव , गंदूर राम, राकेश , राजदीप सिंह, सुभाष कुमार, सरिता ज्योति मिंज , अब्दुर रज्जाक अंसारी, देवधारी उरांव,सहित विभिन्न प्रखंडों से आए हुए शिक्षक शिक्षिकाओं ने अपने विचार व्यक्त किए मंच का संचालन सुरंजन कुमार के द्वारा किया गया ।

रोजगार और आर्थिक विकास के लिए 2024 में लागू हो सकता है स्कूलों में ब्लू करिकुलम

कुसुम पी

समुद्र के जरिये अर्थव्यवस्था को गति देने पर केंद्र सरकार के जोर के बीच विशेषज्ञों और शिक्षाविदों ने स्कूल-कॉलेजों में समुद्र पर केंद्रित कोर्स शुरू करने की मांग उठाई है। उनका कहना है कि तीन तरफ से भारत को घेर रहा समुद्र आजीविका का बहुत बड़ा साधन बन सकता है, इसलिए नई पीढ़ी को बचपन से ही उसके बारे में पढ़ाकर रोजगार के नए साधन दिए जा सकते हैं।

राजधानी में 9 दिसंबर को ह्यसाउथ एशियन ब्लू करिकुलम फॉर मॉडर्न एजुकेशनः इंडिया एंड बिम्स्टेक राउंडटेबल सम्मेलन में भारत, नेपाल, मालदीव, श्रीलंका, म्यांमार, थाईलैंड, भूटान, बांग्लादेश, तिब्बत जैसे बिम्सटेक (बे ऑफ बंगाल इनीशिएटिव फॉर मल्टी-सेक्टोरल टेक्निकल एंड इकनॉमी कोऑपरेशन) देशों के प्रतिनिधियों और विशेषज्ञों ने के सदस्य देशों के प्रतिनिधियों और विशेषज्ञों ने भारत के लिए समुद्र की अहमियत बताते हुए पाठ्यक्रम में इसे शामिल करने की बात कही। उनका कहना था कि भारत का 95 फीसदी व्यापार समुद्र के रास्ते ही होता है और समुद्री उत्पादों से लाखों लोगों को आजीविका मिलती है। रोजगार और आर्थिक विकास के इतने बड़े साधन को बढ़ावा देने के लिए स्कूली पाठ्यक्रमों में उसे शामिल करना फायदेमंद रहेगा।

गौरतलब है कि केंद्र सरकार समुद्र के रास्ते अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए कई पहल कर रही है और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अक्टूबर में ग्लोबल मैरिटाइम इंडिया समिट 2023 के दौरान समुद्र पर आधारित भारत की ब्लू इकॉनमी के लिए दीर्घकालिक खाका भी पेश किया। सरकार का जोर बेशक बंदरगाह विकसित करने, जहाज बनाने, पर्यटन बढ़ाने और समुद्र के रास्ते अंतरराष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा देने पर है मगर इसे मुमकिन करने के लिए कम उम्र से ही लोगों को समुद्र की अहमियत बताना जरूरी है।

सेंटर फॉर सिविल सोसायटी और फ्रेडरिक न्यूमन फाउंडेशन संस्थाओं द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित सम्मेलन में दिल्ली सरकार के मुख्य शिक्षा सलाहकार शैलेंद्र शर्मा ने कहा कि दिल्ली सरकार स्कूल पाठ्यक्रम में लगातार सुधार की कोशिश कर रही है, जो पिछले कई सालों से किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा, ह्यब्लू करिकुलम तैयार करने की यह पहल वाकई सराहनीय है। ऐसा करिकुलम तैयार किया जाता है तो इसे दिल्ली में लागू करने की संभावनाएं जरूर खंगाली जाएंगी।

फ्रेडरिक न्यूमन फाउंडेशन के दक्षिण एशिया प्रमुख डॉ कर्स्टन क्लेन ने महासागरों के संरक्षण पर विशेष ध्यान देते हुए आर्थिक विकास के माध्यम तलाशने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि 7517 किलोमीटर लंबी तटरेखा, समुद्र तट के 150 किमी के दायरे में 3.3 करोड़ लोगों की आबादी और 18 फीसदी आबादी 72 तटीय जिलों में होने के कारण भारत के लिए समुद्र की बड़ी अहमियत है। देश का 95 फीसदी व्यापार समुद्र के रास्ते होता है और सुरक्षा के लिहाज से भी समुद्र बहुत महत्त्वपूर्ण है।

डॉ क्लेन ने खास तौर पर तटीय राज्यों के युवाओं को समुद्री अर्थव्यवस्था में मौजूद व्यापक अवसर और जलवायु परिवर्तन के कारण आने वाली चुनौतियां बताने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि आज के लाखों छात्र कल अपनी आजीविका के लिए समुद्र से जुड़े व्यवसायों पर निर्भर हो सकते हैं। इसलिए उन्हें समुद्री संसाधनों के दोहन में संवेदनशीलता बरतना भी सिखाना होगा, जो कारगर तरीके से हो सकता है।

सम्मेलन में एनसीईआरटी के शैक्षणिक सर्वेक्षण विभाग की प्रमुख डॉ इंद्राणी भादुड़ी, यूनेस्को की शिक्षा विशेषज्ञ जॉयसी पोअन, विश्व बैंक के सलाहकार संजय गुप्ता, सेंटर फॉर एन्वायरमेंट एजूकेशन की निदेशक डॉ संस्कृति मेनन और विभिन्न शिक्षाविदों ने हिस्सा लिया।

उत्तर प्रदेशः कैसे बना देश की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था

शिवेश प्रताप सिंह

योगी ने कभी बीमारू माने जाने वाले उत्तर प्रदेश को विकास की दौड़ में अग्रणी स्थान पर ला खड़ा किया है। विश्लेषण मंच एसओआईसी के अनुसार सेंसेक्स तथा क्रेडिट लियोनिस सिक्योरिटीज एशिया आधारित रिपोर्ट्स के हिसाब से देश की जीडीपी में हिस्सेदारी के मामले में उत्तर प्रदेश दूसरे स्थान पर आ गया है। देश की कुल जीडीपी में महाराष्ट्र 15.7 प्रतिशत जीडीपी योगदान के साथ पहले पायदान पर है तो वहीं उत्तर प्रदेश 9.2 प्रतिशत जीडीपी के साथ दूसरे स्थान पर है। बीते कुछ समय से तमिलनाडु से कांटे की टक्कर में उत्तर प्रदेश को अब बढ़त मिली है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 2027 तक प्रदेश की अर्थव्यवस्था को वन ट्रिलियन इकोनॉमी बनाने का लक्ष्य रखा है। योगी का उत्तरप्रदेश कैसे आज से सात साल पहले असंभव से लगने वाले इस लक्ष्य को हासिल कर आगे बढ़ते हुए भारत के जीडीपी योगदान में प्रथम स्थान हासिल करने हेतु निरंतर प्रगतिशील है। किसी भी प्रदेश के लिए ऐसे बड़े लक्ष्य को हासिल करने के लिए मात्र घरेलू बाजार की निर्भरता को खत्म कर अपने निर्यात से पूरी दुनिया में व्यापारिक पैठ बनाने की आवश्यकता होती है। घरेलू बाजारों की मांग एवं क्रय शक्ति सीमित होती है जो एक सीमित राजस्व ही पैदा करने में सक्षम होती है। एक्सपोर्ट के माध्यम से एक विशालकाय बाजार के साथ अच्छे लाभ एवं राजस्व प्राप्ति का रास्ता भी खुलता है।

उत्तर प्रदेश का निर्यात पिछले छह वर्षों में लगभग दोगुना हो गया है। उत्तर प्रदेश के राज्य निर्यात प्रोत्साहन ब्यूरो के डेटा के अनुसार 2016-17 में प्रदेश का निर्यात 84,000 करोड़ रुपये का था जो 2022-23 में बढ़कर दोगुने से अधिक यानी 1,74,000 करोड़ रुपये का हो गया है। वित्त वर्ष 2023-24 में सरकार द्वारा दो लाख करोड़ रुपये के निर्यात का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। यह सूचनाएं सिद्ध करती हैं कि कभी बीमारू राज्य का टैग लेकर घूमने वाला उत्तर प्रदेश योगी सरकार की क्रांतिकारी नीतियों के कारण भारत का नया एक्सपोर्ट हब बनने जा रहा है।

उत्तर प्रदेश का 60 प्रतिशत निर्यात दुनिया के 10 देशों वियतनाम, नीदरलैंड, फ्रांस, चीन, मिश्र, अमेरिका, संयुक्त अरब अमीरात, नेपाल, यूनाइटेड किंगडम तथा जर्मनी को होता है। 2022-23 में सबसे अधिक निर्यात 32,800 करोड़ अमेरिका को, 14,300 करोड़ संयुक्त अरब अमीरात को तथा लगभग दस-दस हजार करोड़ जर्मनी एवं यूनाइटेड किंगडम को हुआ। उत्तर प्रदेश से वर्तमान में सबसे अधिक निर्यात की जाने वाली वस्तुओं में इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रॉनिक वस्तुएं, दूरसंचार उपकरण, कॉटन, कृत्रिम फाइबर आदि के साथ गेहूं, चावल, कालीन एवं हस्तशिल्प भी महत्वपूर्ण निर्यात सामग्री है। परंतु चौंकाने वाली बात यह है कि इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रॉनिक वस्तुएं उत्तर प्रदेश के संपूर्ण निर्यात का 18.9 प्रतिशत है। इसके बाद कपड़ा उद्योग 9.5 प्रतिशत का योगदान करता है।

एक्सपोर्ट एक्सीलेंस वाले शहरों में ऐसे शहरों को चयनित किया जाता है जिसकी उत्पादन सीमा 750 करोड रुपये से अधिक की हो और निर्यात क्षमता भविष्योन्मुख हो। आज भारत भर में केंद्र सरकार के द्वारा चिह्नित किए गए 43 सेंटर आफ एक्सपोर्ट एक्सीलेंस हैं। इनमें 12 सेंटर अकेले उत्तर प्रदेश में हैं जो इस प्रदेश के निर्यात सामर्थ्य को बनाते हैं। उत्तर प्रदेश चारों तरफ से स्थलीय एवं पहाड़ी सीमाओं के बीच स्थित है।सामान्यत या निर्यात प्रोत्साहन हेतु समुद्री सीमा किसी भी प्रदेश को बेहद महत्वपूर्ण बना देती है लेकिन उत्तर प्रदेश के पास कोई समुद्री सीमा न होते हुए भी 12 सेंटर आफ एक्सपोर्ट एक्सीलेंस की मौजूदगी प्रदेश सरकार के विकास के संकल्प को स्वयं बताती है।

जलमार्ग से सस्ते यातायात का लाभ तटीय प्रदेशों को मिलता है लेकिन इस चुनौती के समाधान के लिए भी प्रदेश की योगी सरकार ने गंभीरता से कार्य करते हुए उत्तर प्रदेश के उद्योगों को जलमार्ग से जोड़ने के लिए कई महत्वपूर्णक कदम उठाए हैं। समुद्री बंदरगाहों की अनुपस्थिति में निर्यात की सुगमता के लिए उत्तर प्रदेश सरकार प्रदेश के भीतर शुष्क बंदरगाहों का एक मजबूत नेटवर्क खड़ा करने के लिए कार्यरत है। इसी क्रम में योगी सरकार ने सिंगापुर के स्टार कंसोर्सियम तथा संयुक्त अरब अमीरात के सर्राफ ग्रुपके साथ-साथ हिंदुस्तान पोर्ट प्राइवेट लिमिटेड व अमेरिका की दो कंपनियों मोबिलिटी इंफ्रास्ट्रक्चर तथा बेस्ट बेट्रकिंग ग्रुप के साथ एमओयू साइन किया है।

वर्तमान में मुरादाबाद रेल लिंक्ड जॉइंट डोमेस्टिक एक्सिमट मिनल, रेल लिंक्ड प्राइवेट फ्रेट टर्मिनल तथा कानपुर व दादरी में शुष्क बंदरगाह सफलतापूर्वक कार्य कर रहे हैं। जलमार्ग के लिए वाराणसी से पश्चिम बंगाल के हल्दिया तक जलराज मार्ग संख्या एकप्रारंभ हो गया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का ध्यान उत्तर प्रदेश के पारंपरिक उद्योगों के संरक्षण एवं संवर्धन के द्वारा निर्यात को बढ़ाने पर है। इन पारंपरिक उद्योगों में भी दो ऐसे क्षेत्र टेक्सटाइल एवं इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण हैं जिसमें उत्तर प्रदेश के पास एक बहुत बड़ा अवसर है।

उत्तर प्रदेश भारत का तीसरा सबसे बड़ा टेक्सटाइल उत्पादन करने वाला प्रदेश है तथा राष्ट्रीय उत्पादन में 13.24 प्रतिशत का योगदान करता है।उत्तर प्रदेश में लगभग ढाई लाख हैंडलूम बुनकर तथा चार लाख 21 हजार पावरलूम बुनकर मौजूद हैं। उत्तर प्रदेश सरकार इस क्षेत्र में निर्यातको और बढ़ाना चाहती है साथ ही सरकार का लक्ष्य है कि इस उद्योग से जुड़ा हुआ अंतिम व्यक्ति भी निर्यात से लाभान्वित हो सके क्योंकि कपड़ा उद्योग कम पूंजीनिवेश तथा अधिक मानवीय श्रम आधारित उद्योग है। 10 हजार की एक सिलाई मशीन दो लोगों को रोजगार दे सकती है। यही कारण है कि कपड़ा उद्योग न केवल निर्यात प्रोत्साहन कर सकता है अपितु बेरोजगारी की विकराल समस्या का भी समाधान कर सकता है।

टेक्सटाइल के क्षेत्र में उत्तर प्रदेश का निर्यात लगातार बढ़ रहा है। यह योगदान उत्तर प्रदेश के चार जिलों से हो रहा है। नोएडा के रेडीमेड कपड़े, मेरठ का स्पोर्टवेयर, कानपुर के बच्चों के कपड़े तथा लखनऊ के पारंपरिक चिकन इसमें अपना अहम योगदान दे रहे हैं। केंद्र सरकार के साथ मिलकर उत्तर प्रदेश सरकार इन्हीं जनपदों में टेक्सटाइल उद्योग के निर्यात प्रोत्साहन पर ध्यान दे रही है। वर्तमान में उत्तर प्रदेश में 58 स्पिनिंग मिल्स तथा 74 टेक्सटाइल मिलें चल रही हैं। कपड़ा उद्योग के निर्यात प्रोत्साहन से उत्तर प्रदेश में लगभग 5 लाख लोगों को रोजगार मुहैया होगा।

वैश्विक स्तर पर चीन का शेनझेन शहर इलेक्ट्रॉनिक विनिर्माण का सबसे बड़ा ठिकाना है।पूरे विश्व का 90% इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद इसी शहर की देन है। इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों के प्रति बनते रुझानों के कारण अब प्रदेश केसाथ-साथ केंद्र सरकार भी उत्तर प्रदेश को चीन के इलेक्ट्रॉनिक विनिर्माण के एकाधिकार के प्रत्युत्तर में उत्तर प्रदेश को इलेक्ट्रॉनिक विनिर्माण के क्षेत्र में वरीयता दे रही है। वित्त वर्ष 2022-23 में उत्तर प्रदेश ने 29,699 करोड़ रुपये का इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद निर्यात किया। केंद्र सरकार के मंत्री राजीव चंद्रशेखर के अनुसार सरकार ने वित्त वर्ष 2025-26 तक 300 बिलियन डॉलर मूल्य के विनिर्माण का लक्ष्य रखा है। इसका एक तिहाई लक्ष्य यानी 100 बिलियन डॉलर उत्तर प्रदेश द्वारा पूरा किए जाने की अपेक्षा है।वर्तमान में उत्तर प्रदेश भारत के कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों का सबसे बड़ा निर्यातक है। साथ ही इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम डिजाइन एवं विनिर्माण की 196 कंपनियां उत्तर प्रदेश में ही स्थापित हैं।

(लेखक, स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

बिहार से अलग होकर भी विकास की बाट जोहता झारखंड

रानी राज

बिहार से अलग होकर झारखंड राज्य बने 23 वर्ष से अधिक हो गये, लेकिन आज भी वे सपने अधूरे हैं जो 'झारखण्ड अलग राज्य' आंदोलन के आधार बने थे । राज्य अलग बना लेकिन आज भी रोजगार हो या पढ़ाई , यहाँ के लोगों को राज्य से बाहर जाना पड़ता है । यहां पर रोजगार के अभाव के कारण लोगों का यहाँ से पलायन मजबूरी बन गया है। उच्च और तकनीकी शिक्षा के लिए बारहवीं के बाद बहुतायात में बच्चे दिल्ली , महाराष्ट्र या दक्षिण भारत के राज्यों में जा रहे हैं। पलायन का मुख्य कारण शिक्षा के क्षेत्र में विकास नहीं होना एवं राज्य में रोजगार सृजन का अभाव है। साथ ही झारखंड में मजदूरी दर कम है , जबकि औद्योगिक विकास वाले राज्यों में मजदूरी दर अधिक है। अगर साल में एक बार भी श्रमिक वहां चले जाते हैं तो उनके पास अच्छी बचत हो जाती है। देश में आंतरिक पलायन के अलावा झारखंड के श्रमिक अब सऊदी अरब, मलेशिया, तजाकिस्तान, भूटान, म्यांमार, नेपाल, श्रीलंका, नाइजीरिया, ईरान, कुवैत, दुबई, कजाकिस्तान

झारखंड से किए जाने वाले पलायन और दूसरे राज्यों में होने वाले पलायन में एक आधारभूत अंतर यह है कि यहां के युवक- युवतियां पलायन कर अपना भूख मिटाते हैं जबकि अन्य राज्यों से पलायन करने वाले श्रमिक अपने लिए और परिवार के लिये संसाधन जुटाते हैं।

आदि देशों में भी जा रहे हैं। झारखंड से किए जाने वाले पलायन और दूसरे राज्यों में होने वाले पलायन में एक आधारभूत अंतर यह है कि यहां के युवक-युवतियां पलायन कर अपना भूख मिटाते हैं जबकि अन्य राज्यों से पलायन करने वाले श्रमिक अपने लिए और परिवार के लिये संसाधन जुटाते हैं। झारखंड में पलायन के माध्यम में मानव तस्करी और जॉब कंसल्टेंसी/प्लेसमेंट एजेंसी की भूमिका भी कई बार चर्चा का विषय भी बनता रहा है।झारखंड में इन तस्करी के शिकार लोगो में अधिकतर आदिवासी लड़कियां होती हैं। पलायन व मानव तस्करी विकास से जुड़े कई विरोधाभासी मुददों में से एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। न्यूज पेपरों के आकड़ो के अनुसार झारखंड में मानव तस्करी का शिकार होने वाली बच्चियों में 90 फीसदी आदिवासी हैं। महिलाएं पलायन हो रहे समुदाय में सबसे बड़ा हिस्सा हैं और वे लिंग आधारित हिंसा और घरेलू हिंसा का भी सबसे ज्यादा शिकार होती हैं। जलवायु परिवर्तन ने भी झारखंड से पलायन को प्रेरित किया है। वनों की कटाई और खेतों की घटती उत्पादकता ने यहाँ के निवासियों को दिहाड़ी मजदुर बनने को मजबूर किया है। लोग भूख की आग में आसानी से मानव तस्करी के चपेट में आ जा रहे हैं। मानव तस्करी का एक प्रमुख उद्देश्य महानगरों में इन आदिवासी लड़कियों से घरेलू काम करवाना होता है। जहाँ इनके साथ गुलामों जैसा व्यव्यहार किया जाता है।

झारखंड से पलायन और मानव तस्करी की समस्या कोई आर्थिक नहीं बल्कि आर्थिक - सामाजिक और प्रशासनिक समस्या है। रोजगार सृजन के साथ प्रशासनिक स्तर पर गहन जाँच और निगरानी ही मानव तस्करी को रोक सकती है। कई बार तो आम लोग शिकायत तक नहीं कर पाते है और चुपचाप शोषण का शिकार हो जाते है। समाज को भी सशक्त एवं जागृत रहने की आवश्यकता है ताकि मानव तस्करी के एजेंट गावों में घुस न सके और न ही कोई बहला - फुसला कर उन्हें शहरों में ले जा सके। समाज को उस आदिम व्यवस्था को अपनाने की आवश्यकता है जिसमें सभी एक - दूसरे की सहायता कर खुशहाल रहते हैं।

(ऑडिट ऑफिसर, रजौली, नवादा, बिहार)

खुले खनन से बेहतर है भूमिगत कोयला खनन

अन्नू अंबालिका

चालू वित्त वर्ष में अक्टूबर तक नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन 15.7 अरब यूनिट वृद्धि के साथ सालाना आधार पर 139.76 अरब यूनिट पहुंच गया।

भारत के ऊर्जा भविष्य को सुरक्षित बनाने की दृष्टि से देखें तो भूमिगत विधि से कोयला खनन पर्यावरण की दृष्टि से एक बेहतर विकल्प है। भारत के ऊर्जा परिदृश्य में नाटकीय परिवर्तन देखने को मिल रहा है। हम तेजी से सौर और पवन ऊर्जा जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्त्रोतों को अपनाने की दिशा में बढ़ रहे हैं। बदलाव की इस प्रतिस्पर्धा में हरित हाइड्रोजन, पंपयुक्त भंडारण जलविद्युत, गुरुत्व ऊर्जा भंडारण एवं ऊर्जा भंडारण प्रणालियां आदि शामिल हैं।

कार्बन उत्सर्जन तीव्रता को कम करने के लिए देश की राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (एनडीसी) को ध्यान में रखते हुए सामूहिक उद्देश्य प्रदूषणकारी जीवाश्म ईंधन को त्यागना है। यही वजह है कि कोयला निशाने पर है।

जलवायु परिवर्तन के संकट को देखते हुए हरित ऊर्जा की तरफ बढ़ना स्वागतयोग्य पहल है, लेकिन इसमें एक बहुत बड़ी अड़चन है। भारत के विविध ऊर्जा स्त्रोतों में कोयला प्रमुख स्थान रखता है। देश के ऊर्जा क्षेत्र में बड़ा हिस्सा हासिल करने के लिए नवीकरणीय ऊर्जा स्त्रोत कड़ी प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं।

चालू वित्त वर्ष में अक्टूबर तक नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन 15.7 अरब यूनिट वृद्धि के साथ सालाना आधार पर 139.76 अरब यूनिट पहुंच गया। इसके बावजूद देश के कुल 1,045.85 अरब यूनिट बिजली उत्पादन में इसकी हिस्सेदारी मात्र 13.36 फीसदी ही है। कोयले से बनने वाली ऊर्जा की हिस्सेदारी नवीकरणीय ऊर्जा के मुकाबले 5.24 गुना अधिक यानी 732.09 अरब यूनिट है।

नीति आयोग एवं कुछ स्वतंत्र अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों के अनुमान के मुताबिक भारत में कोयले का इस्तेमाल 2030 तक चरम पर होगा और उसके अगले एक दशक तक यह इसी स्तर पर बना रहेगा। यह स्थिति तब है जब भारत विश्व की शीर्ष अर्थव्यवस्थाओं में सबसे तेजी से नवीकरणीय ऊर्जा अपनाने वाला देश है।

यद्यपि कोयले की कीमत पर नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता में वृद्धि होने की आशा की जा रही है और देश में कुल ऊर्जा मांग लगातार बढ़ रही है। इसका मतलब यह हुआ कि आवश्यक कोयले की मात्रा तो बढ़ जाएगी, लेकिन ऊर्जा हिस्सेदारी में इसका प्रतिशत घट जाएगा।

यदि भारत को अपने राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान को हासिल करना है, तो उसके पास दो विकल्प हैं- या तो वह इसके इस्तेमाल में तेजी से कमी लाए अथवा पर्यावरण अनुकूल खनन प्रक्रिया अपनाए। पहला विकल्प तो लगभग असंभव है, क्योंकि इस मोड़ पर कोयले का उपयोग रोक देने से देश के ऊर्जा क्षेत्र के लिए बड़ा संकट खड़ा हो जाएगा।

इसका उपयुक्त तरीका पर्यावरणीय अनुकूल खनन यानी भूमिगत खनन करना ही बचता है। खुली खनन पद्धति की अपेक्षा भूमिगत खनन के बहुत अधिक फायदे हैं। पर्यावरण के स्तर पर भी यह अधिक स्वच्छ तरीका है। दूसरा, इसके लिए अधिक भूमि खुदाई की जरूरत नहीं होती और भूमि अधिग्रहण के झंझट से बचने के साथ-साथ वनों की रक्षा भी होती है। इस तरीके को अपनाकर कृषि भूमि को बचाया जा सकता है।

सबसे बड़ी बात, यह समाज अनुकूल भी है, क्योंकि इसमें लोगों को सामूहिक विस्थापन का सामना नहीं करना पड़ता और पुनर्वास एवं मुआवजे जैसी प्रक्रियाओं में नहीं जाना पड़ता। साथ ही रोजी-रोटी के पारंपरिक स्रोत भी खत्म नहीं होते। विशेष यह कि भूमिगत खनन से मिलने वाला कोयला बेहतर गुणवत्ता वाला होता है और इससे उच्च श्रेणी के कोयले का आयात कम करने में मदद मिलती है।

भारत में मुख्यतः खुली विधि से कोयला खनन होता है। वर्ष 2022 में पूरी दुनिया में कुल 8.5 अरब टन कोयले का उत्पादन हुआ। इसमें भूमिगत विधि से निकाले गए कोयले की मात्रा लगभग 55 फीसदी थी। इसके उलट, भारत के कोयला उत्पादन में भूमिगत की मात्रा केवल चार फीसदी ही रही। लेकिन, हमेशा से ऐसी स्थिति नहीं रही है।

वर्ष 1975 में देश की प्रमुख कोयला उत्पादक कंपनी कोल इंडिया लिमिटेड (सीआईएल) की स्थापना के बाद पहले दशक में भूमिगत विधि से अधिक उत्पादन हुआ, बजाय कि खुली पद्धति के। वित्त वर्ष 1985 में पहली बार खुली विधि का पलड़ा भारी हो गया जब इससे उत्पादित कोयले की मात्रा 7.03 करोड़ टन हो गई और भूमिगत विधि से उत्पादित कोयले की मात्रा 6.03 करोड़ टन रह गई।

इसके बाद यह खाई पाटी नहीं जा सकी। बीते 38 वर्षों में सीआईएल का खुली विधि से कोयला उत्पादन वित्त वर्ष 2023 की समाप्ति तक 9.64 गुना बढ़कर 67.77 करोड़ टन पहुंच गया, इसके विपरीत भूमिगत विधि से कोयला उत्पादन 57.8 प्रतिशत घटकर मात्र 2.55 करोड़ टन ही रह गया।

इस गिरावट के प्रमुख कारण लगातार घाटे की ओर बढ़ता उत्पादन, भूमिगत खनन प्रक्रिया की लंबी अवधि, कुशल श्रमिकों का अभाव, स्वदेशी उपकरण बनाने वालों की अनुपलब्धता और विभागीय उत्पादन लागत का अधिक होना आदि रहे हैं।

परिवहन और सांख्यिकीय दृष्टि से वैश्विक औसत तक पहुंचना तो अब असंभव लगता है, लेकिन वित्त वर्ष 2030 तक भूमिगत विधि से कोयला उत्पादन को चार गुना बढ़ाकर 10 करोड़ टन करने के लिए सीआईएल ने महत्त्वाकांक्षी योजना तैयार की है।

बेशक इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए कंपनी को भारी चुनौतियों से गुजरना होगा, फिर भी एक केंद्रित नीति ढांचा और बड़े पैमाने पर पर्यावरण अनुकूल उत्पादन प्रौद्योगिकी उपलब्ध होने पर यह संभव हो सकता है। घरेलू विनिर्माण और मेक इन इंडिया को बढ़ावा देने के लिए खनन उपकरणों का मानकीकरण भी इसमें खासी मदद कर सकता है।

भूमिगत खनन विधि को जो चीजें व्यावहारिक बनाती हैं, उनमें कुशल एवं प्रशिक्षित ऑपरेटर, ठेकेदारों को आउटसोर्सिंग, कुशल खदान डेवलपर और ऑपरेटर एवं बड़े पैमाने पर उत्पादन करने वाली प्रौद्योगिकी की उपलब्धता शामिल है। इसमें भारतीय हालात के अनुकूल लगातार खनन करने वाले खनिक, मौजूदा उपलब्ध बुनियादी ढांचे के जरिये कम लागत पर निकासी के लिए पंच एंट्री विधि, भूमि अधिग्रहण और पुनर्वास प्रक्रियाओं जैसे मुद्दों से छुटकारा दिलाने उच्च तकनीक से लैस वॉल मशीनें भी जोड़ी जा सकती हैं। साथ-साथ पेस्ट फिल तकनीक भी लाभप्रद होती है।

भूमिगत खनन विधि में खाली हुई जगह को भरने के लिए पारंपरिक रेत के बजाय फ्लाई ऐश का इस्तेमाल किया जाता है। भूमिगत खनन विधि धरातल पर किसी प्रकार की अड़चन पैदा किए बिना चलती है।

खनन से पैदा हुए खड्डों में राख भराव का काम भी बहुत ही सावधानीपूर्वक किया जाता है। खुली विधि और भूमिगत विधि से 10 लाख टन कोयला उत्पादन में पीएम10 के उत्सर्जन का तुलनात्मक आकलन सीआईएल की परामर्शदाता कंपनी सेंट्रल माइन प्लानिंग ऐंड डिजाइन इंस्टीट्यूट और यूनाइटेड स्टेट एनवायरनमेंटल प्रोटेक्शन एजेंसी ने किया था।

वृक्ष विहीन पहाड़ों पर ड्रोन से सीडबॉल का छिड़काव

एजेंसी

नवादा। जिले के रजौली में गुरुवार को बिहार सरकार के वन पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री डॉ प्रेम कुमार ने वन क्षेत्र के रतनपुर और मुरली पहाड़ पर ड्रोन के माध्यम से सीड बॉल का छिड़काव किया। इस दौरान वन पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री डॉ प्रेम कुमार ने बताया कि वृक्ष विभिन्न पहाड़ों को हरा-भरा करने के उद्देश्य से ड्रोन के माध्यम से सीड बॉल का छिड़काव किया गया ताकि आने वाले दिनों में वृक्षविहीन पहाड़ पूरी तरह से हरा भरा दिखने लगे सरकार के पायलट प्रोजेक्ट अरण्य एक आकाशीय वृक्षारोपण के माध्यम से वृक्ष विभिन्न पहाड़ों को हरा भरा करने का लक्ष्य रखा है ताकि जलवायु परिवर्तन जैसे गंभीर मुद्दा को हरियाली के माध्यम से समाप्त किया जा सके।

नई रेल लाइन पर पहली बार गुजरी डीआरएम की स्पेशल गाड़ी

पश्चिम चंपारण (बगहा)। बगहा-नरकटियागंज-गोरखपुर रेल खंड के भैरोगंज से हरिनगर नई दोहरी रेल लाइन का निरीक्षण करने भैरोगंज रेलवे स्टेशन पर वृहस्पतिवार को कोलकाता से सीआरएस सुमय मि??त्रा पहुंचे। सीआरएस के भैरोगंज पहुंचने से पहले स्टेशन पर भारी संख्या में आरपीएफ के अधिकारी,जवान रेल अधिकारी पहुंच चुके थे।स्टेशन को गुब्बारे से सजाया गया था।सीआरएस मित्रा पहुंचने के बाद, सबसे पहले स्टेशन पैनल में पहुंचे,जहां से गाड़ियों का संचालन किया जाता है।उन्होंने विस्तृत रूप से पैनल का जांच किया। पैनल रूम से निकलने के बाद सीआरएस दोहरी नई रेल लाइन पर हो रहे पूजा स्थल पर पहुंचे।वहां से मोटर ट्रॉली पर सीआरएस समेत सभी पदाधिकारी सवार हो भैरोगंज से हरिनगर के लिए रवाना हुए। बताया जाता है कि निरीक्षण करने के बाद सीआरएस के द्वारा हरी झंडी देने पर नई रेल लाइन पर गाड़ियों का संचालन आरंभ कर दिया जाएगा।भैरोगंज से हरिनगर के लिए पहली बार डीआरएम की स्पेशल गाड़ी नई रेल लाइन से गुजरी और हरिनगर पहुंची। खबर लिखे जाने तक गाड़ियों के संचालन के लिए सीआरएस की ओर से हरी झंडी नहीं मिली थी।

बाबा झाड़िखंड मंदिर में श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन

सहरसा। शहर के नया बाजार स्थित बाबा झाड़िखंड मंदिर में स्वर्गीय दुलारचंद साह की धर्मपत्नी कौशल्या देवी के सौजन्य से चल रही श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन 22 अगस्त से 28 अगस्त से शुरू किया गया है इस 7 दिवसीय श्रीमद् भागवत कथा के पहले दिन गुरुवार को कथा व्यास पंडित जगन्नाथ झा के द्वारा रेणु प्रेस के निदेशक नीतीश साह के सहयोग से भागवत कथा की पूजा अर्चना किया। इस अवसर पर अन्य कई पंडितों ने विधि विधान से पूजा अर्चना भागवत कथा का शुभारंभ किया है। कथावाचक ने कहा कि श्रीमद्भागवत कथा मनुष्य की सभी इच्छाओं को पूरा करती है। यह कल्पवृक्ष के समान है।

श्याम रजक के जाने से राजद की सेहत पर फर्क नहीं पड़ने वाला : तेजस्वी

पटना। पूर्व मंत्री और राजद के वरिष्ठ नेता श्याम रजक ने गुरुवार को लालू-तेजस्वी का साथ छोड़ दिया। उन्होंने पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे दिया है। श्याम रजक के इस्तीफे को लेकर राजद नेता तेजस्वी यादव का रिएक्शन आया है। तेजस्वी ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि इन सबसे राजद की सेहत पर कोई असर नहीं पड़ने जा रहा है। पार्टी से सीनियर लीडर श्याम रजक के इस्तीफे पर तेजस्वी यादव ने कहा है कि श्याम रजक जहां भी रहें, अच्छे से रहें। वह राजद छोड़कर गए हैं तो गए हैं, उसमें क्या कहना है। इसपर हमको कोई बात नहीं कहना है। चुनाव आने वाला है सबलोग अपना देखता है कि कहीं जाना है या नहीं जाना है।

मारवाड़ी कॉलेज में एडमिशन के नाम पर वसूली

छात्र संगठन ने किया विरोध प्रदर्शन

एजेंसी

किशनगंज। नगर परिषद क्षेत्र स्तिथ मारवाड़ी कॉलेज में शिक्षा के नाम पर छात्रों के पास से दलालों द्वारा पैसा वसूल करने का मामला सामने आया है। छात्रों का कहना है कि दलालों द्वारा मारवाड़ी कॉलेज में सीट दिलवाने को लेकर 6-6 हजार रुपए वसूल रहे हैं। कहा जा रहा है कि छह हजार देने के बाद उन्हें मारवाड़ी कॉलेज में सीट मिल जाएगा। इस मामले को लेकर एनएसयूआई छात्र नेताओं के द्वारा मारवाड़ी कॉलेज में पूर्णिया यूनिवर्सिटी का वाइस चांसलर का पुतला दहन कर विरुद्ध प्रदर्शन किया गया है। एनएसयूआई के प्रदेश महासचिव मो. अमन रजा और प्रदेश प्रवक्ता विक्की ठाकुर ने कहा कि पूर्णिया विश्वविद्यालय में बीए, बीएससी, बीकॉम का एडमिशन चल रहा है। प्रभारी कुलपति पवन झा द्वारा तीसरा मेगा सूची जारी किया गया है। और इस मेगा सूची में 99% करप्शन है। उन्होंने आगे कहा कि जो बच्चे 47 नंबर इंटर में लेकर आए हैं, उनका नामांकन हुआ है। जो बच्चे 86, 75, 65 लेकर वेट कर रहें हैं, उनका एडमिशन नहीं हो रहा है। इसका एक ही कारण है वह बच्चे जो 45 नंबर वाले हैं, किसी के माध्यम से विश्वविद्यालय तक छह हजार पहुंचाने का काम कर रहे हैं और उनके नाम सेलेक्शन हो जा रहा है और जो बच्चे 86, 75 सहित अन्य अंक के साथ है वो

बच्चे दर-दर भटक रहे हैं। अभी जो विश्व विद्यालय के द्वारा जारी फरमान में उर्दू में महाविद्यालय मारवाड़ी कॉलेज में सीट वेकेंट नहीं था और इन लोगों ने पैसा लेकर 6 बच्चों का एडमिशन कर दिया है। कई ऐसे सब्जेक्ट हैं, जो वेकेंट नहीं था। उसमें भी इन लोगों ने पैसा लेकर एडमिशन कर दिया है। जबकि मारवाड़ी कॉलेज में ऑलरेडी सीट समाप्त हो चुका है और विश्वविद्यालय के द्वारा पैसे लेकर एडमिशन किया जा रहा है। उन्होंने आरोप लगाया कि पूर्णिया विश्वविद्यालय ने अपना सरगना फैला कर रखा है। सीमांचल में विश्वविद्यालय ने जो अपना दलाल एडमिशन के लिए रखा है और दोनों के द्वारा छह हजार रुपए लेकर पूर्णिया यूनिवर्सिटी पहुंच और बच्चों का एडमिशन करवा दिया जाता है। वहीं, छात्र साइकर रहमान और अशरफ राजा ने बताया कि वह 12वीं परीक्षा देकर फर्स्ट डिवीजन मार्क्स आया है, लेकिन मेरिट लिस्ट में नाम नहीं आया। इसके बाद दलालों द्वारा छात्र को कहा गया छह हजार रुपया देने के बाद आपका कार्य कर दिया जाएगा। इसके बाद छात्रा ने कार्य करने हेतु छह हजार दे दिए इसके बाद उनका नामांकन लिस्ट में नाम आया। इसी मामले में गुरुवार को नामांकन के दौरान सभी छात्र एवं छात्राओं ने मिलकर जोरदार विरोध प्रदर्शन किया। वहीं, प्रदर्शन इतना ज्यादा बढ़ गया कि प्रशासन को भी कॉलेज आना पड़ा। कॉलेज के प्रोफेसर ने बताया कि यूनिवर्सिटी द्वारा ऐसी कोई प्रावधान नहीं है कि छात्रों से किसी भी प्रकार की शुल्क ली जाए और इसमें कॉलेज का कहीं भी हस्तक्षेप नहीं है। छात्र का कहना है कि उन्होंने नामांकन हेतु छह हजार रुपए दिए मगर इसकी कॉलेज को कोई खबर नहीं है।

खबर एक नजर में

कटिहार के 930 राजस्व ग्रामों में विशेष सर्वेक्षण कार्य पूर्ण, शेष 1336 में प्रचार-प्रसार शुरू

कटिहार। कटिहार जिले के सभी 16 अंचलों में विशेष सर्वेक्षण का कार्य चल रहा है। इसमें से तीन अंचल कोढ़ा, फलका तथा कुसेला के कुल 185 राजस्व ग्राम में विशेष सर्वेक्षण कार्य प्रथम चरण में पूर्व से प्रक्रियाधीन है। अभी तक प्रथम चरण के सर्वेक्षण में कुल 69 राजस्व ग्रामों का अंतिम प्रकाशन का कार्य हो चुका है। द्वितीय चरण में शेष 13 अंचलों में विशेष सर्वेक्षण का कार्य के लिए सभी 1336 राजस्व ग्रामों में ग्राम सभा के माध्यम से प्रचार प्रसार का कार्य किया जा रहा है। बंदोबस्त पदाधिकारी ने गुरुवार शाम बताया कि जिले में अभी तक कुल 930 राजस्व ग्रामों में ग्राम सभा का कार्य पूर्ण हो चुका है, आगामी 30 अगस्त तक सभी शेष राजस्व ग्रामों में ग्राम सभा के माध्यम से प्रचार प्रसार का कार्य पूर्ण हो जाएगा। उन्होंने बताया कि विभाग के आदेशानुसार वर्तमान में नगरीय क्षेत्र में विशेष सर्वेक्षण कार्य नहीं होना है। ग्राम सभा के माध्यम से सभी रैयतों व भू-धारियों को अपने जमीन से संबंधित स्वघोषणा (प्रपत्र-2) एवं वंशावली (प्रपत्र-3(1)) में ब्योरा देने के लिए बताया जा रहा है। रैयत व भू-धारी संबंधित अंचल के शिविर कार्यालय में स्वघोषणा एवं वंशावली जमा कर सकते है। यह आवेदन ऑनलाइन भी जमा किया जा सकता है। इसके लिए डीआइआरएस बिहार डॉट गवर्नमेंट डॉट इन पर विशेष सर्वेक्षण संबंधित सेवाओं में प्रपत्र - 2 व प्रपत्र - 3(1) पर क्लिक कर पूरा ब्योरा दर्ज कराया जा सकता है। बंदोबस्त पदाधिकारी ने बताया कि आवेदन के साथ जमा किये जाने वाले दस्तावेजों का विवरण निमन्वत है।

पेज एक का शेष

झारखंड में अलकायदा...

समूह इस्लामिक राज्य स्थापित करने के लिए जिहाद छेड़ना चाहता है। इस आतंकी संगठन से जुड़े लोगों का उद्देश्य झारखंड में आतंक का प्रचार करना, समान विचारधारा वाले युवाओं को कप्तरपंथी बनाना और भारत के खिलाफ युद्ध छेड़ने के लिए भर्ती करना है, ताकि लोकतांत्रिक रूप से चुनी गयी सरकार को नियम स्थापित करके उखाड़ फेंका जा सके और भारत में गजवा-ए-हिंद को लागू किया जा सके। गिरफ्तार सभी आतंकवादी इसके प्रचार प्रसार करने में ही जुटे थे।

क्या है संगठन का उद्देश्य : सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक, पूछताछ पर आतंकी संगठन से जुड़े युवकों ने कहा कि संगठन का उद्देश्य क्षेत्र में आतंक का प्रचार करना, युवाओं को कप्तरपंथी बनाना, भारत में शरिया कानून स्थापित करने के साथ-साथ बांग्लादेश के खिलाफ युद्ध छेड़ने और भारत में गजवा ए हिंद को लागू करने के लिए एक नियमित भर्ती प्रक्रिया को अंजाम देना है।

झारखंड के सात जिले स्लीपर सेल का ठिकाना : झारखंड के रांची, जमशेदपुर, हजारीबाग समेत सात जिले आतंकवादी संगठनों के स्लीपर सेल का ठिकाना बना हुआ है। इन सात जिलों में रांची, जमशेदपुर, हजारीबाग, रामगढ़, लोहरदगा, पाकुड़ और गिरिडीह जिला शामिल है। ये सभी जिले आतंकियों के स्लीपर सेल को पनाह देती रही है। यहां कई सालों से आतंकी अपनी गतिविधियों का रोड-मैप व साजिश की रूप-रेखा तैयार करते रहे हैं। पिछले 13 साल के दौरान राज्य इन सभी सातों जिले से आतंकवादी संगठनों के 26 स्लीपर सेल गिरफ्तार हो चुके हैं।

डॉक्टरों की हड़ताल...

पीठ ने अपने आदेश में कहा डॉक्टरों ने आशंका जतायी है कि उनमें से कुछ पर पिछले दिनों हुए विरोध प्रदर्शनों में शामिल होने के कारण कार्रवाई की जा रही है। शीर्ष अदालत ने केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के सचिव को राज्य के मुख्य सचिवों और पुलिस महानिदेशकों के साथ बैठक करके काम पर लौटने के इच्छुक डॉक्टरों की सुरक्षा सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। पीठ ने सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को निर्देश दिया कि वे यह सुनिश्चित करें कि राज्य चिकित्सा प्रतिष्ठानों में हिंसा की किसी भी आशंका को रोक सकें।

शीर्ष अदालत ने केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय को एक पोर्टल खोलने का निर्देश दिया, जहां सभी हितधारक अपने सुझाव प्रस्तुत कर सकें। मुख्य न्यायाधीश की अध्यक्षता वाली तीन सदस्यीय पीठ ने शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन को बाधित न करने का निर्देश देते हुए कहा कि सरकारें आरजी कर मेडिकल कॉलेज की उस घटना के खिलाफ शांतिपूर्ण तरीके से विरोध करने वालों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं करें।

शीर्ष अदालत ने केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के सचिव को राज्य के मुख्य सचिवों और पुलिस महानिदेशकों के साथ बैठक करके काम पर लौटने के इच्छुक डॉक्टरों की सुरक्षा सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। अदालत ने निर्देश दिया कि यह बैठक एक सप्ताह के भीतर आयोजित की जाए और राज्य सरकार दो सप्ताह के भीतर सुधारात्मक उपाय करें। देश भर के डॉक्टर प्रशिक्षु चिकित्सक न्याय और चिकित्सकों की सुरक्षा समेत विभिन्न मांगों को लेकर हड़ताल से अस्पताल में मरीजों का बुरा हाल था। मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ ने पश्चिम बंगाल पुलिस को जमकर फटकार लगायी थी। कोर्ट ने इस मामले को लेकर दस सदस्यीय नेशनल टास्क फोर्स का गठन किया है।

गांव-देहात से ...

उन्होंने कहा कि आपकी योजना, आपकी सरकार, आपके द्वार कार्यक्रम की फिर शुरूआत हो रही है। उन्होंने कहा कि राज्य में गरीबी को देखते हुए हमारी सरकार यूनिवर्सल पेंशन स्कीम के तहत अब 50 वर्ष से अधिक उम्र वालों को भी पेंशन प्रदान कर रही है।

भाजपा पर बरसे : उन्होंने विपक्षी पार्टियों पर जम कर हमला बोला। सीएम ने कहा कि देश व राज्य में जब जब चुनाव का समय आता है तो ये लोग हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई का हवाला देते हुए धार्मिक भ्रम फैलाने का काम करते हैं। झारखंड की जनता ने लोकसभा चुनाव में ऐसा करारा जवाब दिया कि केंद्र की पूर्ण बहुमत की सरकार बैशाखी पर आकर लटक गयी। भाजपा को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि झारखंड में इनके पास अब कोई नेता नहीं रह गया है। ये लोग दूसरे राज्यों से नेता को बुलाकर झारखंड की जनता के बीच भ्रम फैलाने का काम कर रहे हैं। लेकिन राज्य की जनता काफी सजग है। विधानसभा चुनाव में सबक सिखाने को तैयार है। समारोह में सीएम हेमंत सोरेन और उनके कैबिनेट के पांच मंत्रियों ने भाग लिया।

कोल्हान को मजबूत...

कोल्हान पर फोकस : चंपई सोरेन ने साफ किया है कि अब वे कोल्हान पर फोकस कर रहे हैं। एक दिन पूर्व नए संगठन बनाने की घोषणा के साथ चंपाई ने कहा है कि एक सप्ताह के भीतर पूरी तस्वीर और स्थिति साफ हो जायेगी। ं शहीद बेदी पर श्रद्धांजलि देने के बाद चंपाई सोरेन अपने समर्थकों से मिले इसके बाद वे चाईबासा को निकल गये। दो दिन पूर्व दिल्ली से देर रात लौटने के बाद मंत्री चंपाई सोरेन के एस्कॉर्ट गाड़ी में शामिल चालक विनय कुमार बान सिंह की भीषण दुर्घटना में मृत्यु हो गयी थी। श्री सोरेन समर्थकों के साथ गुरुवार को खरसावां स्थित चालक के गांव भोया पहुंचे। उन्होंने चालक की समाधि पर पहुंचकर माल्यार्पण कर श्रद्धा सुमन अर्पित किया। परिजनों को ढांढस बंधाते हुए हरसंभव सहायता की बात कही।

एलजेपी से मिला ऑफर : पूर्व सीएम चंपई सोरेन झारखंड की राजनीति के लिए हॉट केक बने हुए हैं। कई दल उन्हें अपनी पार्टी में शामिल कराना चाहते हैं. लेकिन उन्होंने इस पर सस्पेंस बरकरार रखा है। बुधवार को विधायक सरयू राय ने उन्हें जेडीयू की ओर से ऑफर किया। वहीं, गुरुवार को झारखंड एलजेपी की ओर से प्रदेश अध्यक्ष ने उन्हें पार्टी में शामिल होने का ऑफर किया है। लोजपा प्रदेश अध्यक्ष ने कहा है कि यदि चंपई दा लोजपा में शामिल होते हैं तो उन्हें पूरा सम्मान के साथ लाया जायेगा। वहीं भाजपा इस मामले में पसोपेश में है। झारखंड भाजपा का मानना है कि इस मामले में वेट एंड वॉच की रणनीति अपनायी जाये। भाजपा नेता फिलहाल चम्पाई सोरेन की नाराजगी खुलकर सामने आने के बाद सहानुभूति जताने के बहाने झारखंड मुक्ति मोर्चा और सोरेन परिवार पर हमला बोलने में जुटे हैं।

अगलगी की घटना से बचाव को लेकर चलाया गया जागरूकता अभियान

किशनगंज। आग लगने की घटना से बचाव को लेकर अग्निशमन विभाग के द्वारा इन दिनों लगातार शहर व प्रखंडों के विभिन्न प्रतिष्ठान में जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। इसी कड़ी में गुरुवार को शहर व जिले के विभिन्न चिकित्सीय संस्था, शॉपिंग मॉल व पेट्रोल पंप में कर्मियों को जागरूक किया गया।अनुमंडल अग्निक पदाधिकारी मदन कुमार के नेतृत्व में कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें सबसे पहले सुरक्षा के दृष्टिकोण से लगे उपकरण, अग्निक उपकरण का भौतिक सत्यापन किया गया। इसके बाद कर्मियों को आग से बचाव की जानकारी दी गई। अनुमंडल अग्निक समाहरणालय पदाधिकारी मदन कुमार ने बताया कि अलग अलग क्षेत्रों में जागरूकता कार्यक्रम चलाया जा रहा है।उन्होंने यह भी बताया की अगर गैस सिलेंडर में अचानक आग लग जाती है तो धैर्य रखते हुए आग पर काबू पाया जा सकता है। साथ ही अन्य जानकारियां दी गई। यह भी बताया गया कि अगर अगलगी की घटना हो जाये तो तत्काल क्या करना चाहिए।

विद्यालय प्रबंधन समिति का चुनाव संपन्न

नव चयनित सदस्य

खबर मन्त्र संवाददाता

रमना। अंचल 02 के मध्य विद्यालय सिलीदाग में गुरुवार को विद्यालय प्रबंधन समिति का वोटिंग से चुनाव संपन्न हुई। रमना प्रखंड के मध्य विद्यालय सिलीदाग 02 पर्यवेक्षक शितल कुमार सिंह नेतृत्व में मध्य विद्यालय सिलीदाग में विद्यालय प्रबंधन समिति का चुनाव हुआ। वोटिंग से हुए चुनाव में आशुतोष कुमार पासवान को अध्यक्ष, कंचन देवी को उपाध्यक्ष बनाया गया।

वहीं सदस्यों के रुप में चंदेल राम, पुष्पा देवी, ललिता देवी, मुकेश कुमार, कुर्सीद हाशमी, उमेश चंद्रवंशी, विनोद विश्वकर्मा, मीरा देवी और लीलावती देवी को बनाया गया है। मौके पर मुखिया अनीता देवी, पंसस सूर्यदेव राम आदि उपस्थित थे।

सामाजिक संगठनो ने निकाला कैंडिल मार्च

सहरसा। कोलकाता स्थित आर जी कर मेडिकल कॉलेज में हुई अमानवीय घटना एवं हत्या के विरोध में विभिन्न सामाजिक संगठनों से युवा एवं समाजसेवी कला भवन सहरसा में एकत्रित हुए। सभी युवाओं ने 2 मिनट का मौन रख कर मृत पुण्यात्मा स्व डॉ मोमिता को श्रद्धांजलि दी।तत्पश्चात सभा ने केंडिल मार्च करते हुए बाबू वीर कुंवर सिंह चौक,थाना चौक होते हुए शंकर चौक सहरसा में पुनः मृतक को श्रद्धासुमन अर्पित किया।

नगर पंचायत के सभी संविदा कर्मी गये अनिश्चितकालीन कलमबंद हड़ताल पर

खबर मन्त्र संवाददाता

मझिआंव। नगर पंचायत के सभी संविदा कर्मी झारखंड लोकल बॉडीज इम्प्लॉइज फेडरेशन संघ के बैनर तले स्थाईकरण नहीं होने के कारण अनिश्चितकालीन कलम बंद हड़ताल पर चले गए हैं। जिसको लेकर सभी कर्मियों ने संघ के अध्यक्ष अमित कुमार पाठक, उपाध्यक्ष रामाशीष राम सचिव राकेश कुमार सिन्हा नेतृत्व में हस्ताक्षर युक्त आवेदन कार्यपालक पदाधिकारी सुशील कुमार को दिया है। जिसमें उल्लेख किया है कि मझिआंव नगर पंचायत कार्यालय में वर्षों से कार्यरत दैनिक, संविदा कर्मियों का नियमितीकरण, स्थाईकरण के लिए चरणबद्ध एवं शांति से झारखंड लोकल बॉडीज एम्पलाइज फेडरेशन के तत्वाधान में आंदोलन करते आ रहे हैं। झारखंड सरकार एवं नगर विकास एवं आवास विभाग को इस विषय में उचित कार्रवाई करने हेतु बारंबार पत्राचार तथा शांतिपूर्ण तरीके से आंदोलन कर सूचना दिया जाता रहा है परंतु प्रत्येक बार झारखंड सरकार एवं विभाग द्वारा केवल आश्वासन

कार्यपालक पदाधिकारी को आवेदन देते संविदा कर्मी

दिया जाता है। माननीय उच्च न्यायालय द्वारा भी सरकार को निर्देश दिया गया है कि 10 वर्षों से लगातार कार्यरत दैनिक, संविदा कर्मियों को नियमित किया जाए इस पर भी सरकार द्वारा किसी प्रकार का निर्णय नहीं ले रही है। जिसको लेकर झारखंड लोकल बॉडीज इम्प्लॉइज फेडरेशन के तत्वाधान में नगर पंचायत मझिआंव के बरसों से कार्यरत दैनिक, संविदा कर्मी स्थाईकरण करने की मांग को लेकर दिनांक 23 अगस्त से अनिश्चितकालीन कलम बंद हड़ताल करने जा रहे हैं। जिसको लेकर सभी कर्मियों ने कार्यपालक पदाधिकारी को सूचनार्थ समर्पित करते हुए राज्य संघ का पत्र की प्रति लिपि अनुमंडल पदाधिकारी, जिला उपयोग गढ़वा, सचिव नगर विकास एवं आवास विभाग झारखंड सरकार को हस्ताक्षर युक्त आवेदन सादर सुचनार्थ समर्पित किया है। बताते चले कि इस तरह से नगर पंचायत के सभी कार्यालय कर्मी, सफाई कर्मी 23 अगस्त से हड़ताल पर रहेंगे। जिसमें अध्यक्ष अमित कुमार पाठक, उपाध्यक्ष रामाशीष राम, सचिव राकेश कुमार सिन्हा, उप सचिव बबलू राम, कोषाध्यक्ष सर्वेश कुमार, सह कोषाध्यक्ष अनूप कुमार तिवारी, संरक्षक सत्येंद्र राम, सह संरक्षक समुद्री देवी, महामंत्री विकास कुमार सिंह, मंत्री राम कुमार उपाध्याय, उप मंत्री मुजाहिद अंसारी, कार्यालय मंत्री दिनेश चौधरी एवं अन्य सभी 45 कर्मी का नाम शामिल है।

मां सतबहिनी झरना तीर्थ एवं पर्यटन स्थल पर विकास समिति की बैठक 25 को

मां सतबहिनी झरना

खबर मन्त्र संवाददाता

कांडी। सतबहिनी विकास समिति की 25 अगस्त रविवार को एक विशेष बैठक बुलाई गई है। इसमें सभी कोटि के सदस्यों के साथ आम जनों से भी भाग लेने की अपील की गई है। झारखंड राज्य हिन्दू धार्मिक न्यास बोर्ड की एक निर्बंधित इकाई मां सतबहिनी झरना तीर्थ एवं पर्यटन स्थल विकास समिति के सचिव पं. मुरलीधर मिश्र ने जानकारी देते हुए कहा कि 25 अगस्त को कार्यालय प्रांगण में समिति की एक विशेष बैठक आहूत की गई है। इसमें समिति के विशिष्ट स्थायी सदस्य, स्थायी सदस्य व सामान्य सदस्यों के साथ आम जनों से भी भाग लेने का आग्रह किया गया है। बैठक में इस धार्मिक पर्यटन स्थल के विकास, दैनिक गतिविधियों के साथ साथ सदस्यों को दी गई जिम्मेदारियों की अद्यतन स्थिति की समीक्षा व अन्याय विषयों पर विचार विमर्श कर निर्णय लिया जाएगा। उन्होंने कहा कि ऊपर वर्णित लोगों का बैठक में भाग लेना अनिवार्य है।

बिरसा प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना को लेकर जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन

खबर मन्त्र संवाददाता

गढ़वा। डीडीसी पशुपतिनाथ मिश्रा की अध्यक्षता में गुरुवार को समाहरणालय के सभाकक्ष में बिरसा प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना को लेकर जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के माध्यम से फसल बीमा योजना के तहत प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस दौरान उपस्थित सभी लोगों को प्रोजेक्टर के माध्यम से योजना की संपूर्ण जानकारी दी गई। मौके पर डीडीसी श्री मिश्रा ने कहा कि कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता विभाग अन्तर्गत किसानों की बिरसा प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के अन्तर्गत खरीफ फसल 2024 के लिए फसल बीमा करायी जा रही है। फसल बीमा के लिए आवेदक किसानों को बैंक खाते के सत्यापन हेतु टोकन राशि के रुप में किसानों को सिर्फ 01 रुपया देना होगा। इससे छोटे और मध्यम वर्ग के

नामांकन की अंतिम तारीख 31 अगस्त तक

दीप जलाकर कार्यक्रम की शुरूआत करते डीडीसी

किसानों को फायदा होगा एवं ज्यादा से ज्यादा किसानों को इसका लाभ मिलेगा। यह योजना चालू है, इसके लिए ऋणी किसान, अधिसूचित बैंक ग्रामीण बैंक के द्वारा केसीसी धारक किसानों का बीमा कराया जायेगा एवं गैर ऋणी किसान सहकारी शाख समितियों झारखण्ड राज्य सहकारी बैंक, प्रज्ञा केन्द्र एवं इस योजना के पोर्टल पीएमएफबीवाई डॉट गर्वनमेंट डॉट इन पर ऑनलाईन स्वतः आवेदन फॉर्मर लॉगीन के माध्यम से किया जा सकता है। आवेदन करने की अंतिम तिथि 31अगस्त तक है। झारखण्ड सरकार ने बिरसा प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के लिए किसानों का पंजीकरण शुरू किया है। पंजीकरण कराने में आधार कार्ड, पासबुक की छायाप्रति, भूमि स्वामित्व संबंधी प्रपत्र, बटाई प्रमाण पत्र (बटाई कृषक होने पर) फसल बुआई का स्व-सत्यापित प्रमाण पत्र एवं मोबाईल नम्बर वांछित है। डीडीसी ने मौके पर उपस्थित सभी बीडीओ, एटीएम, बीटीएम, किसान मित्र, एफपीओ समेत अन्य संबंधितों से इस योजना का व्यापक प्रचार प्रसार करने एवं लोगों को इसके बारे में ज्यादा से ज्यादा जानकारी देते हुए योजना के अंतर्गत फसल बीमा कराने की अपील की। साथ ही योजना से संबंधित किसी भी जानकारी के लिए जिला सहकारिता कार्यालय एवं प्रखंड कार्यालय या कृषि रक्षक का टोल फ्री हेल्पलाइन नंबर 14447 पर संपर्क करने की बात कही। मौके पर जिला जिला परिषद अध्यक्ष शांति देवी, जिला परिषद सदस्य - सह- कृषि एवं उद्योग समिति के सभापति शंभू राम, जिला सहकारिता पदाधिकारी नीलम कुमारी, जिला योजना पदाधिकारी संजीव कुमार सिंह, जिला कृषि पदाधिकारी शिव शंकर प्रसाद, सभी प्रखंड कृषि पदाधिकारी, एटीएम, बीटीएम, एफपीओ, किसान मित्र, एचडीएफसी एर्गो कंपनी के प्रतिनिधि, पलामू सांसद के प्रतिनिधि आदि उपस्थित थे।

स्पीड न्यूज

आयुष्मान योजना का बीमा कवर 10 से 15 लाख तक बढ़ेगा

नयी दिल्ली। केंद्र सरकार आने वाले दिनों में आयुष्मान भारत योजना के तहत बीमा कवर के दायरे को बढ़ा सकती है। माना जा रहा है कि बीमा कवर का दायरा सामान्य परिस्थितियों में 10 लाख रुपये तक और विशिष्ट परिस्थितियों में 15 लाख रुपये तक बढ़ाया जा सकता है। फिलहाल आयुष्मान योजना के तहत 5 लाख रुपये का बीमा कवर दिया जाता है। इस संबंध में ग्रुप ऑफ सेक्रेट्रीज ने अपनी प्राथमिक रिपोर्ट तैयार कर ली है, जिसे जल्दी ही कैबिनेट सेक्रेट्री के सामने पेश किया जाएगा। केंद्र सरकार की योजना अगले 5 साल में आयुष्मान भारत के लाभार्थियों की संख्या को 100 करोड़ तक पहुंचाने की है। फिलहाल इस योजना के लाभार्थियों (आयुष्मान कार्ड बनवाने वाले) की संख्या 55 करोड़ के करीब बताई जा रही है। हालांकि, अस्पताल में भर्ती होकर इलाज कराने वालों की संख्या 30 जून तक 7.37 करोड़ ही थी। अस्पताल में इलाज कराने वाले लाभार्थियों में महिलाओं की हिस्सेदारी 48 प्रतिशत की रही है।

पद्म पुरस्कार के लिए नामांकन 15 सितंबर तक

नयी दिल्ली। गणतंत्र दिवस के अवसर पर घोषित किए जाने वाले पद्म पुरस्कार-2025 के लिए नामांकन 15 सितंबर तक होगा। इच्छुक प्रतिभागी राष्ट्रीय पुरस्कार पोर्टल https: // awards. gov.in पर जाकर अपना नामांकन दाखिल कर सकते हैं। गृह मंत्रालय ने गुरुवार को एक आधिकारिक विज्ञप्ति जारी कर यह जानकारी दी। इसमें कहा गया है कि पद्म पुरस्कार, अर्थात पद्म विभूषण, पद्म भूषण और पद्म श्री देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मानों में शामिल हैं।

रूस के साथ शांति वार्ता करेगा यूक्रेन

कीव। यूक्रेन की सरकार रूस के साथ शांति वार्ता के लिए तैयारी कर रही है। कीव इंडिपेंडेंट समाचार पोर्टल ने यूक्रेनी राष्ट्रपति के करीबी सूत्र के हवाले से यह जानकारी दी। रिपोर्ट में बुधवार को कहा गया कि कीव मॉस्को के साथ कैदियों की अदला-बदली, खाद्य सुरक्षा और परमाणु सुरक्षा पर चर्चा कर सकता है।

एमजी विंडसर का ग्लास रूफ लांच

गुरुग्राम। जेएसडब्ल्यू एमजी मोटर इंडिया ने बहु-प्रतीक्षित वाहन - एमजी विंडसर- भारत की पहली इंटेलिजेंट क्रॉसओवर यूटीलिटी व्हीकल (सीयूवी) के इनफिनिटी ग्लास रूफ लांच किया। इसमें एक शानदार डिजाइन है, जो कार के आलीशान केबिन के साथ आउटडोर वातावरण को उत्कृष्ट बनाता है, जिससे वाहन में बैठने वालों को एक पैनोरैमिक और प्रभावी ड्राइविंग अनुभव मिलता है। बाहरी वातावरण, शहरी लैंडस्कैप हो या मनोरम पर्यटन स्थल, के साथ एक निर्बाध कनेक्शन का आनंद उठा सकेंगे।

जम्मू कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा प्राथमिकता: राहुल

श्रीनगर। कांग्रेस सांसद एवं लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने गुरुवार को कहा कि कांग्रेस पार्टी और विपक्षी गठबंधन (इंडिया) जल्द से जल्द जम्मू-कश्मीर में पूर्ण राज्य का दर्जा बहाल करने के लिए प्रतिबद्ध है। श्रीनगर में पत्रकारों के साथ बातचीत में राहुल गांधी ने कहा कि कांग्रेस पार्टी और सहयोगी दलों की प्राथमिकता है कि जल्द से जल्द जम्मू-कश्मीर का पूर्ण राज्य का दर्जा बहाल किया जाए। उन्होंने कहा कि कांग्रेस राज्य में विधानसभा चुनाव से पहले पूर्ण राज्य का दर्जा मिलने की उम्मीद कर रही थी लेकिन चुनावों की घोषणा कर दी गई, जो एक कदम आगे है। उन्होंने कहा कि हमें उम्मीद है कि लोकतंत्र बहाल होगा। उन्होंने दोहराया कि आजादी के बाद पहली बार किसी पूर्ण राज्य को केंद्र शासित प्रदेश में बदला गया है।

युद्ध से नहीं निकलेगा समाधान : मोदी

पीएम ने रूस और यूक्रेन को दिया संदेश, डायलॉग और डिप्लोमेसी से ही शांति संभव

एजेंसी

वारसा। भारत एवं पोलैंड ने अपने द्विपक्षीय संबंधों को रणनीतिक साझीदारी का स्वरूप देने तथा आर्थिक सहयोग को व्यापक बनाने पर सहमति जताने के साथ संयुक्त राष्ट्र एवं अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं को आतंकवाद सहित वैश्विक चुनौतियों का मुकाबला करने में सक्षम बनाने के लिए उनमें व्यापक सुधार की आवश्यकता पर बल दिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मेजबान प्रधानमंत्री डोनाल्ड टस्क के बीच यहां प्रतिनिधि मंडल स्तर की द्विपक्षीय शिखर बैठक में ये निर्णय लिये गये। दोनों देशों ने शहरी विकास, तकनीकी उन्नयन एवं सांस्कृतिक जुड़ाव के लिए अनेक फैसलों की घोषणा की। मोदी ने वारसा में उनके गर्मजोशी भरे आतिथ्य के लिए प्रधानमंत्री टस्क का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि टस्क लंबे समय से भारत के मित्र रहे हैं और भारत और पोलैंड के बीच संबंधों को बढ़ाने में उनका बहुत बड़ा योगदान है। आज के बाद 45 साल बाद, एक भारतीय प्रधानमंत्री ने पोलैंड का दौरा किया। उन्हें अपने तीसरे कार्यकाल की शुरूआत में यह अवसर मिला। उन्होंने कहा कि मैं पोलैंड की सरकार और लोगों को धन्यवाद देना चाहता हूं कि आपने 2022 में यूक्रेन संघर्ष के दौरान भारतीय छात्रों को बचाने में जो मदद की है, उसे मैं कभी नहीं भूल सकता। मोदी ने पोलैंड के प्रधानमंत्री डोनाल्ड टस्क के साथ संयुक्त प्रेस वार्ता को भी संबोधित किया। पीएम ने पोलैंड के साथ भारत के मजबूत संबंधों का बखान तो किया ही, साथ में इशारों-इशारों में रूस और यूक्रेन को भी संदेश दे किया। मोदी ने दो टूक लहजे में कहा कि वह शांति और स्थिरता की जल्द से जल्द बहाली के लिए डायलॉग और डिप्लोमेसी का समर्थन करते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि भारत का यह दृढ़ विश्वास है कि किसी भी समस्या का समाधान रणभूमि में नहीं हो सकता। पीएम मोदी ने

भारत और पोलैंड ने शहरी विकास, तकनीकी उन्नयन व सांस्कृतिक जुड़ाव के लिए कई फैसलों का किया एलान

प्रधानमंत्री मोदी से मिलते पोलैंड के पीएम डोनाल्ड टस्क

पोलैंड के साथ राजनयिक वर्षगांठ के 70 साल पूरे होने पर दोनों देशों के संबंधों को स्ट्रैटजिक पार्टनरशिप में बदलने का भी ऐलान किया। इस मौके पर हमने रिश्ते को रणनीतिक साझीदारी में बदलने का फैसला किया है। भारत और पोलैंड के बीच संबंध लोकतंत्र और कानून के शासन जैसे साझा मूल्यों पर आधारित हैं। हमने संबंधों को एक नई दिशा देने के लिए कई पहलों की पहचान की है। दो लोकतांत्रिक देशों के रूप में, हमारी संसदों के बीच विचारों के आदान-प्रदान को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि अंतरराष्ट्रीय मंच पर हम दोनों देश वैश्विक चुनौतियों से निपटने में संयुक्त राष्ट्र संघ और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं में सुधार की आवश्यकता पर बल देते हैं। हम मानते हैं कि मानवता में विश्वास करने वाले लोगों के लिए आतंकवाद एक बड़ी चुनौती है। जलवायु परिवर्तन साझा चिंता है। मोदी ने कहा कि जनवरी 2025 में पोलैंड यूरोपीय संघ की अध्यक्षता संभालेगा।

जनवरी में यूरोपीय संघ की अध्यक्षता संभालेगा पोलैंड

मुझे विश्वास है कि आपका समर्थन भारत और यूरोपीय संघ के बीच संबंधों को भी मजबूत करेगा। उन्होंने कहा कि यूक्रेन और पश्चिम एशिया में चल रहे संघर्ष हम सभी के लिए गहरी चिंता का विषय हैं। भारत का दृढ़ विश्वास है कि किसी भी संकट का समाधान रणभूमि में नहीं निकल सकता है। मासूम लोगों की जनहानि पूरी मानवता के लिए सबसे बड़ी चुनौती बन गई है। हम जल्द से जल्द शांति और स्थिरता की बहाली के लिए बातचीत और कूटनीति का समर्थन करते हैं। इसके लिए भारत अपने मित्र देशों के साथ मिलकर हर संभव सहयोग करने को तैयार है। प्रधानमंत्री ने कहा कि पोलैंड में इंडोलॉजी और संस्कृत की बहुत पुरानी और समृद्ध परंपरा है। हमारे संबंधों की मजबूत नींव भारतीय सभ्यता और भाषाओं में गहरी रुचि से रखी गई है। मुझे कोल्हापुर के महाराजा के स्मारक पर श्रद्धांजलि अर्पित करने का सौभाग्य मिला। मुझे खुशी है कि पोलैंड के लोग आज भी उनकी परोपकारिता और उदारता का सम्मान करते हैं। उनकी स्मृति को अमर बनाने के लिए हम भारत और पोलैंड के बीच जाम साहेब नवानगर यूथ एक्शन प्रोग्राम शुरू करने जा रहे हैं। हर साल पोलैंड से 20 युवाओं को भारत भ्रमण पर ले जाया जाएगा।

भारत में बन रहे मेगा फूड पार्क से जुड़ें पोलिश कंपनियां

आर्थिक सहयोग को व्यापक बनाने के लिए खाद्य प्रसंस्करण के क्षेत्र में पोलैंड विश्व में अग्रणी है, हम चाहते हैं कि पोलिश कंपनियां भारत में बन रहे मेगा फूड पार्क से जुड़ें। भारत में तेजी से हो रहे शहरीकरण से जल उपचार, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में हमारे सहयोग के नए अवसर खुल रहे हैं।

शहरी बुनियादी ढांचा, स्वच्छ कोयला प्रौद्योगिकी, हरित, हाइड्रोजन, नवीकरणीय ऊर्जा और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस भी हमारी सामान्य प्राथमिकताएं हैं। हम पोलिश कंपनियों को मेक इन इंडिया और मेक फॉर द वर्ल्ड में शामिल होने के लिए आमंत्रित करते हैं। भारत ने फिनटेक, फार्मा और अंतरिक्ष जैसे क्षेत्रों में कई उपलब्धियां हासिल की हैं। हमें इन क्षेत्रों में पोलैंड के साथ अपना अनुभव साझा करने में खुशी होगी।

मृतकों के परिवारों को मिलेंगे एक-एक करोड़

अच्युतापुरम एसइजेड के घायलों से मिले आंध्र प्रदेश के सीएम चंद्रबाबू नायडू

एजेंसी

विशाखापट्टनम। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू गुरुवार को अच्युतापुरम एसईजेड के पीड़ितों से मुलाकात करने मेडिकवर हॉस्पिटल पहुंचे। उन्होंने वहां इलाज करा रहे घायलों से मिलकर डॉक्टरों से बात की। उन्होंने आश्वासन दिया कि सरकार उनके उचित इलाज की व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए सभी उपाय करेगी। मुख्यमंत्री ने इस हादसे में जान गंवाने वाले लोगों के परिजनों को एक-एक करोड़ रुपये मुआवजा देने की घोषणा की। उन्होंने गंभीर रूप से घायलों को 50 लाख रुपये और मामूली चोटों वाले लोगों को 25 लाख रुपये का मुआवजा देने का ऐलान किया। नायडू ने घटना के पीड़ितों को इलाज के दौरान बहादुर बनने की सलाह दी। इसके बाद उन्होंने पीड़ित परिजनों से बात। इसके बाद मुख्यमंत्री ने अस्पताल के बाहर मीडिया से बात की। उनका कहना कि फार्मा कंपनी में हुई घटना बेहद दुखद और परेशान करने वाली थी। इस हादसे में 17 लोगों की मौत हो गई और 36 लोग घायल हो गए। उन्होंने कहा कि घायलों में 10 गंभीर रूप से घायल और 26 मामूली रूप से घायल हुए हैं। मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू ने कहा कि राज्य सरकार सभी पीड़ितों को सर्वोत्तम चिकित्सा सेवाएं प्रदान करेंगे। हम उन लोगों के लिए

गंभीर रूप से घायलों को 50 लाख और मामूली चोटों वाले को 25 लाख रुपये मुआवजा देने का किया एलान

फार्मा कंपनी में 17 की हुयी थी मौत व 36 घायल हुए थे

प्लास्टिक सर्जरी भी करवाएंगे और जिन्हें इसकी आवश्यकता होगी। मुख्यमंत्री ने भविष्य में ऐसी घटनाएं दोबारा न हों, इसके लिए कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने आरोप लगाया कि इससे पहले जगन मोहन रेड्डी की वाईएसआरसीपी सरकार के शासन काल में पिछले पांच वर्षों में सारी व्यवस्थाएं नष्ट हो गई हैं। यह दुर्घटना उसी का परिणाम है।

गोविंदराजन पद्मनाभन को मिला प्रतिष्ठित विज्ञान रत्न पुरस्कार

नयी दिल्ली। देश में आणविक जीव विज्ञान और जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान के अग्रदूत प्रोफेसर गोविंदराजन पद्मनाभन को गुरुवार को प्रतिष्ठित विज्ञान रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके अलावा विज्ञान श्री, विज्ञान युवा शांति स्वरूप भटनागर और विज्ञान टीम श्रेणी में प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों को 33 पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने राष्ट्रपति भवन के गणतंत्र मंडप में आयोजित एक पुरस्कार समारोह में राष्ट्रीय विज्ञान पुरस्कार-2024 प्रदान किए। उन्होंने देश में आणविक जीव विज्ञान और जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान के अग्रदूत प्रोफेसर गोविंदराजन पद्मनाभन को विज्ञान रत्न पुरस्कार प्रदान किया। यह पुरस्कार विज्ञान और प्रौद्योगिकी के किसी भी क्षेत्र में आजीवन योगदान देने वाले वैज्ञानिकों को प्रदान किया जाता है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान देने वाले 13 वैज्ञानिकों को उनके संबंधित क्षेत्रों में पथ-प्रदर्शक अनुसंधान के लिए विज्ञान श्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्षेत्रों में असाधारण योगदान देने वाले 18 वैज्ञानिकों को विज्ञान युवा शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार प्रदान किये गये।

अयोध्या में गैंगरेप आरोपी के कॉम्प्लेक्स पर चला बुलडोजर

नाबालिक बच्ची से सामूहिक दुष्कर्म के मुख्य आरोपी है सपा नेता मोईद खान

अयोध्या। उत्तर प्रदेश में अयोध्या के भदरसा कस्बे में नाबालिग बच्ची के साथ हुए सामूहिक दुष्कर्म के मुख्य आरोपी सपा नेता मोईद खान के खिलाफ सरकारी भूमि व तालाब पर बनाए गए मल्टी कॉम्प्लेक्स पर चला बुलडोजर। गुरुवार रात तक आरोपी का आधा साम्राज्य ढहा दिया गया। इससे पहले तहसील प्रशासन की जांच मे आरोपी की बेकरी तालाब की भूमि पर पाए जाने के बाद तहसील प्रशासन ने बेकरी निर्माण इकाई पर बुलडोजर चलवाकर उसे ध्वस्त करा दिया था। अयोध्या विकास प्राधिकरण के सचिव सत्येंद्र सिंह ने बताया कि इस बिल्डिंग का निर्माण अवैध ढंग से तालाब की जमीन पर और चकरोड की जमीन पर कब्जा करके किया गया था। विकास प्राधिकरण के द्वारा पूर्व में कई बार नोटिस दी जा चुकी थी। उसके बाद उनके द्वारा मानचित्र नहीं दाखिल किया गया। न तो किसी प्रकार की रुचि ही दिखाई गई। इसके ध्वस्तीकरण का आदेश जून में ही पारित कर दिया गया था। इस आदेश का तामीला कराते हुए ध्वस्तीकरण की कार्रवाई को एक्टिवेट कराया गया है। एसडीएम के द्वारा आगे जांच की जा रही है, आगे भी जो अवैध संपत्ति पाई जाएगी उस पर भी कार्रवाई की जाएगी।

इधर मप्र में पुलिस पर पथराव मामले के मुख्य आरोपी का आलीशान घर जमींदोज

छतरपुर। मध्यप्रदेश के छतरपुर शहर के कोतवाली थाने में ज्ञापन देने आए लोगों के साथ आयी भीड़ द्वारा पुलिसकर्मियों पर अचानक पथराव करने की घटना के मामले में गुरुवार दोपहर तक डेढ़ सौ से अधिक लोगों पर अपराध दर्ज करने के साथ ही मुख्य आरोपी का महलनुमा आलीशान मकान जमींदोज कर दिया गया है। इसकी अनुमानित कीमत पांच करोड़ रुपए से अधिक है।

आलीशान महल को प्रशासन ने बुलडोजर से जमींदोज कर दिया है। यही नहीं, घर तोड़ने के दौरान वहां खड़ी गाड़ियों को भी

चकनाचूर कर दिया है। बताया जा रहा है कि हाजी शहजाद अली कांग्रेस का जिला उपाध्यक्ष रहा है।

फिल्म विश्वंभरा से चिरंजीवी का पहला लुक हुआ रिलीज

मुंबई। दक्षिण भारतीय फिल्मों के सुपर स्टार चिरंजीवी के जन्मदिन के अवसर पर उनकी आने वाली फिल्म विश्वंभरा से उनका लुक रिलीज हो गया है। चिरंजीवी के जन्मदिन पर मेकर्स ने उनका लुक साझा किया है। इस पोस्टर में चिरंजीवी हाथ में त्रिशूल लिए एक पहाड़ी पर खड़े नजर आ रहे हैं और उनके हाथ में विशेष शक्तियां भी दिखाई दे रही हैं। इस पोस्टर के कैप्शन में लिखा गया है, जब दुनिया पर अंधेरा और बुराई हावी हो जाएगी, तो एक महान सितारा लड़ने के लिए चमकेगा। जन्मदिन मुबारक हो मेगास्टार चिरंजीवी। पोस्टर में फिल्म की रिलीज डेट का भी खुलासा हो गया है। यह फिल्म

10 जनवरी, 2025 से सिनेमाघरों में रिलीज होगी। फिल्म विश्वंभरा में तृषा कृष्णन, सुरभि, राम्या पसुपलेटी, ईशा चावला, और अश्रिता वेमुगंती नंदूरी जैसे कलाकार भी मुख्य भूमिका में नजर आएंगे।

शेयर बाजार में तेजी जारी, सेंसेक्स 81 हजार के पार

फेड रिजर्व के ब्याज दर में कटौती के संकेत से बाजार में आयी तेजी, सेंसेक्स 147 अंक और निफ्टी 41 अंक चढ़ा

मुंबई । अमेरिकी फेडरल रिजर्व की नीतिगत बैठक के जारी मिनट्स में अगले कुछ सप्ताह में ब्याज दर में कटौती शुरू करने के संकेत से विश्व बाजार में आई तेजी की बदौलत स्थानीय स्तर पर कमोडिटीज, दूरसंचार, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स और सर्विसेज समेत पंद्रह समूहों में हुई लिवाली से शेयर बाजार में गुरुवार लगातार तीसरे दिन बढ़त बरकरार रही। बीएसई का तीस शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 147.89 अंक मजबूत होकर करीब दो सप्ताह बाद 81 हजार अंक के मनोवैज्ञानिक स्तर के पार 81,053.19 अंक पर पहुंच गया। इसी तरह नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 41.30 अंक बढ़कर 24,811.50 अंक पर बंद हुआ। बीएसई का मिडकैप 0.67 प्रतिशत की छलांग लगाकर 48,643.86 अंक और स्मॉलकैप 0.47 प्रतिशत की बढ़त लेकर 55,598.26 अंक हो गया। बीएसई में कुल 4053 कंपनियों के शेयरों में कारोबार हुआ, जिनमें से 2451 में लिवाली जबकि 1513 में बिकवाली हुई वहीं 89 में कोई बदलाव नहीं हुआ। बीएसई के 15 समूहों में लिवाली हुई। इससे दूरसंचार 1.60, कमोडिटीज 1.00, सीडी 0.51, एफएमसीजी 0.59, वित्तीय सेवाएं 0.39, हेल्थकेयर 0.17, इंडस्ट्रियल्स 0.10, ऑटो 0.01, बैंकिंग 0.46, कैपिटल गुड्स 0.09, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स 0.91, धातु 0.57, रियल्टी 0.49, टेक 0.24 और सर्विसेज समूह के शेयर 0.70 प्रतिशत उछल गए।

इस दौरान सेंसेक्स की जिन कंपनियों के शेयर लाभ में रहे उनमें भारती एयरटेल 1.51, टाटा स्टील 1.45, आईसीआईसीआई बैंक 1.38, टाइटन 1.23, एशियन पेंट 1.07, अल्ट्रासिमको 0.93, जेएसडब्ल्यू स्टील 0.91, मारुति 0.67, एसबीआई 0.53, बजाज फिन सर्व 0.43, इंफोसिस 0.41, कोटक बैंक 0.35, टेक महिंद्रा 0.34, एचडीएफसी बैंक 0.32, एलटी 0.28, बजाज फाइनेंस 0.12 और हिंदुस्तान यूनिलीवर 0.06 प्रतिशत शामिल रहे। वहीं, टाटा मोटर्स 1.52, महिंद्रा एंड महिंद्रा 1.32, एनटीपीसी 1.27, टीसीएस 1.14, पावरग्रिड 0.86, सन फार्मा 0.76, अडानी पोर्ट्स 0.70, एक्सिस बैंक 0.48, नेस्ले इंडिया 0.22, आईटीसी 0.14, इंडसइंड बैंक 0.09, रिलायंस 0.05 और एचसीएल टेक के शेयर 0.02 प्रतिशत नुकसान में रहे।

नोकिया की 4 जी कनक्टिविटी से लैस होगा तीसरा चंद्र मिशन

नयी दिल्ली। नोकिया ने आर्टेमिस तीसरे चंद्र मिशन के लिए उपयोग किए जाने वाले अगली पीढ़ी के स्पेससूट में उन्नत 4जी/एलटीई संचार क्षमताओं को एकीकृत करने के लिए एक्सिओम स्पेस के साथ साझेदारी की है। कंपनी ने गुरुवार को बताया कि नोकिया और एक्सिओम स्पेस एक्सिओम एक्स्ट्रावेहिकुलर मोबिलिटी यूनिट में हाई-स्पीड सेलुलर-नेटवर्क क्षमताओं को शामिल करेंगे, जो चंद्रमा पर कई किलोमीटर तक एचडी वीडियो, टेलीमेट्री डेटा और वॉयस ट्रांसमिशन का समर्थन करेंगे। यह उन्नति आर्टेमिस तीसरा के चालक दल के सदस्यों को वास्तविक समय के वीडियो को कैप्चर करने और चंद्रमा की सतह का पता लगाने के दौरान पृथ्वी पर मिशन नियंत्रकों के साथ संवाद करने में सक्षम बनाएगी।

वर्मा प्रेस प्रा० लि० राँची
VERMA PRESS
Verma's® Today®
शृंखला की निम्न पुस्तकें सर्वत्र उपलब्ध हैं—

Class - X		Class - IX	
Hindi	₹ 140	Hindi	₹ 140
English	₹ 140	English	₹ 140
Mathematics	₹ 140	Mathematics	₹ 140
Science	₹ 140	Science	₹ 140
Social Science	₹ 140	Social Science	₹ 140
Sanskrit	₹ 120	Sanskrit	₹ 120
Hindi - B	₹ 140	Hindi - B	₹ 80
Hindi Vyakaran- II	₹ 120	Hindi Vyakaran- II	₹ 120
English Grammar II	₹ 120	English Grammar II	₹ 120
Sanskrit Vyakaran-II	₹ 100	Sanskrit Vyakaran-II	₹ 100
Hindi Practical	₹ 55	Hindi Practical	₹ 55
English Practical	₹ 55	English Practical	₹ 55
Maths. Practical	₹ 65	Maths. Practical	₹ 55
Science Practical	₹ 65	Science Practical	₹ 70
S. Science Practical	₹ 65	S. Science Practical	₹ 65
Sanskrit Practical	₹ 55	Sanskrit Practical	₹ 55
Maths. Practical (Combined)	₹ 90	Maths. Practical (Combined)	₹ 75
Science Practical (Combined)	₹ 90	Science Practical (Combined)	₹ 75
English Medium		English Medium	
Mathematics	₹ 200	Mathematics	₹ 130
Science	₹ 200	Science	₹ 200
Social Science	₹ 200	Social Science	₹ 130
Maths. Practical	₹ 80	Maths. Practical	₹ 80
Science Practical	₹ 80	Science Practical	₹ 80
S. Science Practical	₹ 80	S. Science Practical	₹ 80

मिलते जुलते नाम वाली नकली पुस्तकों से सावधान !